सूरज बन कर जग पर चमके, भारत नाम सुभागा। जय हो, जय हो, जय, जय, जय जय हो।

कर्मभूमि

हिन्दी यू.एस.ए. भारत यात्रा वृतांत

वर्ष १७ अंक २८ मई २०२४

तेईसवें हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

"भारत विश्व गुरु की ओर" विशेषांक

Best wishes for Hindi Mahotsav

from

Vijay & Neeta Singhal

TRANSAMERICA®
FINANCIAL ADVISORS, INC.

Products Offered

- Mutual Funds
- IRA, SEPIRA, SIMPLE IRA, ROTH IRA
- 529 College Savings Plans
- 401k Plans
- Life Insurance
- Long term Care (LTC) Insurance
- Annuities

VIJAY SINGHAL
732-668-6071

Transamerica Financial Advisors, Inc. (TFA), Member FINRA, MSRB, SIPC and federally Registered Investment Advisor, offers securities and Investment Advisory Services. World Financial Group Insurance Agency, LLC (WFGIA), offers insurance products. WFGIA and TFA are affiliated companies. 3553320-0524

Celebrate the beauty of the Hindi language and culture with us

Your trusted source for comprehensive insurance and financial planning services. We offer the right coverage for your auto, home, or business, and help you plan for college savings, retirement, and protect your loved ones with Life Insurance and Annuity.

Contact us today at

732-668-6071

for personalized attention and tailored solutions to secure your future

www.hindiusa.org

हिन्दी USA ®

1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक)	- 856-625-4335
रचिता सिंह (शिक्षण/प्रशिक्षण संयोजिका)	- 609-248-5966
राज मित्तल (धनराशि संयोजक)	- 732-423-4619
माणक काबरा (प्रबंध संयोजक)	- 718-414-5429
सुशील अग्रवाल ('कर्मभूमि' संयोजक)	- 908-361-0220

शिक्षण समिति

क्षमा सोनी	- कनिष्ठा-१ स्तर
रंजनी रामनाथन, हेमांगी शिंदे	- कनिष्ठा-२ स्तर
मोनिका गुप्ता, मीनाक्षी सिंह	- प्रथमा-१ स्तर
सरिता नेमानी, सन्जोत ताटके	- प्रथमा-२ स्तर
इंदु श्रीवास्तव, अदिति महेश्वरी	- मध्यमा-१ स्तर
ऋचा खरे, गरिमा अग्रवाल	- मध्यमा-२ स्तर
ऋतु जग्गी, राजीव महाजन	- मध्यमा-३ स्तर
सुशील अग्रवाल, हंसा सिंह	- उच्चस्तर-१
कविता प्रसाद	- उच्चस्तर-२

अन्य समितियाँ

अमित खरे – वेब साइट, वीडियो

योगिता मोदी – बुक स्टाल प्रबंधन

वेणुगोपाल वर्मा – शिक्षण प्रबंधन और ऑनलाइन पंजीकरण

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429), सुनील दुबे (848-248-6500)

साऊथ ब्रंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733)

मॉन्टगोमरी: रीना सिंह (908-499-1555)

पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535), स्वाति सिंघानिया (609-819-3305)

ईस्ट ब्रंस्विक: स्वागता माने (646-415-4072)

वुडब्रिज: शिव आर्य (908-812-1253)

जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835)

प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)

लॉरेंसविल: संजय भयाना (732-447-3935)

चैरी हिल: जय जैन (856-236-6272), वेनू वर्मा (609-598-4038)

चैस्टरफील्ड: मधु राजपाल (732-331-5835)

होमडेल: रंजना गुप्ता (908-380-8697)

मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)

नॉर्थ ब्रंस्विक: योगिता मोदी (609-785-1604)

बस्किंग रिज: धनंजय मराठे (716-361-4681)

विल्टन: अमित अग्रवाल (630-401-0690), चेतना मल्लारपु (475-999-8705)

स्टैमफर्ड: मनीष महेश्वरी (203-522-8888)

एवॉन: बसवराज गरग (732-201-3779)

ट्रम्बुल: रुचि शर्मा (203-570-1261)

एलिकाट सिटी (MD): मुरली तुल्शियान (201-892-7898)

नीधम (MA): विक्रम कौल (203-919-1394)

अटलांटा (GA): रंजन पठानिया (203-993-9631)

शेर्लोट (NC): कीर्ति वालिआ (214-998-5760)

सैंट लुइस (MO): मयंक जैन (636-575-9348)

नॉर्थ बोरो (MA): संजीव झा (781-559-4200)

ऑनलाइन: राजीव श्रीवास्तव (732-429-8612)

सैन डिएगो (CA): मनीष पाण्डेय (760-576-6002)

हमको सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

कर्मभूमि

०८ - युवा स्वयंसेवक अभिनंदन समारोह -२०२४
१० - हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम
१२ - हम बच्चे प्रवासी भारतीय
१३ - भारतीय भूगोल: वैश्विक नेतृत्व का माध्यम
१४ - विश्व गुरु के मायने
१५ - बिटिया
१६ - भारत विश्वगुरु की ओर
१८ - मन की अभिव्यक्ति
२० - आस
२२ - आत्मनिर्भर भारत
२३ - मेक इन इंडिया
२४ - आर्थिक विकास और नवाचार
२५ - भारतीय व्यंजनों का वैश्विक प्रभाव
२६ - भारत के शास्त्रीय नृत्य
२९ - भारतीय व्यंजनों का वैश्विक प्रभाव
३० - योग और आयुर्वेद
३२ - भारत का अंतरिक्ष अन्वेषण
३५ - भारतीय प्रवासी
३६ - भारतीय व्यंजनों की विशेषता और पौष्टिकता
३८ - एवॉन हिन्दी पाठशाला - मध्यमा-३
४२ - प्लेंसबोरो हिन्दी पाठशाला - मध्यमा-२
४४ - चेरी हिल, मध्यमा-१
४६ - ऑनलाइन पाठशाला
५४ - भारतीय वेशभूषा तथा आभूषण
५५ - भारत की शिक्षा प्रणाली

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

रचिता सिंह

माणक काबरा

राज मित्तल

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें
हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें
karmbhoomi@hindiusa.org
या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:
HindiUSA
70 Homestead Dr Ive
Pemberton, NJ 08068

मुखपृष्ठ
नंदिनी अग्रवाल
उच्चस्तर-२, वुडब्रिज पाठशाला

५६ - भारत - कई मायनों में है विश्व गुरु
६० - स्टैमफर्ड हिन्दी पाठशाला - उच्चस्तर-१
६४ - एडिसन हिन्दी पाठशाला - उच्चस्तर-२
७२ - ऑनलाइन हिन्दी पाठशाला - उच्चस्तर -२
८२ - हिंदी यू.एस.ए. भारत-यात्रा
९६ - पर्वतारोहण

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक/संचालिकाएँ

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर २३ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। हिन्दी यू.एस.ए. की २५ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दी की कक्षाएँ ९ विभिन्न स्तरों में चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

संपादकीय

वर्ष २०२४ हिंदी यू.एस.ए. की स्थापना का तेईसवाँ वर्ष है। विगत २३ वर्षों में संस्था ने अभूतपूर्व प्रगति की है जिनके प्रमाण आपके समक्ष हैं। इस प्रगति का पूर्ण श्रेय हमारे समर्पित अध्यापकों, स्वयंसेवकों एवं अभिभावकों को ही जाता है, उनके कठोर श्रम के बिना संस्था का इस स्तर पर पहुँचना और इतनी उपलब्धियाँ प्राप्त करना कदापि संभव नहीं था।

कर्मभूमि का यह अंक, **'भारत विश्व गुरु की ओर'** विशेषांक' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष है। पिछले दस वर्षों में भारत ने जो वैश्विक ख्याति प्राप्त की है और जिसके कारण विश्व का हर देश आज भारत से मित्रता बढ़ाने हेतु प्रयत्नरत है, यह सभी एक कर्मठ, संकल्पित एवं ईमानदार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं उनके सुशासन एवं कार्यशैली के कारण ही संभव हो सका है। जिस प्रकार हमारी संस्कृति और संस्कारों का प्रचार विदेशों में हो रहा है और विश्व के नागरिक जिस तत्परता से इन्हें अपना रहे हैं, इससे प्रतीत होता है कि भारत को विश्वगुरु बनने में अधिक समय नहीं लगेगा। हमारी प्राचीन संस्कृति, गौरव, आभूषण, विभिन्न वेशभूषा, योग, स्वास्थ्य, स्वादिष्ट व्यंजन आदि विषयों से भरे लेख, कहानियाँ, एवं कविताओं से सरोबार यह विशेष अंक आपको अवश्य ही पसंद आएगा तथा यह एक अमूल्य संकलन के रूप में आपके लिए उपयोगी होगा ऐसी हमारी आशा है।

विश्व गुरु की भूमिका एवं जिम्मेदारियाँ, भारतीय वेशभूषा तथा आभूषण, भारतीय व्यंजनों का वैश्विक प्रभाव, भारत का अंतरिक्ष अन्वेषण और कूटनीति, भारत का प्राचीन गौरव, भारतीय संस्कृति और विरासत, योग, स्वास्थ्य और आयुर्वेद, भारतीय कूटनीति और विदेशी सम्बन्ध, आर्थिक विकास और नवाचार, "मेक इन इंडिया" पहल इत्यादि कई लेख हमारे छात्रों, अभिभावकों और अध्यापकों द्वारा इस अंक के लिए लिखे गए हैं, कृपया इन्हें अवश्य पढ़ें और जानने की कोशिश करें कि किस प्रकार हमारा देश भारतवर्ष विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर हो रहा है।

हमारे छात्रों, अभिभावकों, एवं स्वयंसेवकों ने अति सुन्दर लेख एवं प्रभावी सामग्री इस अंक में प्रस्तुत की है। साहस और संकल्प की कहानी, 'एवेरेस्ट पर्वतारोहण' एक साहसिक कठिन यात्रा जो हमारी ही एक स्वयंसेविका, वंदना अग्रवाल द्वारा पूर्ण की गयी, का रोचक वर्णन एवं साक्षात्कार इस अंक में दिया गया है, कृपया अवश्य पढ़ें।

हमारी संस्कृति और संस्कारों को हमारे बच्चों एवं आने वाली पीढ़ियों को देने हेतु हिंदी यू.एस.ए. ने पिछले वर्ष से कुछ पाठशालाओं में एक कार्यक्रम प्रारम्भ किया है, 'मातृ-पितृ पूजा', इसके अंतर्गत भाग लेने वाले सभी छात्रों के माता-पिता को स्कूल में आमंत्रित किया जाता है फिर एक समारोह में, छात्र-छात्राएं अपने माता पिता की पूजा अर्चना कर उनको तिलक लगाकर उनके चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लेते हैं तथा माता-पिता को हमेशा सम्मान देने एवं जीवन पर्यंत उनकी सेवा करने का संकल्प सभी बच्चे लेते हैं । यह कार्यक्रम इस वर्ष भी हमारी कई पाठशालाओं में संपन्न किया गया जिसे सभी अभिभावकों ने बहुत सराहा। हमारा प्रयास रहेगा की आने वाले वर्षों में हम सभी पाठशालाओं में इस कार्यक्रम को संपन्न करें।

हिन्दी यू.एस.ए. को अपने समस्त अभिभावकों, छात्रों, और समर्पित स्वयंसेवकों पर हमेशा गर्व रहा है और रहेगा। आप सभी के समर्पण से ही यह संस्था अपने तेईस वर्ष पूर्ण कर पाई है और निरंतर प्रगति कर रही है।

पिछले ३ वर्षों में संस्था ने अपने अधिकांश प्रशिक्षण एवं अन्य कार्यों का आधुनिकरण किया है। विधार्थियों के पंजीकरण का नया ऑनलाइन सिस्टम संस्था ने बनवाकर तीन वर्ष पहले कार्यान्वित किया था जिससे अभिभावकों को अपने बच्चों के पंजीकरण में सुविधा होने के साथ ही अध्यापकों को भी अपनी कक्षा के छात्रों का पूर्ण विवरण, गृह कार्य, पुस्तकें, परीक्षाएं, अंक तालिकाएं तथा रिपोर्ट-कार्ड आदि को व्यवस्थित रखने में अत्यंत सुविधा हुई है। जिन राज्यों और क्षेत्रों में हमारी पाठशालाएं नहीं हैं उनके लिए हिन्दी यू.एस.ए. ने ऑन-लाइन कक्षाएं पिछले २ वर्ष पहले प्रारम्भ की है जिनमें ३५० से अधिक विद्यार्थी पंजीकृत हैं जो कि न केवल अमेरिका से अपितु अन्य देशों से भी हैं और हमारी कक्षाओं में नियमित रूप से हिंदी का प्रशिक्षण virtually ले रहे हैं।

भारत के कई प्रतिष्ठित स्कूलों और संस्थाओं से हमने इस वर्ष मेलजोल बढ़ाया है और इसके परिणामस्वरूप एक अंतर्राष्ट्रीय कविता प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया था जिसमें भारत और हिंदी यू.एस.ए. के ३० छात्रों ने भाग लिया था। यह प्रतियोगिता अपने आप में एक विशिष्टता लिए हुए थी। भारत और अमेरिका के छात्रों और अभिभावकों को एक धरातल पर लाकर अपने देशों की संस्कृति का आदान-प्रदान करने का एक सुन्दर माध्यम था।

आप सभी के सहयोग से हिंदी यू.एस.ए. निरंतर प्रगतिपथ की ओर अग्रसर है। इसके कार्यक्रमों को सुद्रढ़ बनाने हेतु किसी प्रकार के कोई भी सुझाव हों तो हमें उनसे अवश्य ही अवगत कराएँ। जो भी अभिभावक संस्था से जुड़कर अध्यापक या स्वयंसेवक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करने के इच्छुक हो तो कृपया अवश्य संपर्क करें। पत्रिका के बारे में अपने सुझाव भेजें।

धन्यवाद

Learn Hindi
In-Person and Online(Virtual)

Join Hindi Classes in New Jersey and other states

- Classes taught in 9 levels by experienced teachers for children between 5 and 15 years of age
- Structured syllabus tailored for each Hindi level Books written by HindiUSA teachers to match learning goals of defined syllabus
- Reliable organization backed by 18 years of practical experience in teaching
- Adult Hindi classes are also available in certain schools
- Required books are included in registration fee.
- Hindi Poetry Competitions, annual Hindi Mahotsava and many other activities organized throughout the year for the growth of children
- Mid-term/final written and oral exams are conducted

School sessions run between September and June

Classes Held On Fridays between
7:00 PM and 8:30 PM

*** A few school have different timing, please contact the respective School Coordinator for the school timing.**
All in-person classes will operate in the regular school buildings. Online (virtual) school is available for the students who reside outside of the in-person school areas.
No geographical limitations for the online school. Virtual school classes will be held on Fridays between 7:30 PM and 8:30 PM: (U.S. Eastern Standard Time)

Register online at www.hindiusa.org

For more information and Registration, Contact Rachita Singh: 609-353-8411 or HINDI USA @1-877-HINDI-USA (1-877-446-3487), www.hindiusa.org

सन् २००१ से हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति की सेवा में कार्यरत एक समर्पित संस्था...
पूर्वजों की विरासत हिन्दी भाषा नयी पीढ़ी को सौंपने का एक अभियान

युवा स्वयंसेवक अभिनन्दन समारोह - २०२४

हिंदी यू.एस.ए. संस्था अमेरिका के कई राज्यों में हिंदी के प्रचार प्रसार में लगी हुई है जिसमें से न्यू जर्सी में सबसे अधिक १६ तथा अन्य राज्यों में ११ पाठशालाओं में करीब ५००० विद्यार्थी हैं। इन सभी पाठशालाओं को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए ५०० से भी ज्यादा स्वयंसेवक/शिक्षक/शिक्षिकाएँ और २०५ से भी ज्यादा युवा स्वयंसेवक अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे है। संस्था से अब तक १३०० से ज्यादा विद्यार्थी स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं जो आज संस्था की ही कई पाठशालाओं में अपना योगदान दे रहे हैं। हिंदी यू.एस.ए. के युवा स्वयंसेवक हमारी अगली पीढ़ी हैं और हिंदी भाषा की जो ज्योत २००१ में २ विद्यार्थियों के साथ जलाई गई थी उसे आगे बढ़ाने का

संकल्प ले कर आगे बढ़ रहे हैं। हिंदी यू.एस.ए. भारत से बाहर हिंदी सीखने के लिए सबसे बड़ी संस्था है और ध्येय है अमेरिका में जन्मे बच्चों को भारतीय संस्कृति और भाषा के साथ जोड़े रखना। वर्ष २०२४ का युवा स्वयंसेवक अभिनन्दन समारोह सभी ने साथ मिलकर एडिसन के अकबर हॉल में २३ मार्च को मनाया गया। इस कार्यक्रम में १२५ से भी ज्यादा युवा स्वयंसेवकों ने भाग लिया, हाल की सजावट से साथ-साथ हमारे स्वयंसेवक भी भारतीय परिधान बहुत ही जँच रहे थे। कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय संस्कृति की परंपरा के अनुसार प्रथम पूजनीय श्री गणेश जी की वंदना से हुई और फिर स्वयंसेवकों द्वारा हनुमान चालीसा के पाठ से सारा हाल गूंज उठा और सभी ने एक ऊर्जा का अनुभव किया और हाल जय श्री राम से गूंज उठा। हिंदी यू.एस.ए. के किसी भी कार्यक्रम में यह पहली बार था और सभी ने बहुत ही आनंद लिया। इस बार का कार्यक्रम होली के शुभ दिन पर था तो सभी ने मिलकर होली के गानों पर नृत्य किया और खूब मस्ती भी की। संस्था के संस्थापक श्री देवेंद्र जी और रचिता जी ने युवा स्वयंसेवकों को संदेश और जीवन में काम आने वाली बहुमूल्य बातों से साथ-साथ धर्म के बारे में भी कुछ बातें कही जिसे सभी ने बहुत ही ध्यानपूर्वक सुना। सरिता

नेमाणी जी और माणक काबरा जी ने कार्यक्रम का संचालन बहुत ही मनोरंजक तरीके से किया। सभी पाठशाला संचालकों ने स्वयंसेवकों का परिचय कराया।

इस बार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन हमारी एक युवा स्वयंसेवक काव्या सिंह ने बहुत ही मनोरंजक अंदाज में सफलतापूर्वक संभाला। युवा स्वयंसेवकों ने मंच पर विविध प्रकार की प्रस्तुतियाँ करके अपनी प्रतिभा का परिचय दिया तथा यह बताया की हम सिर्फ पढ़ते-पढ़ाते ही नहीं बल्कि हमारी रुचि भजन, भारतीय नृत्य, संगीत में भी है। इसके अलावा जो स्वयंसेवक दूसरी संस्थाओं में भी अपना योगदान देते हैं उन्हें श्री राज मित्तल जी के द्वारा विशेष सम्मान के साथ-साथ प्रमाणपत्र भी दिए गए।

हिंदी यू.एस.ए. सभी युवा स्वयंसेवकों को उनके आने वाले भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता है और आशा करता है की भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा को बहुत दूर तक ले जायेंगे।

हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य तथा कार्यक्रम

सत्र २०२३-२४

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो पूरे वर्ष सक्रिय रहती है। इसके हिन्दी शिक्षण का सत्र सितंबर माह से जून माह तक चलता है। इन दस महीनों में संस्था की सभी पाठशालाओं में हिन्दी कक्षाएँ तो प्रति शुक्रवार अनवरत चलती ही हैं, साथ ही नीचे दिए गए कार्य और कार्यक्रम भी वर्ष भर चलते रहते हैं। हिन्दी यू.एस.ए. जिस नियमितता तथा गंभीरता से कार्य करती है उसे देखते हुए भारत के एक उच्च पद पर आसीन हिन्दी विभाग के अधिकारी ने कहा था कि "यह संस्था नहीं संस्थान है और इस पर शोध होना चाहिए"। तो आइए जानते हैं हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य।

१. पंजीकरण - पिछले ११ वर्षों से संस्था ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन (www.hindiusa.org) कर रही है जिससे अभिभावकों और संचालकों का कार्य सुलभ हो गया है।

२. पुस्तक मुद्रण तथा वितरण - हिन्दी यू.एस.ए. ने अपनी स्वयं की पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम ९ स्तरों में तैयार किया है जो विदेशों में जन्मे तथा पले-बढ़े विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। प्रत्येक स्तर में ४-४ पुस्तकें तथा फ्लैश कार्ड्स का एक सेट सम्मिलित है। छोटे स्तरों में हिन्दी के मोबाइल ऐप का भी उपयोग किया जाता है। इन पुस्तकों के लिए ३ भंडार गृह हैं। ४००० विद्यार्थियों में इन पुस्तकों का सही वितरण पाठशाला संचालकों के लिए एक बड़ी चुनौती होता है।

३. प्रचार एवं प्रसार - ग्रीष्मकालीन अवकाश तथा पंजीकरण के समय संस्था दूरदर्शन, रेडियो तथा पुस्तक-स्टॉल के माध्यम से हिन्दी तथा हिन्दी कक्षाओं का प्रचार करती है।

४. त्योहार का परिचय - प्रवासी विद्यार्थियों को भारतीय त्योहार तथा संस्कृति का परिचय देने के लिए संस्था प्रतिवर्ष न्यू जर्सी में आयोजित दशहरे के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेती है तथा दीपावली के समय प्रत्येक पाठशाला में दीपावली उत्सव का आयोजन धूम-धाम से किया जाता है। होली, मकर संक्रांति, लोहड़ी, बैसाखी, मातृ-पितृ पूजन दिवस, गणतंत्र दिवस आदि त्योहार जो सत्र के दौरान आते हैं उन्हें कक्षाओं में मनाया जाता है।

५. अर्धवार्षिक परीक्षा - दिसंबर माह में छुट्टियों के पहले लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसके लिए प्रतिवर्ष नए परीक्षा-पत्र बनाए जाते हैं।

६. शिक्षक अभिनंदन समारोह - हिन्दी यू.एस.ए. प्रतिवर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में अपने सभी ४५० स्वयंसेवकों का अभिनंदन तथा धन्यवाद करने के लिए प्रीतिभोज तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस समारोह में सभी स्वयंसेवकों के जीवनसाथी भी आमंत्रित किए जाते हैं तथा कुछ चुने स्वयंसेवकों को प्रतिवर्ष उनकी विशेष सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया जाता है तथा बाकी सभी स्वयंसेवकों को भी हिन्दी यू.एस.ए. उपहार प्रदान करता है।

७. विद्यार्थियों की भारत यात्रा - छात्रों को प्रोत्साहित करने और उनमें देशभक्ति की भावना जागृत करने तथा भारत से सम्बंध बने रहने के लिए हिंदी यू.एस.ए. उन्हें भारत यात्रा पर भी भेजता है, जिससे वे अपने संस्कारों की जन्मभूमि से जुड़ें रहें और भाषा एवं संस्कृति की ऊर्जा की उन्हें कभी कमी महसूस न हो। यह यात्रा हर २-३ वर्ष में एक बार होती है। इस वर्ष की भरत यात्रा का विवरण पेज ८२ से आगे देखें।

८. पाठशाला स्तर पर कविता पाठ का आयोजन - प्रत्येक हिन्दी पाठशाला जनवरी माह में अपनी-अपनी पाठशाला में कविता-पाठ का आयोजन करती है जिसमें उस पाठशाला के सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलता है।

९. कर्मभूमि की तैयारी - जनवरी और फरवरी माह में सभी स्तरों के शिक्षक कर्मभूमि में भेजने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट विद्यार्थियों को देते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी के साथ-साथ भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

१०. अन्तर्शालेय कविता पाठ - इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रति वर्ष फरवरी माह के अंत में किया जाता है। इस कविता पाठ में हिन्दी यू.एस.ए. की २० पाठशालाओं के विजेता विद्यार्थी स्तरानुसार प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता २ दिन चलती है तथा इसमें लगभग ४५० विद्यार्थी ९ स्तरों में भाग लेते हैं। प्रत्येक स्तर से १० सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुन कर महोत्सव में होने वाले अंतिम चरण की प्रतियोगिता के लिए भेजा जाता है।

११. युवा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन - इसका विस्तृत विवरण पेज ८ पर देखें।

१२. महोत्सव तथा परीक्षा की तैयारी - मार्च और अप्रैल माह में सभी पाठशालाओं के विभिन्न स्तरों में महोत्सव की प्रतियोगिताओं की तैयारी तथा परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम का दोहराव प्रारम्भ हो जाता है।

१३. मौखिक परीक्षा - मार्च के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक सभी पाठशालाओं में मौखिक परीक्षा का आयोजन होता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की हिन्दी समझने, बोलने तथा पढ़ने की क्षमता को जाना जाता है। यह व्यक्तिगत परीक्षा होती है।

१४. हिन्दी महोत्सव - यह एक ऐसा सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेला है जिसमें हिन्दी और हिंदुस्तान को प्यार करने वाले मिलते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी अपने हिन्दी ज्ञान तथा अन्य कलाओं जैसे नृत्य, अभिनय, वेषभूषा, संगीत आदि का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको भारत से जोड़ते हैं। महोत्सव में विभिन्न सामूहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जैसे लोक नृत्य प्रतियोगिता, विभिन्न त्योहार पर नृत्य, अभिनय गीत प्रतियोगिता, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान तथा व्याकरण प्रतियोगिता तथा फ़ाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता। इसी दिन हिन्दी यू.एस.ए. से स्नातक होने वाले विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी होता है। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए भारत से विशेष अतिथि भी आते रहते हैं।

१५. वार्षिक परीक्षा - जून के प्रथम सप्ताह में लिखित वार्षिक परीक्षा का आयोजन सभी पाठशालाओं में किया जाता है तथा जून के मध्य में सभी विद्यार्थियों के प्रगति-पत्र तथा प्रमाण-पत्र देकर सत्र का अंत किया जाता है।

१६. वार्षिक पिकनिक - जून के अंत में पिकनिक का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी शिक्षक शिक्षिकाएँ, पाठशाला संचालक और परिवार सम्मिलित होते हैं।

अब तो आप जान ही गए होंगे कि यदि किसी ने हिन्दी यू.एस.ए. को संस्थान कहा तो गलत नहीं कहा। हिन्दी यू.एस.ए. अपने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता है तथा उन्हें कोटिश: धन्यवाद देता है। उनके अथक प्रयास से जो हिन्दी की पवित्र धारा न्यू जर्सी और अन्य राज्यों में बह रही है वह प्रशंसनीय है।

क्या आप भी अपने बच्चों को भारतीय बनाना चाहते हैं? क्या आप भी अपने बच्चों को हिन्दी सिखाना चाहते हैं? क्या आप भी हिन्दी की सेवा कर आत्म संतोष चाहते हैं?

यदि हाँ तो हमारी वेबसाइट **www.hindiusa.org** पर जाएँ या हमें **1-877-HINDIUSA** पर फोन करें।

अर्चना पानसरे - एडिसन हिंदी पाठशाला

हम बच्चे प्रवासी भारतीय

भारत से अमेरिका आए मेरे माता पिता,
लेकर अपनी झोली में मोल अनुभवों का।
हृदय में अपना देश बसाकर,
रखा कदम अवसरों की धरती पर।
मात पिता ने ना छोड़ा मेरा गाँव मेरा देश।
कूट कूट कर भर दिया भारतीय होने का अभिनिवेश।
बच्चे तो हम उन्हीं के हैं,
दोनों संस्कृति अच्छे से सीखी।
अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी, मराठी सब भाषाएँ अपनाईं।
समय के साथ सकारात्मक बन गए हमारे विचार।
हिंदी यू.एस.ए. के साथ खुल गया ज्ञान का भंडार।
सनातन धर्म की आ गई समझ अच्छी,
रग्बी, सॉकर के साथ क्रिकेट हॉकी और कबड्डी संग जम गई भट्टी।
देखकर यहाँ दिवाली की धूम धाम;
वहाँ भारतवासी मित्र तो रह गए हैरान।
यहाँ कुछ मित्रों ने पूरी की अद्भुत भारत यात्रा।
नेत्रों से उनके देख ली हमने राम लला की अयोध्या।
भारत की एकता और सर्वधर्म समभाव आ जाता है तब समझ में,
जब सचिन के साथ सामी को भी गौरवान्वित किया जाता है अर्जुन से।
मेक इन इंडिया का नारा अब रंग लाने लगा है;
जब जोर का झटका धीरे से मालदीव को लगा है।
अब की बार भारत तो जाना है,
और लक्षद्वीप के संग सारा देश खोजना है।
विदेशों में रहने वाले भ्रमित बच्चे
(अमेरिकन बोर्न कन्फ्यूज्ड देसी)
अब ना हम कहलाएंगे,
नासा के संग इसरो में भी अपना अस्तित्व दिखलायेंगे,
अपना अस्तित्व दिखलायेंगे।

भारतीय भूगोल: वैश्विक नेतृत्व का माध्यम

हिमानी अग्रवाल
मध्यमा-३ शिक्षिका, ऑनलाइन पाठशाला

हिमानी अग्रवाल जी पिछले एक वर्ष से हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हैं। ये ऑनलाइन पाठशाला में मध्यमा-३ स्तर की अध्यापिका हैं। ये स्पोकेन नगर, वाशिंगटन राज्य में अपने परिवार के साथ रहती हैं। इन्होंने भारत से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। अपनी यात्राओं और अनुभवों के माध्यम से इन्होंने विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान विकसित किया है। ये वैश्विक नागरिक होने के साथ-साथ अपनी संस्कृति में निहित होने के महत्व को समझती हैं। वर्तमान में ये हिन्दी यू.एस.ए. में शिक्षिका के रूप में स्वयंसेवक के साथ-साथ, स्पोकेन हिंदू टेम्पल एंड कल्चरल सेंटर की अध्यक्ष, और स्पोकेनफेव्स नाम के ऑनलाइन समाचार पत्र के लिए एक लेखिका भी हैं।

भारत ने प्राचीन काल से विश्व में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ज्ञान, विज्ञान, व्यापार या फिर स्वास्थ्य भारत ने हर क्षेत्र में योगदान दिया है जो उसे विश्व का नेतृत्व करने में सक्षम बनाता है। इस सॉफ्ट पॉवर के साथ भारतीय भूगोल भारत को अनुकूल स्थान देता है।

भारत एक मात्र ऐसा देश है जिसके नाम से महासागर है। हिन्द महासागर वैश्विक व्यापार के लिए सबसे अधिक प्रयोग होने वाला मार्ग है। हिन्द महासागर छेत्र (Indian Ocean Region) से सन् २०२० में $७ ट्रिलियन का कुल व्यापार हुआ था। इस मार्ग से तेल, अनाज, वस्त्र, धातु आदि सामान एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका जाता है।

इसी प्रकार धरती मार्ग से भारत पूर्व दिशा से दक्षिण - पूर्वी एशियाई देशों से जुड़ता है तो पश्चिम और उत्तर दिशा से सेंट्रल एशियाई देशों से। द इंडिया-मिडल ईस्ट- यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर (IMEC) परियोजना इसका उदाहरण है।

भारत के पास अपने भूगोल के इस लाभ के साथ संसार को देने के लिए और भी बहुत कुछ है। जब कोविड के समय विकसित देश अपनी बनाई वैक्सीन बहुत महँगी बेच रहे थे तब भारत ने कई अविकसित अथवा छोटे देशों को वैक्सीन मैत्री योजना के अंतर्गत मुफ्त वैक्सीन दी थी।

जी-२० जैसे विश्व स्तरीय संगठन में भारत अफ्रीकी यूनियन को सम्मिलित करने के लिए सभी देशों की सर्व सहमती बनाने में सफल रहा। क्वाड हो या ब्रिक्स जैसे संगठन हों भारत एक अहम भूमिका निभा रहा है।

अंतरिक्ष विज्ञान, योग, डिजिटल टेक्नीक, यू पी आई (UPI), टेक्सटाइल, फार्मेसी, सस्टेनेबल एनर्जी, फूड सिक्योरिटी, मैनुफैक्चरिंग, आयुर्वेद, इत्यादि में भारत स्वयं भी अग्रसर हो रहा है और दूसरे देशों का भी सहयोग कर रहा है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की सोच और भारतीय भूगोल का यह अद्भुत संगम भारत को स्वाभाविक रूप से वैश्विक नेतृत्व का प्रबल दावेदार बनाता है।

योगिता मोदी - नार्थ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला

विश्व गुरु के मायने

भारत विश्व गुरु बन जायेगा, इसके क्या मायने हैं
कहाँ, कैसे, कब ये अवधारणा उदित हुयी
ये प्रश्न कहीं न कहीं हम सबके अंतर्मन में है

क्या भिन्न भिन्न देश प्रजाति, सकल मानव संकुल
भारत की ओर देख अपना राज-काज -काम चलाएँगे
क्या वे भारत की उन्नत चिरकालीन सभ्यता,
संस्कृति और सनातन धर्म के रंग में रंग जायेंगे

सरल अविरल नवसंचरित आदर्श परम्पराओं से सुशोभित
अनादिकाल से वैभवशाली जीवन्त-अंनत इतिहास सहेजे
उत्तंग हिमालय सा अकाट्य अविचल ब्रम्हांड भाल पर यह
दैदिप्तयमान, प्रकाशमयी है अनमोल कौस्तुभ मणि के जैसे

भारत के वीरों महावीरों की विराट अनगिनत शौर्य गाथाएँ
सबने जानी, सबने गुनी, पहचानी और मानी भी है
सर्वविदित है सर्वसिद्ध है अब पौरुष पराक्रम इनका
भारत का समूचे विश्व में कहाँ कोई दूर दूर तक सानी है

वेद-उपनिषद, पुराणों, काव्यों, महाकाव्यों में निहित है
विस्तृत जीवन सूक्त, अद्यात्म, सारगर्भित ज्ञान- विज्ञान
संतों, तपस्विओं, ऋषि -मुनि -मनीषियों की पवित्र धरा यह
अर्वाचीन काल से अक्षुण है भारत की यही देवत्व पहचान

चाहे हो शिक्षा, चिकित्सा, अत्याधुनिक अंतरिक्ष तकनीक,
चहुंमुखी तीव्र विकास की राह पर आज है भारत हमारा

आर्थिक प्रगति, संचार क्रांति या फिर विदेश नीति-कूटनीति
हर ओर जोर है, शोर है इनका, भारत का फिर गूँजा जयकारा
अनेकानेक दिव्य संदेशों, गीता-ज्ञान से संचारित है
अद्वितीय भारत की दिव्यता, भव्यता औऱ सहजता
वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय
विश्व कल्याण भाव से कीर्तिमान है भारत की अस्मिता

सृष्टि के आरम्भ से इसका इस भूतल पर अस्तित्व है
स्वयंसिद्ध है यह, मिले अनेकों यत्र-तत्र पुरजोर प्रमाण
कहलाता था और आगे भी कहलायेगा सोने की चिड़िया
अब यदि भारत विश्व गुरु नहीं तो फिर कहो और कौन?

बिटिया

हिमानी अग्रवाल
मध्यमा-३ शिक्षिका, ऑनलाइन पाठशाला

बिटिया मेरी मुझे बहुत लुभाती
पल-पल मेरा वात्सल्य बढ़ाती

पहली बार जब बाहों में आई
खुशी से मेरी आँखें भर आई
टिमटिमाते नयनों से बतियाती
बिटिया मेरी मुझे बहुत लुभाती
पल-पल मेरा वात्सल्य बढ़ाती

नटखट ऐसी की नाच नचाती
फिर झट हृदय से लग जाती
चंचलता उसकी मेरे मन को भाती
बिटिया मेरी मुझे बहुत लुभाती
पल-पल मेरा वात्सल्य बढ़ाती

उलझूँ कभी तो मुझे सुलझाती
मित्र बन मुझे राह दिखाती
समझ उसकी मुझे चकित कर जाती
बिटिया मेरी मुझे बहुत लुभाती
पल-पल मेरा वात्सल्य बढ़ाती

जब वो अपना शीश नमाती
माँ तो बस आशीष दिए जाती
वो तो मेरा आँगन सजाती
बिटिया मेरी मुझे बहुत लुभाती
पल-पल मेरा वात्सल्य बढ़ाती

भारत विश्वगुरु की ओर

पीयूष गोपाल, शिक्षक
जर्सी सिटी पाठशाला

सोने की चिड़िया जिसका नाम था
व्यापार हो या वाणिज्य
चित्रकला हो या वास्तुकला
अध्यात्म हो या धर्म
सांस्कृतिक हो या बौद्धिक
सब में जिसका गुणगान था
उस भारत को अंग्रेज़ी लुटेरों ने खूब दबाया
सैकड़ों सालों तक गुलाम बनाया
इतना की १९४७ के कई दशकों तक भारत उभर ना पाया
दुनिया के मंच पर अपना तिरंगा कम ही लहराया

जय जवान जय किसान के नारे तो लगे
गुट निरपेक्षता के कदम भी आगे बढ़े
पर भारत जनसंख्या के घनघोर चक्रव्यूह में फँस सा गया
चीन से दो युद्ध हार कर थम सा गया

पर आशा की किरण तब थी आयी
जब कपिल ने १९८३ में विश्व कप की ट्रॉफी उठायी
और राकेश शर्मा ने अंतरिक्ष की सैर लगायी
लेकिन भ्रष्टाचार ने फिर से किया घोटाला
जात पात ने कमंडल कर डाला
और उभरते भारत को रोक डाला

१९९२ में जब आर्थिक संकट का बादल बहुत गहराया
और किसी की समझ में कुछ ना आया
तब आर्थिक उदारीकरण की नीति ने अपना रंग जमाया
हम सब को विकास का प्रारूप समझ में आया
दूरसंचार की रफ़्तार तेज हुई और सूचना एवं प्रौद्योगिकी की ज्योति जली
व्यापार और वाणिज्य फिर से उभरा
भारत विश्वगुरु बनने की ओर चल पड़ा

अर्थव्यवस्था ही नहीं कूटनीति और विदेश नीति में भी हमने झंडा गाड़ा
नूक्लीअर परीक्षण करके दुश्मन और दुनिया को एक कड़ा संदेश दे डाला
और कारगिल युद्ध में दुश्मन को बुरी तरह पछाड़ा
Y२K ने हज़ारों कम्प्यूटर ज्ञानियों को अपनी तरफ़ लुभाया
बस्ता बांध भारतीय युवक पश्चिमी देशों के हवाई अड्डों पे खूब नज़र आया

इसीलिए २००४ में इंडिया शाइनिंग का नारा लगा
पर जनता को ये बहुत प्यारा ना लगा
अगले दस साल तक देश दो कदम आगे बढ़ा तो तीन कदम पीछे
मनरेगा और र टी आई ने कुछ उम्मीद बढ़ायी
क्रिकेट टीम भी दो वर्ल्ड कप जीत के आयी
लेकिन जब भ्रष्टाचार की सूनामी ज़बरदस्त तरीक़े से आयी
फिर शुरू हुई मूलभूत परिवर्तन की लड़ाई

बुनियादी ढांचे का आधुनिकरण शुरू हुआ
जहाँ "मेक इन इंडिया" ने आत्मनिर्भरता का भरोसा दिखलाया
वहीं "डिजिटल इंडिया" के व्यापक प्रभाव ने दुनिया भर को चौंकाया
जहाँ प्रधान मंत्री आवास योजना और आयुष्मान भारत ने
माध्यम वर्ग के सपनों को साकार किया
वहीं हज़ारों किलोमीटर लम्बे राजमार्गों और
नवनिर्मित हवाई अड्डों ने देशी और विदेशी पर्यटकों को काफ़ी मुग्ध किया

दुनिया ने इन उपलब्धियों को तो बहुत सहारा
किंतु विश्वमंच पे भारत की आवाज़ अप्रत्याशित रूप से बुलंद तब हुई
जब हमारे यहाँ से कोरोना की वैक्सीन निर्यात हुई
जब हमारे चंद्रयान ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव की यात्रा की
जब हमने एशियाई खेलों में अद्भुत सफलता प्राप्त की
जब हमारे मूल के लोगों ने विश्वप्रसिद्द कम्पनियों की कप्तानी की
जब हमने जी २० सम्मेलन कि अगुआई की
और जब हमारी अर्थव्यवस्था यू के को पछाड़कर कर विश्व के पाँचवें पायदान पे जा पहुँची

अब हमें अहंकार से बचना होगा
शासक और शासित दोनों को सचेत रहना होगा
अपना ध्यान आर्थिक और सामाजिक प्रगति पर केंद्रित रखना होगा
तभी हम सोने की चिड़िया फिर से कहलाएँगे
अपनी सांस्कृतिक धरोहर को कोने-कोने में फैलाएँगे
विश्वगुरु फिर से बन जाएँगे, विश्वगुरु फिर से बन जाएँगे

मन की अभिव्यक्ति

प्रिया गोडबोले, शिक्षिका, एडिसन पाठशाला

नमस्ते, मेरा नाम प्रिया गोडबोले है और मैं एडिसन पाठशाला में दस वर्ष से हिंदी की शिक्षा सेवा अर्पण कर रही हूँ। मैं पुणे, महाराष्ट्र में पली बड़ी हूँ, जिसे 'विद्या का मायका' कहा जाता है। मुझे बचपन से ही संगीत, साहित्य, नाटक, इत्यादि में रुचि रही है और मैंने मेरे विद्यार्थी जीवन से ही मराठी कविताएँ, कहानियाँ, लेख आदि लिखना शुरु कर दिया था। मुझे सकारात्मक विषयों पर और बाल साहित्य लिखने में अधिक रुचि है।

जीवन कभी-कभी हमें ऐसी कुछ घटनाओं का अनुभव करवाता है जब समय हमें ब्रह्मांड में सही समय पर, सही जगह लाकर पहुँचा देता है। जैसे, मानो सारे ग्रह सम्मिलित होकर हमें उस जीवनाभुव के प्रत्यक्ष रूप का साक्षीदार बनाना चाहते हों।

भारत को तन मन में बसाकर ही हम जैसे कई परिवार उच्च शिक्षा हेतु अथवा उच्च शिक्षा के उपरांत, कारोबार, व्यवसाय हेतु, स्वत: की उन्नति, प्रगति के लिए, पश्चिमी देशों में अपनी किस्मत आजमाने आते हैं। विरोधाभास यह है कि हम भारत से बाहर आ कर भी भारत को ही हर जगह, हर परिस्थिति में ढूँढते रहते हैं। परदेस की धरती पर पैर रखते ही हमें घर के स्वाद की याद आती है। घर हो या हॉस्टल का छोटा सा कमरा, एक कोने में हम भगवान जी की छोटी सी मूर्ति जरूर स्थापित करते हैं। हमारा व्यवसाय, कचहरी, या पढ़ाई की दिनचर्या नियमित रूप से शुरु भी हो जाए और हमारी वाणी व्यापार की बोली बोले, तो भी मन में और मन से हम हमेशा अपनी मातृभाषा में ही बात करते हैं। कितनी सरल, स्वाभाविक परंतु अचरज की बात है न!

जो भाषा मन को समझ आए, जो हमें हमारी प्रथम गुरु, माँ की देन हो, वही मातृभाषा हम सरस्वती जी के रूप में जिव्हा पर रखकर हमारे साथ विदेश लेकर आते हैं।

हमारी ज्येष्ठ बाला की शिशु अवस्था से ही हम उसकी पहचान मूलभूत भाषाओं से करवाने लगे थे। इसमें मराठी, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं के साथ साथ संस्कृत के कुछ आसान श्लोक, संगीत और कला की भाषाएँ भी सम्मिलित थीं।

हमारे परिवार के अनुसार हम बच्चों को विविध प्रकार से विद्यार्पण कराने हेतु दृढ़ निश्चयी थे। हम मानते हैं कि बाल्यावस्था से ही एकाधिक भाषाओं का आंकलन होने से विद्यार्थी दशा में उनके सोच विचार करने की क्षमता तीक्ष्ण हो जाती है।

'मन की अभिव्यक्ति', जिसमें हम अपनी इच्छाओं, सपनों और लक्ष्यों को अपने जीवन की वास्तविकता में परिवर्तित करते हुऐ देखना चाहते हैं। बस इसी सोच के सकारात्मक समाधान का हमने अनुभव किया।

हिंदी यू.एस.ए. ने मानो कि हमारी इच्छाओं को व्यक्त करने के लिए एक नया और असीम दालान खोल दिया। हमारे दोनों बच्चों ने पाठशाला का संपूर्ण पाठ्यक्रम पूरा कर स्वतः को हिंदी में साक्षर किया। इतना ही नहीं, अपने से छोटों को की भी हमेशा मदद करते है और करते रहेंगे। हिंदी भाषा लिखने, बोलने, पढ़ने और समझने के साथ-साथ, हिंदी के साहित्यिक अंगों का भी दोनों बच्चों ने लाभ उठाया उसमें यश भी

पाया।

मेरे विचार से हमारी कविता पाठ प्रतियोगिता अमेरिका की ही नहीं, परन्तु भारत से भी उच्च दर्जे की है। २०१० में हम पाठशाला से जुड़ गए और तब से लेकर आज तक हमने अनेक कवियों/कवयित्रियों की कविताएँ बच्चों से साथ सुनी, पढ़ी, और प्रस्तुत कीं, बहुत सारी कविताओं को जाना और सराहा। बहुत सारी कविताएँ मुँह जुबानी कंठस्थ हुईं और मन में यूँ ही बस गयीं। अनेक पुस्तकों की सहायता से, इंटरनेट से ढूँढ कर हमने बच्चों के साथ अनेक कहानियाँ पढ़ीं तथा समझीं।

हिंदी की व्यापक शिक्षा के साथ-साथ ही संपूर्ण वर्ष भर में होने वाले मुख्य परन्तु परिणाम कारक कार्यक्रमों में सम्मिलित हैं पंद्रह अगस्त, और छब्बीस जनवरी का उत्सव, जिसमें बच्चे भारत का राष्ट्रगीत सीखते हैं और सब के साथ गा कर भारतीय होने पर गर्व महसूस करते हैं। जैसे हम भारत की पाठशालाओं में, कचहरी में अनुभव करते थे, उसी तरह लड्डू या पेड़े मिठाई स्वरूप पाकर बच्चे खुश होते हैं। बच्चों को भारतीय पहनावा पहनने की इच्छा और प्रेरणा मिलती है। हिंदी महोत्सव एक ऐसा अनुभव रहा है जिसका हमारे पूरे परिवार ने संपूर्ण आनंद लिया। बच्चों के साथ साथ हमें भी बहुत सारे भारत से जुड़े विषयों पर मनोरंजन से भरपूर कार्यक्रमों का स्वाद लेने का अवसर मिला। इसके बारे में एक से अधिक लेख सहज लिखे जा सकते हैं।

हिंदी यू.एस.ए में हमारी दूसरी कड़ी तब शुरु हुई जब २०१४ में मैं शिक्षिका स्वयंसेवक के रूप से पाठशाला से जुड़ गयी। मुझे कनिष्ठा-१ से ले कर उच्च स्तर-२ तक के विद्यार्थियों को सिखाने का मौका मिला। उनके स्वभाव को जानने का मौका मिला। बच्चों की समझ अनुसार सिखाने की पद्धति में बदलाव कर समझाने का अवसर मिला और आज दस वर्षों के बाद जब हमारी कनिष्ठ बाला स्नातक बन गयी है, हमारे जैसे प्रफुल्लित एवं गर्व महसूस करने वाले माता पिता नहीं होंगे।

अमरीका में जन्में बच्चों के लिए हिंदी यू.एस.ए संस्था एक वरदान से कम नहीं है। बच्चों में भारत के प्रति गर्व और प्रेम की उपज हिंदी यू.एस.ए की ही देन है। उदाहरण के तौर पर हमारी ज्येष्ठ सुपुत्री अपने महाविद्यालय में भारत से पढ़ने आये विद्यार्थियों से अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी सुलभ रीति से वार्तालाप कर पाती है। भारत से आये हुए हिंदी भाषी विद्यार्थियों से मिलने जुलने में भाषा की वजह से कोई संकोच नहीं होता है।

आज इस लेख को लिखते हुआ मैं गदगद हो रही हूँ क्योंकि शायद जिस बात की चाह मन में थी कि भारत से दूर आकर भी किस तरह से हम यहाँ जन्में बच्चों को भारत से जोड़े रखें, या फिर यहाँ आकर भाषा सिखाने का काम हम अभिभावक किस प्रकार कर पायेंगे, इस जटिल प्रश्न का उत्तर हमें हिंदी यू.एस.ए. को पाकर मिला।

जैसे मैंने पहले कहा, कि समय हमें सही जगह लाकर पहुँचा ही देता हैं, शायद यह भी एक वजह होगी जो हम न्यू जर्सी में आ कर बसे। आज हमारे ही नहीं परन्तु कई हजार बच्चों ने हिंदी यू.एस.ए. से शिक्षा प्राप्त की है और वह अपने माता पिता के साथ साथ भारत का नाम अवश्य रोशन करेंगे।

मुझे अभिभावक और शिक्षक स्वयंसेवक के रूप में पाठशाला से जुड़ने का मौका मिला, इसे मैं भगवान का कोई संकेत समझती हूँ और भविष्य में किसी और रूप में भी जुड़ी रहने की प्रार्थना करती हूँ।

आस

महेश शर्मा

महेश शर्मा जी एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी लेखक हैं जिन्होंने विभिन्न विधाओं में रचनाएं लिखी हैं। उन्होंने विज्ञान स्नातक की पढ़ाई की है और प्राकृतिक चिकित्सक के रूप में काम किया है। उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है। वे सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। उनकी रुचि लेखन, पठन, गायन, और पर्यटन में है।

चहक रही चिडियाँ और बोल रहा कागा
लगता है बिरहन का भाग्य आज जागा।

बिरहा का एक-एक दिन
युग-युग सा बिता
सारे जतन हार गये
प्यार नहीं जीता।
शुष्क होते कँठो ने नीर क्षीर माँगा
लगता है बिरहन का भाग्य आज जागा।

प्रीतम परदेश गये
खबर नहीं कोई।
बाट उनकी देख-देख
अँखियां ना सोई।
अँसुअन के मोती पड़े प्रतीक्षा का धागा
लगता है बिरहन का भाग्य आज जागा।

साजन घर आयेंगे
मधुर मिलन होगा।
दूर होगा दारुण दुख
पल पल जो भोगा।
इसी आस पर मन का अवसाद भागा
लगता है बिरहन का भाग्य आज जागा।

The Ultimate STEM Playground

YARD Sciences

Science Reimagined

Ages 8-80
Pre-Med
Chemistry
Biology
Gene Editing
Summer Classes

General Science
Molecular Biology
Science Fair Mentoring
Medical Writing
Field Trips
Corporate Events

801 S. Church St. | Suite 9 | Mount Laurel | NJ | 08054
856-800-9273 | www.yardsciences.com

SCAN

आत्मनिर्भर भारत

अन्वेषा पानसरे

नमस्ते। मेरा नाम अन्वेषा पानसरे है। मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला में उच्चस्तर-१ की छात्रा हूँ। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं हिन्दी के अलावा, कथक, संस्कृत, और मराठी सीख रही हूँ। मुझे संगीत तथा नाटक करने में रुचि है।

मुझे ऐसा लगता है की **"विश्व गुरु"** बनने के लिए भारत को पहले आत्मनिर्भर होना जरूरी है और इसी लिए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारत में **"मेक इन इंडिया"** की पहल की । मेक इन इंडिया पहल, एक बहुत ही सोची समझी रणनीति का हिस्सा है। इस पहल से भारत में रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे। भारत के युवाओं को रोजगार मिलेगा जिससे भारत की अर्थव्यवस्था का विकास होगा।

आज तक भारत अपनी सुरक्षा के लिए रूस, फ्रांस ऐसे देशों पर निर्भर था। अपनी पेट्रोलियम की जरूरत के लिए खाड़ी के देशों पर निर्भर था। भारत की बैंकिंग प्रणाली काफी हद तक अमेरिकी बैंकों पर निर्भर थी। इन सब के लिए भारत को परकीय चलन देना पड़ता था और यह भारत की तरक्की में बाधा उत्पन्न कर रहा था। आज "मेक इन इंडिया" पहल से, भारत अपने सुरक्षा हथियार खुद भारत में ही विकसित कर रहा है। बल्कि आज का यह नया भारत, दुनिया को संरक्षण सामग्री, रक्षा हथियार, जैसे ब्रह्मोस मिसाइल भी बेचता है। पेट्रोलियम से निर्भरता कम करने हेतु भारत अन्य विकल्प खोज रहा है। जैसे सूर्य ऊर्जा, इथनोल पर चलने वाली गाड़ियाँ, इलेक्ट्रिक गाड़ियाँ आदि। आज भारत ने अपना खुद का पेमेंट सिस्टम "रुपे" विकसित किया है जिससे आप भुगतान बस कुछ सेकण्ड्स में कर सकते हो।

आज भारत के इसरो ने खुद की तकनीकी से बनाए हुए चंद्रयान-३ की चन्द्रमा पर यशस्वी लैंडिंग करवाई तथा आदित्य L1 लॉन्च किया है। इस प्रकार भारत अपने आपको स्वावलंबी बनाने की ओर कार्यरत है। आज भारत विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश करने के लिए आमंत्रित कर रहा है और उसको अच्छा प्रतिसाद (response) भी मिल रहा है। एप्पल जैसी बड़ी कंपनी अपने फ़ोन का उत्पादन भारत में करने के लिए तैयार हैं। भारत की "मेक इन इंडिया" पहल की वजह से, आज भारत का निर्यात काफी हद तक बढ़ गया है। आज भारत दुनिया को काफी मात्रा में रिफाइंड पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स, हीरे, दवाइयाँ और अनाज निर्यात करता है। महामारी के दौर में, भारत ने बड़ी मात्रा में कोविड वैक्सीन का उत्पादन किया और दुनिया को इस महामारी से बचाने के लिए सारे देशों को मुफ़्त में वैक्सीन उपलब्ध कराई। जिसकी वजह से आज भी दुनिया के सारे देश भारत के आभारी है।

हर संकट की घड़ी में, भारत, हर देश के लिए उनका मित्र बनकर खड़ा रहता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण - तुर्की भूकंप के समय देखने मिला। अपने मतभेदों को भुलाकर, भारत ने अपनी टीम को "ऑपरेशन दोस्त" के अंतर्गत तुर्की भेजा और भूकंप पीड़ित नागरिकों को सुरक्षा एवं बचाव साहित्य उपलब्ध करवाया। अफ़ग़ानिस्तान में जब भुखमरी का संकट आया तो भारत ने ईरान के रास्ते अफ़ग़ानिस्तान में गेहूँ उपलब्ध कराया जिससे अफ़ग़ानिस्तान को बड़ी राहत मिली।

भारत अपने पड़ोसियों के साथ हमेशा अच्छे रिश्ते बनाए रखना चाहता है। श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, भूतान, म्यानमार जैसे देशों को जब भी जरूरत पड़ी तभी भारत ने मदद की है। आज भी अफ्रीका और एशिया के अन्य गरीब देश, भारत को अपना मददगार मानते है। भारत ने हमेशा शांति और बातचीत का रास्ता अपनाया है। आज भी भारत अपनी "नो बुलेट फर्स्ट" नीति पर दृढ़ है। रूस भारत का अच्छा मित्र होने के बावजूद, रूस यूक्रेन वॉर में भारत ने तटस्थ भूमिका अपनायी और दोनों देशों को बातचीत से विवाद हल करने की सलाह दी। आज का भारत विश्व में शांति लाना चाहता है मगर आवश्यकता पड़ी तो सब को सबक सिखाने की क्षमता भी रखता है। अफ्रीका एवं एशिया के बहुत सारे देश आज भारत को अपना दोस्त बनाना चाहते है। ये सभी देश भारत को UNSC में अपना नेता मानते हैं और भारत को UNSC में स्थायी सदस्यता लेने के लिए समर्थन करते है।

मुझे पूरा विश्वास है के भारत जिस रास्ते पर चल पड़ा है, वह रास्ता भारत को विश्व गुरु की उपाधि तक जरूर लेकर जायेगा। मुझे इंतज़ार रहेगा के कब मेरा देश विश्व गुरु कहलायेगा।

मेक इन इंडिया

सिद्धार्थ अग्रवाल
उच्चस्तर-२, विल्टन पाठशाला

"मेक इन इंडिया" पहल सितंबर २०१४ में विश्व स्तर पर शुरू की गई थी। मेक इन इंडिया का लक्ष्य भारत को विनिर्माण क्षेत्र में बेहतर बनाना है। "मेक इन इंडिया" पहल चार स्तंभों पर आधारित है।

पहला स्तंभ: एक नई प्रक्रिया। मेक इन इंडिया उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए 'व्यापार करने में आसानी' को सबसे महत्वपूर्ण कारक मानता है।

दूसरा स्तंभ: एक नया बुनियादी ढाँचा। उद्योग के विकास के लिए आधुनिक और सुविधाजनक बुनियादी ढाँचे की उपलब्धता एक बहुत महत्वपूर्ण आवश्यकता है। सरकार का इरादा आधुनिक हाई-स्पीड संचार के साथ औद्योगिक गलियारे और स्मार्ट शहर विकसित करने का है।

तीसरा स्तंभ: नए सेक्टर शुरू करना। मेक इन इंडिया ने विनिर्माण, बुनियादी ढाँचे और सेवा गतिविधियों में २५ क्षेत्रों की पहचान की है।

चौथा स्तंभ: एक नई मानसिकता। अब तक उद्योग सरकार द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करता आया है। मेक इन इंडिया का इरादा उद्योग जगत के साथ सरकार की बातचीत के तरीके में एक आदर्श बदलाव लाकर इसे बदलने का है - न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन। मेक इन इंडिया ने बेहतर व्यवसाय के रूप में एक मजबूत प्रभाव डाला है और Forbes के अनुसार २०२४ में भारत ६.३% की दर से विश्व स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है। BMW ने भारत में ५०% स्थानीयकरण बढ़ाया और भविष्य की इलेक्ट्रिक Suzuki कारों का निर्माण यूरोपीय देशों में निर्यात करने के लिए भारत में किया जाएगा। भारत में कई कंपनियों ने उत्पादन शुरू कर दिया है। Apple और Samsung जैसी फोन कंपनियों ने उत्पादन केंद्र खोले हैं।

आज भारत की साख पहले से कहीं अधिक मजबूत है और दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र दुनिया की सबसे शक्तिशाली अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है।

वर्षा कोलाचिना, प्लैन्सबोरो , उच्चस्तर-१

आर्थिक विकास और नवाचार

१९९१ में भारत एक कमांड अर्थव्यवस्था से एक मिश्रित अर्थव्यवस्था बन गया। १५ अगस्त, १९४७ को भारत को ग्रेट ब्रिटेन से आजादी मिली। अपनी सरकार बनाते समय उन्होंने एक कमांड अर्थव्यवस्था को अपनाया। इसके माध्यम से सरकार अधिकांश आर्थिक निर्णयों को नियंत्रित करने में सक्षम थी। हालाँकि, १९९१ में एक बड़ा झटका लगा जब भारत विदेशी देशों से सामान आयात कर रहा था और उन्हें वापस भुगतान नहीं कर सका, जिसके परिणामस्वरूप देश को काफी घाटा हुआ। इसे ठीक करने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने निजी कंपनियों को सार्वजनिक क्षेत्र या सरकार द्वारा संचालित एजेंसियों में निवेश करने की अनुमति देने के बाद उनकी अर्थव्यवस्था को मिश्रित बाजार अर्थव्यवस्था में बदल दिया। इससे भारतीयों को अपनी स्वयं की नौकरी चुनने और अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करने का अधिकार मिल गया। चूँकि भारतीयों के पास ये अधिकार हैं, इसलिए सरकार अब बाज़ार व्यवस्था के करीब है, क्योंकि सरकार अर्थव्यवस्था के मामलों में उतना हस्तक्षेप नहीं कर रही है। क्योंकि उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था अपना ली है। भारत अपने दो आर्थिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम है: विकास और स्वतंत्रता।

भारत जिन दो सामाजिक/आर्थिक लक्ष्यों को प्राथमिकता देता है वे हैं आर्थिक विकास और आर्थिक स्वतंत्रता। आर्थिक वृद्धि यह दर्शाती है कि देश हर वर्ष विकास करना और अधिक पैसा कमाना चाहता है। इसे भारत की जी.डी.पी. के माध्यम से भारत की अर्थव्यवस्था में देखा जाता है। १९९१ में जब उन्होंने पहली बार बदलाव किया था तब से भारत की जी.डी.पी. में भारी वृद्धि हुई है। सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में योगदान देने वाले मुख्य क्षेत्रों में से एक पर्यटन क्षेत्र है। टूर गाइड अर्थव्यवस्था पर भारी प्रभाव डालता है और हर वर्ष भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या के कारण इसे बढ़ने देता है। इससे पता चलता है कि कैसे आर्थिक विकास उन दो आर्थिक लक्ष्यों में से एक है जिन्हें भारत सबसे अधिक प्राथमिकता देता है।

नए उद्योगों को यह सुनिश्चित करना होगा कि वे जी.डी.पी. में प्रगति करते रहें और ऊपर उठते रहें। भारत आर्थिक स्वतंत्रता को भी प्राथमिकता देता है। पर्यटन जैसे नए उद्योग शुरू करके वे नए व्यवसाय शुरू करने और सभी भारतीयों के लिए नए रास्ते बनाने के विचार को बढ़ावा दे रहे हैं। ये दो सामाजिक/आर्थिक लक्ष्य हैं जिन्हें भारत प्राथमिकता देता है।

भारत की अर्थव्यवस्था उस समय की तुलना में कहीं बेहतर प्रदर्शन कर रही है जब यह कमांड अर्थव्यवस्था से मिश्रित अर्थव्यवस्था में बदल गई थी। शुरुआत में, १९९१ में सकल घरेलू उत्पाद या सकल घरेलू उत्पाद केवल २७०.१ USD बिलियन था। लेकिन आज इस वर्ष के अंत तक सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) ३.३० ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर और १६.१% बढ़ने की उम्मीद है ("जी.डी.पी.)। इससे पता चलता है कि कैसे मिश्रित अर्थव्यवस्था ने भारत की अर्थव्यवस्था को विस्तार और विकास करने की अनुमति दी है। इसके साथ ही बेरोजगारी दर पिछले दिसंबर के ८.३% से घटकर मार्च २०२३ में ७.८% हो गई। इससे अर्थव्यवस्था को लाभ होता है, क्योंकि अधिक लोग काम कर रहे हैं,

अर्थव्यवस्था बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त भारत के स्टॉक एक्सचेंज में शीर्ष स्टॉक उत्तरोत्तर बढ़ रहे हैं। उदाहरण के लिए, भारत का शीर्ष स्टॉक, निफ्टी ५०, पिछले ५ वर्षों में ७२.८०% बढ़ गया है। इससे पता चलता है कि भारत की अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था और नागरिकों की निजी क्षेत्र में निवेश करने की क्षमता के कारण प्रगति कर रही है, जिससे राजस्व बढ़ने से उन्हें लाभ होता है। रियल एस्टेट की बिक्री भी बढ़ी है। पिछले २० वर्षों में इसमें हर साल ६% की वृद्धि हुई है। यह एक प्रगतिशील अर्थव्यवस्था का संकेत देता है, क्योंकि बिक्री बढ़ी है, इसलिए अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल रहा है। अंत में भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया भर में ५वें स्थान पर है। ये संकेतक दिखाते हैं कि कमांड अर्थव्यवस्था से मिश्रित अर्थव्यवस्था में स्विच करना कितना फायदेमंद था, क्योंकि इससे भारत के आर्थिक विकास के लक्ष्य को पूरा करने में मदद मिल रही है।

भारतीय व्यंजनों का वैश्विक प्रभाव

नमस्ते, मेरा नाम अमल शेखर अग्निहोत्री है। मैं मध्यमा-२ में पढ़ता हूँ और पाँचवीं कक्षा का छात्र हूँ। मुझे खाली समय में पुस्तकें पढ़ना, अलग-अलग भाषाओं एवं पूरे संसार की संस्कृति के बारे में विभिन्न माध्यमों से जानने में अभिरुचि है। मुझे अपनी संस्कृति, संस्कार, भोजन और भाषा से प्यार है। मैंने भारतीय भोजन के वैश्विक प्रभाव पर कुछ पंक्तियाँ लिखी है जिनको मैं आप सभी के साथ साझा करना चाहता हूँ।

भारतीय भोजन संस्कृति दुनिया भर में अपनी विविधता और स्वाद के लिए प्रसिद्ध है। यह न केवल भारतीय खाद्य पदार्थों के लिए जाना जाता है, बल्कि इसका वैश्विक प्रभाव भी बड़ा है। भारतीय भोजन का विशाल प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देता है, जैसे कि खानपान, सांस्कृतिक विनियोग, स्वास्थ्य, और व्यापार। खाने का तरीका और भोजन की प्रकृति की विशेषता के कारण भारतीय भोजन विश्व भर में प्रशंसित है। भारतीय खाने की अनूठी मिलावट, मसालों का उपयोग, और भारतीय रसोई की संवेदनशीलता ने इसे दुनिया भर में पसंदीदा बना दिया है। भारतीय भोजन और उसकी विभिन्नताओं को समझना और उन्हें अनुभव करना विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षक होता है। यह उन्हें भारतीय संस्कृति के अनुभव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्रदान करता है। भारतीय भोजन का अद्वितीय स्वाद और पोषण संभावनाएँ भी उसके वैश्विक प्रभाव को बढ़ाती हैं। भारतीय व्यंजनों में सभी प्रकार के अन्न, दाल, सब्जियां, फल, और मसाले सम्मिलित होते हैं जो व्यापार और विपणन के लिए विश्वसनीय हैं। आज भारतीय भोजन की विभिन्न वस्तुएँ विश्व भर में बड़े पैमाने पर व्यापार की जा रही हैं। इसका व्यापारिक महत्व बढ़ता जा रहा है, जिससे भारतीय खाद्य उद्योग को विश्वसनीयता मिल रही है। समाप्ति के रूप में, भारतीय भोजन का वैश्विक प्रभाव सिद्ध करता है कि खाने का एक अद्वितीय और सांस्कृतिक अनुभव है, जो लोगों को समृद्धि, संबंध, और सामंजस्य का एहसास कराता है। यह भारतीय भोजन को एक विश्वस्तरीय दर्शन बनाता है और समृद्ध सांस्कृतिक विनियोग का स्रोत है।

भारत के शास्त्रीय नृत्य

नंदिनी अग्रवाल, उच्चस्तर-२, वुडब्रिज पाठशाला

भारतीय नृत्य सनातनी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। इस लेख में मैं आपको भारत के आठ शास्त्रीय नृत्यों से परिचित करवाना चाहती हूँ।

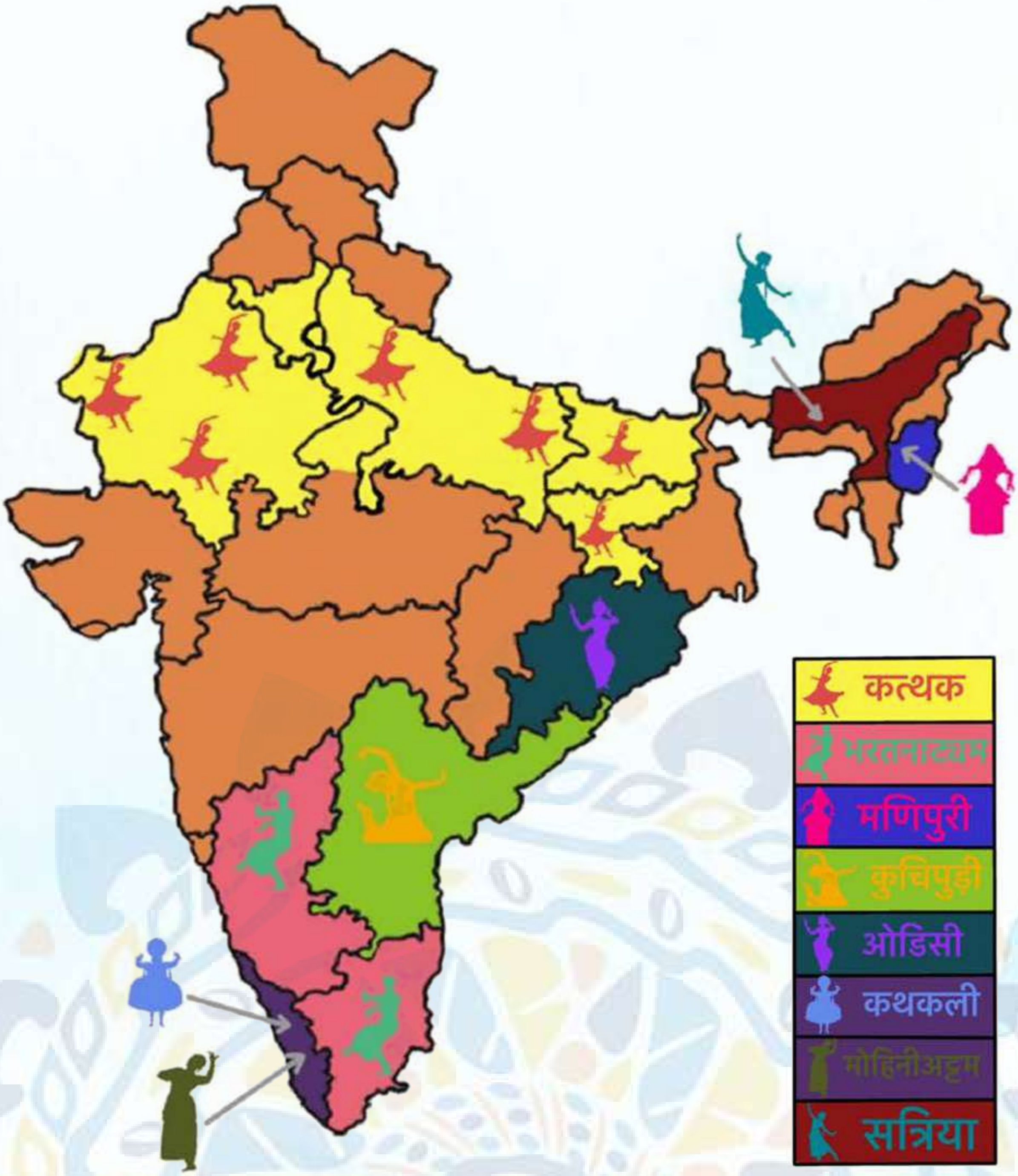

कत्थक एक उत्तर भारतीय शास्त्रीय नृत्य है। कत्थक शब्द का अर्थ कथा को नृत्य रूप से कथन करना है। कत्थक एक बहुत प्राचीन नृत्य माना जाता है क्योंकि कथक का वर्णन महाभारत में भी है। यह नृत्य कहानियों को नृत्य की मुद्राओं के माध्यम से प्रस्तुत करने का साधन है, मध्य काल में कत्थक कृष्ण कथाओं को दर्शाने के लिये किया जाता था। इस नृत्य के तीन मुख्य घराने हैं। १) जयपुर घराना, २) लखनऊ घराना, तथा ३) बनारस घराना। भारत में कत्थक उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, तथा मध्य प्रदेश में प्रचलित है।

कथकली भारतीय शास्त्रीय नृत्यों का एक प्रमुख रूप है। यह महान तथा प्राचीन कला केरल की एक "कहानी नाटक" नृत्य शैली है। यह भक्ति, नाटकीयता, नृत्य, संगीत, वेशभूषा, तथा श्रृंगार के समन्वय से दर्शकों को एक दैवी अनुभव कराता है। यह कला अतीत की कहानियाँ सुनाती है, विशेषकर भारतीय महाकाव्यों की और अपने प्रदर्शन की बारीकियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। इसमें होंठों का हर कंपन, आंखों की भंगिमाएँ या उँगलियों की मदद से बनाई गई मुद्राएँ बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। कथकली की भव्यता ने केरल को काफी प्रसिद्धि दिलाई है।

सत्रीया नृत्य असम का शास्त्रीय नृत्य है। वर्ष २००० में इस नृत्य को भारत के आठ शास्त्रीय नृत्यों में सम्मिलित होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस नृत्य के संस्थापक महान संत श्रीमंता शंकरदेव हैं। शंकरदेव ने सत्रीया नृत्य को अंकिया नाट के लिए एक संगत के रूप में बनाया था। यह नृत्य सत्र नामक असम के मठों में प्रदर्शन किया गया था। सत्रीया नृत्य कई पहलुओं में विभाजित है जैसे कि अप्सरा नृत्य, बेहार नृत्य, छली नृत्य, दशावतारा नृत्य, मंचोक नृत्य, नातौ नृत्य, रसा नृत्य, राजघारिया छली नृत्य, गोसाई प्रबेश, बार प्रवेश, झूमूरा, नाडू भंगी, तथा सुत्रधरा।

भरतनाट्यम् मुख्य रूप से दक्षिण भारत की शास्त्रीय नृत्य शैली है। इस नृत्यकला में भावम्, रागम् और तालम् इन तीन कलाओं का समावेश होता है। भावम् से 'भ', रागम् से 'र' और तालम् से 'त' लिया गया है। इसलिए भरतनाट्यम् नाम अस्तित्व में आया है। यह भरत मुनि के नाट्य शास्त्र पर आधारित है। वर्तमान समय में इस नृत्य शैली का मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा अभ्यास किया जाता है। इस नृत्य शैली के प्रेरणास्त्रोत चिदंबरम के प्राचीन मंदिर की मूर्तियों से आते हैं। भरतनाट्यम् को सबसे प्राचीन नृत्य माना जाता है। इस नृत्य को तमिलनाडु में देवदासियों द्वारा विकसित व प्रसारित किया गया था। यह नृत्य दक्षिण भारतीय धार्मिक विषयों तथा आध्यात्मिक विचारों को व्यक्त करता है, सामान्य रूप से हिंदू धर्म को तथा विशेष रूप से शैववाद को।

मोहिनीअट्टम भारत के केरल राज्य के दो शास्त्रीय नृत्यों (दूसरा कथकली) में से एक है। यह परंपरागत रूप से व्यापक प्रशिक्षण के बाद महिलाओं द्वारा किया एक एकल नृत्य है। मोहिनीअट्टम

नृत्य शब्द मोहिनी के नाम से बना है, मोहिनी रूप हिन्दुओं के देव भगवान विष्णु ने धारण इसलिए किया था ताकि बुराई पर अच्छाई की जीत हो सके। मोहिनीअट्टम का मूल सभी शास्त्रीय भारतीय नृत्यों की तरह नाट्य शास्त्र में है। यह एक प्राचीन हिंदू संस्कृत ग्रन्थ है जो शास्त्रीय कलाओं पर लिखा गया है। इस शब्द का सबसे पहला उल्लेख १६वीं शताब्दी के कानूनी-पाठ "व्यवहारमाला" में मिलता है, लेकिन इस नृत्य का मूल पुराणिक है।

मणिपुरी नृत्य भारत का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है। इसका नाम इसकी उत्पत्ति स्थल (मणिपुर) के नाम पर पड़ा है। यह नृत्य मुख्यतः हिन्दू वैष्णव प्रसंगों पर

आधारित होता है जिसमें राधा और कृष्ण के प्रेम प्रसंग प्रमुख हैं। मणिपुरी नृत्य भारत के अन्य नृत्य रूपों से भिन्न है। इसमें शरीर धीमी गति से चलता है, सांकेतिक भव्यता और मनमोहक गति से भुजाएँ अंगुलियों तक प्रवाहित होती हैं। यह नृत्य रूप १८वीं शताब्दी में वैष्णव सम्प्रदाय के साथ विकसित हुआ जो इसके शुरूआती रीति रिवाज और जादुई नृत्य रूपों में से बना है। विष्णु पुराण, भागवत पुराण तथा गीतगोविन्द की रचनाओं से आई विषयवस्तुएँ इसमें प्रमुख रूप से उपयोग की जाती हैं।

ओड़िसी भारतीय राज्य ओडिशा की एक शास्त्रीय नृत्य शैली है। ओडिसी नृत्य को पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर सबसे पुराने जीवित नृत्य रूपों में से एक माना जाता है। इसका जन्म मन्दिर में

नृत्य करने वाली देवदासियों के नृत्य से हुआ था। ओडिसी नृत्य का उल्लेख शिलालेखों में मिलता है। इसे ब्रह्मेश्वर मन्दिर के शिलालेखों में दर्शाया गया है। ओड़िसी नृत्य के सिद्धांत प्राचीन संस्कृत पाठ नाट्य शास्त्र में हैं। पारंपरिक ओड़िसी नृत्य की दो प्रमुख शैलियों हैं: १) गंभीर तथा आध्यात्मिक मंदिर नृत्य, २) आधुनिक तथा प्रयोगात्मक। दूसरी शैली में संस्कृति मिश्रण, विषयों, तथा नाटकों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रस्तुत की जाती है।

कुचिपुड़ी आंध्र प्रदेश, भारत की प्रसिद्ध नृत्य शैली है। यह पूरे दक्षिण भारत में प्रसिद्ध है। इस नृत्य का नाम कृष्णा जिले के दिवि तालुक में

स्थित कुचिपुड़ी गाँव के ऊपर पड़ा है, जहाँ के रहने वाले ब्राह्मण इस पारंपरिक नृत्य का अभ्यास करते थे। परम्परा के अनुसार कुचिपुडी. नृत्य मूलतः: केवल पुरुषों द्वारा किया जाता था और वह भी केवल ब्राह्मण समुदाय के पुरुषों द्वारा। ये ब्राह्मण परिवार कुचिपुडी. के भागवतथालू कहलाते थे। कुचिपुड़ी के पंद्रह ब्राह्मण परिवारों ने पांच शताब्दियों से अधिक समय तक परम्परा को आगे बढ़ाया है। प्रतिष्ठित गुरुओं ने महिलाओं को भी इसमें सम्मिलित कर इस नृत्य को समृद्ध बनाया है तथा कई एकल प्रदर्शनों की नृत्य संरचना तैयार कर इस नृत्य को व्यापक भी बनाया है।

नार्थ ब्रुंस्विक, मध्यमा-२

भारतीय व्यंजनों का वैश्विक प्रभाव

नमस्ते, मेरा नाम निरल देसाई है। मैं नार्थ ब्रुंस्विक हिंदी यू.एस.ए. में पिछले सात वर्षों से पढ़ा रही हूँ। इस वर्ष का कर्मभूमि का विषय बहुत ही बढ़िया है। यह वर्ष सभी भारतीयों और भारत से दूर रहने वाले हमारे जैसे सनातन प्रेमियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस वर्ष की शुरुआत में अयोध्या में निर्मित प्रभु श्री राम के भव्य मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का महोत्सव हमारे जीवन का एक अविस्मरणीय प्रसंग बन चूका है। यह देख कर के ऐसा अवश्य प्रतीत हो रहा है कि भारत बहुत ही तेज गति से विश्वगुरु बनने की ओर बढ़ रहा है। मेरी कक्षा मध्यमा-२ के विद्यार्थी दिव्यांश शर्मा के द्वारा लिखा हुआ लेख यहाँ प्रस्तुत है।

दिव्यांश शर्मा

भारतीय खाने का वैश्विक प्रभाव बहुत ही महत्वपूर्ण है। भारतीय भोजन की विविधता, स्वाद, और पौष्टिकता ने विश्व भर में लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। भारतीय ब्यंजनों में मसालों का उपयोग, विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व, और अनूठी रसोई तकनीकों का संयोजन एक अलग ही भाव महसूस कराता है। आज, भारतीय खाने की मिठास, तीखापन, और स्वाद दुनिया भर में पसंद किया जाता है और भारतीय ब्यंजनों का प्रभाव अन्य राष्ट्रों के खाने में भी देखा जा सकता है। उदाहरण के रूप में, भारतीय चाय का प्रसार विश्व भर में हो रहा है और यह अब विभिन्न देशों में लोकप्रिय शौक बन गया है।

CHANNA BHATURA

ALOO PARANTHA

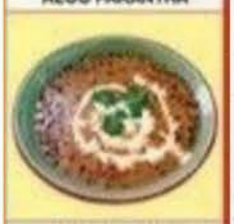

DAL MAKHANI

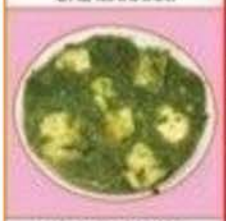

PALAK PANEER

योग और आयुर्वेद

रेयांश तिवारी
उच्चस्तर-१, जर्सी सिटी पाठशाला

आयुर्वेद

आयुर्वेद एक वैकल्पिक चिकित्सा प्रणाली है जिसकी ऐतिहासिक जड़ें भारतीय उपमहाद्वीप में हैं। यह भारत में बड़े पैमाने पर प्रचलित है जहां लगभग 80% आबादी आयुर्वेद का उपयोग करती है। आयुर्वेद का सिद्धांत एवं व्यवहार कूट वैज्ञानिक है। आयुर्वेद के विविध उपचार दो हज़ार वर्षों से भी अधिक समय में विकसित हुए हैं। उपचारों में हर्बल दवाएँ, विशेष आहार, ध्यान, योग, मालिश, जुलाब, एनीमा और चिकित्सा तेल शामिल हैं। आयुर्वेदिक तैयारियां आमतौर पर जटिल हर्बल यौगिकों, खनिजों और धातु पदार्थों (शायद प्रारंभिक भारतीय रसशास्त्र के प्रभाव में) पर आधारित होती हैं। प्राचीन आयुर्वेद ग्रंथों में शल्य चिकित्सा तकनीकें भी सिखाई गईं, जिनमें नासिकासंधान, गुर्दे की पथरी निकालना, टांके लगाना और बाह्य पदार्थ को निकालना सम्मिलित है।

योग

योग शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्रथाओं या विषयों का एक समूह है जिसकी उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई थी, और इसका उद्देश्य मन को नियंत्रित करना और शांत करना, मन और सांसारिक पीड़ा से अछूती एक अलग साक्षी-चेतना को पहचानना है। योग आमतौर पर शारीरिक मुद्राओं (आसन), सांस लेने की तकनीक (प्राणायाम) और ध्यान पर जोर देता है। योग की उत्पत्ति ५००० वर्ष पहले उत्तरी भारत में हुई थी।

योग जैसी प्रथाओं का सबसे पहले उल्लेख प्राचीन हिंदू ग्रंथ ऋग्वेद में किया गया था। योग का उल्लेख कई उपनिषदों में किया गया है। भारतीय भिक्षुओं ने १८९० के दशक के अंत में पश्चिम में योग का अपना ज्ञान फैलाया। आधुनिक योग शिक्षाएँ १९७० के दशक तक पश्चिमी देशों में व्यापक रूप से लोकप्रिय हो गईं। योग में कल्याण के कई पहलू हैं, जिनमें तनाव प्रबंधन, मानसिक/भावनात्मक स्वास्थ्य, स्वस्थ भोजन/गतिविधि की आदतों को बढ़ावा देना, नींद और संतुलन सम्मिलित हैं। योग ने कमर दर्द, गर्दन दर्द, सिर दर्द और घुटने के पुराने ऑस्टियोआर्थराइटिस सहित दर्द से पीड़ित लोगों की सहायता की है।

योग और आयुर्वेद लोगों की कैसे मदद करते हैं?

योग और आयुर्वेद शरीर और दिमाग को प्राकृतिक रूप से ठीक करने में सहायता करते हैं। आयुर्वेद त्रिदोष, धातु और मल की अवधारणाओं के इर्द-गिर्द घूमता है। हमारे शरीर और दिमाग को स्वस्थ रखने के लिए इन सभी का संतुलन होना चाहिए।

a2z signs
NOTHING ACTS FASTER THAN SIGNS
Congratulations &
Best Wishes to
हिन्दी USA ®
SOLUTION FOR
ALL KIND of SIGNS
your MARKETING NEEDS
CHANGE real the make things
xpose your IDEAS and be CREATIVE
CREATIVE
SIGNS
DESIGN FABRICATE INSTALL
95 Newfield Ave. Suite I Edison, NJ - 08837
(732) 512-9500 / 9700 a2zsign@gmail.com
www.a2zsigns.com
Backlit Alum Letter
Brushed Alum Letter
Brushed Gold Alum Letter
Front Lit Channel Letter
Plastic Molded Letter
Acrylic Letter

चेरी हिल, मध्यमा-३

भारत का अंतरिक्ष अन्वेषण

ऋतु जग्गी

मैं २००७ से हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ और पिछले १० वर्षों से मध्यमा-३ वर्ग के विद्यार्थियों को पढ़ा रही हूँ। विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा हिन्दी पढ़ाने में मैं बहुत गर्व का अनुभव करती हूँ और आशा करती हूँ कि ये विद्यार्थी हिन्दी के दीपक को सदा प्रज्वलित रखेंगे।

इंदु शर्मा

मैं २०२२ से हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ और गत दो वर्षों में मैंने मध्यमा-३ के विद्यार्थियों को पढ़ाया है। हम यहाँ भारत से दूर होकर भी हिंदी भाषा के माध्यम से आगे आने वाली पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से जोड़ कर रख सकते हैं। हिंदी यू.एस.ए. के नेतृत्व में यह संभव हो पाया है और यही मेरे हिंदी पाठशाला में छोटे से योगदान के लिए प्रेरणा भी है।

भारत का अंतरिक्ष अन्वेषण एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो देश को गर्वित बनाता है। भारत ने विभिन्न समय में अनेक सफल अंतरिक्ष मिशन का आयोजन किया है। इसका पहला कदम १९७५ में 'आर्यभट' नामक उपग्रह के साथ उड़ान भरण के रूप में रखा गया था, जो भारत को दुनिया में अंतरिक्ष में एक स्वायत्त राष्ट्र बनाने में सहायक था। इसके बाद, 'चंद्रयान-१' ने चंद्रमा के सर्वेक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'मंगलयान' ने मंगल ग्रह के सर्वेक्षण में सफलता प्राप्त की और भारत को एकमात्र देश बनाया जिसने पहले ही प्रयास में सफलता प्राप्त की। भारत अब 'गगनयान' मिशन के माध्यम से मानव अंतरिक्ष यात्रा की ओर कदम बढ़ा रहा है। इससे देश के अंतरिक्ष अनुसंधान क्षमता में वृद्धि हो रही है और भारत अंतरिक्ष समुदाय में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस वर्ष चेरी हिल, मध्यमा-३ के विद्यार्थियों ने 'भारत का अंतरिक्ष अन्वेषण' विषय पर शोध किया और भारत के विभिन्न अंतरिक्ष अभियानों को एक घटना क्रम में लिखा।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन

आद्या चावला

इसरो या भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन भारत की राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी है। इसकी स्थापना १५ अगस्त, १९६९ को हुई थी - भारत को आज़ादी मिलने के २२ साल बाद। इसकी नींव १९६२ में विक्रम साराभाई ने रखी थी। इसका मुख्यालय बेंगलुरु, कर्नाटक में है। इसरो का मुख्य उद्देश्य अंतरिक्ष अनुसंधान और अन्वेषण तथा रॉकेट और उपग्रहों का डिजाइन और विकास करना है। इसने १९७५ में भारत का पहला उपग्रह आर्यभट्ट बनाया। तब से इसने चंद्रमा और मंगल ग्रह पर सफल मिशन लॉन्च किए हैं। जनवरी २०२४ तक इसने १२३ अंतरिक्ष यान मिशन लॉन्च किए हैं। इसके उपग्रहों और कार्यक्रमों ने भारत के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने दूरसंचार और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में प्रगति में भी मदद की। इसरो ने अपनी उपलब्धियों और कड़ी मेहनत से हम सभी भारतीयों को गौरवान्वित किया है!

आर्यभट्ट

आरुष चौधरी

आर्यभट्ट भारत का पहला उपग्रह है, जिसका नाम इसी नाम के महान भारतीय खगोल शास्त्री के नाम पर रखा गया है। इसे सोवियत संघ द्वारा १९ अप्रैल, १९७५ को कास्पुटिन रॉकेट ले जाने वाले कोस्मोस-३एम लॉन्च वाहन पर लॉन्च किया गया था। इसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा अंतरिक्ष में उपग्रहों के निर्माण और संचालन में अनुभव प्राप्त करने के लिए बनाया गया था। इसे एक्स-रे, खगोल विज्ञान और सौर भौतिकी में प्रयोग करने के लिए बनाया गया था। सौर भौतिकी (Solar Physics) खगोल भौतिकी की वह शाखा है जिसमें सूर्य का विस्तार से अध्ययन किया जाता है। यह अंतरिक्ष यान १.४ मीटर व्यास का छब्बीस भुजाओं वाला बहुभुज था। सभी (ऊपर और नीचे) चेहरे सौर कोशिकाओं से ढके हुए थे। भारतीय निर्मित ट्रांसफार्मर की विफलता के कारण कक्षा में ४ दिनों के बाद प्रयोग रोक दिए गए थे। पाँच दिनों के ऑपरेशन के बाद अंतरिक्ष यान से सभी सिग्नल खो गए। उपग्रह ने ११ फरवरी १९९२ को पृथ्वी के वायुमंडल में पुनः प्रवेश किया। आर्यभट्ट उपग्रह की छवि १९७६ और १९९७ के बीच, दो रूपये के भारतीय नोट के पीछे दिखाई दी।

चंद्रयान–१

आशिता नलावडे

चंद्रयान-१ चंद्रमा पर भारत का पहला मिशन था। ISRO के अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन चाहते थे कि उनका संगठन एक महत्वाकांक्षी मिशन शुरू करे। चंद्रमा की परिक्रमा का विचार एक महान विचार था जो इस लक्ष्य के लिए साकार हुआ। विमान को २२ अक्टूबर २००८ को श्रीहरिकोटा से सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया था। अंतरिक्ष यान ११ वैज्ञानिक उपकरण ले गया जो भारत, जर्मनी, स्वीडन, बुल्गारिया, अमेरिका और यू.के. में बने थे। NASA ने भी इस मिशन में योगदान दिया और उसे चंद्रयान-१ पर दो, पानी को पहचानने वाले उपकरण दिए। क्लेमेंटाइन मून मैपिंग ऑर्बिटर अपने आप काम करने में सक्षम नहीं था, लेकिन चंद्रयान -१ इसे एक अन्य उपकरण, मून मिनरलोजिकल मैपर के साथ ले जाने में सक्षम था, जो बर्फ के तरल, पानी, जल और भाप के बीच अंतर कर सकता था। उपग्रह ने चंद्रमा के चारों ओर ३४०० से अधिक परिक्रमाएँ कीं। २९ अगस्त २००९ को अंतरिक्ष यान से संपर्क टूट जाने पर मिशन समाप्त हो गया। चंद्रयान-१ मिशन की कुल लागत १०० मिलियन डॉलर से कम है। यह जानते हुए भी कि इसरो ने कई संसाधनों के बिना चंद्रयान-१ को संभव बनाया, यह वास्तव में भारत के साथ-साथ पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी सफलता है। चंद्रयान-१ के चंद्रमा की सतह के खोज ने चंद्रमा की ओर ज्ञान का योगदान दिया है।

मंगलयान (मॉर्स ऑर्बिटर मिशन)

अरनव रेलिया

मंगलयान (मॉर्स ऑर्बिटर मिशन) भारत का पहला ग्रहों के बीच का मिशन था। यह भारत का अंतरिक्ष यान था जो मंगल ग्रह पर पहुँचा। इसे ५ नवंबर २०१३ में इसरो द्वारा शुरू किया गया था। यह सरलतापूर्वक मंगल ग्रह की ऑर्बिट में २४ सितंबर २०१४ को अपनी पहले ही प्रयास में पहुँचा। मंगलयान मिशन मंगल ग्रह और उसके वायुमंडल को पढ़ने के लिए बनाया गया था। यह पी. एस. एल. वी. - २५ की सहायता से श्री हरीकोटा से भेजा गया था। यह सोचा गया था कि मंगलयान ६ महीने मंगल ग्रह पर रहेगा लेकिन यह ८ वर्ष तक मंगल

ग्रह की ऑर्बिट में रहा। यह विश्व का सबसे सस्ता मंगल मिशन था। भारत विश्व का मंगल ग्रह पर अंतरिक्ष यान भेजने वाला चौथा देश था और एशिया का पहला। चीन ने भारत के मंगल मिशन को "एशिया का गौरव" कहा।

चंद्रयान-२

हेली झवेरी

चंद्रयान-२ मिशन, चंद्रमा पर उतरने का भारत का दूसरा प्रयास था। इसे २ जुलाई, २०१९ को एस.डी.सी.एस, श्रीहरिकोटा में लॉन्च किया गया था। यह तीन पूर्ण मिशनों में से दूसरा चंद्र मिशन था। चंद्रयान-२ का लक्ष्य, चंद्रयान-१ की खोजों को आगे बढ़ाना और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास एक सॉफ्ट लैंडिंग हासिल करना था जो तब तक चंद्र मिशनों में एक अज्ञात क्षेत्र था। चंद्रयान -२ चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सॉफ्ट लैंडिंग का प्रयास करने वाला पहला अंतरिक्ष मिशन था। मिशन की क़ीमत ८७ मिलियन डॉलर थी! दुर्भाग्य से, सिस्टम में गड़बड़ी के कारण यह विफल हो गया था। यदि यह विफल नहीं होता, तो भारत ने चंद्रमा की समझ को बढ़ा दिया होता। भले ही ऑर्बिटर विफल हो गया, लेकिन इसके कुछ हिस्से अभी भी चंद्रमा के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। चंद्रयान-२ की असफलता के बाद, चंद्रयान-३ की योजना बनाई गई थी।

चंद्रयान-३

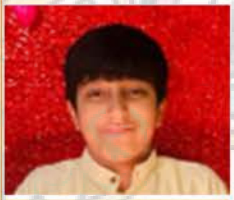

ईशान मलिक

चंद्रयान-३ इसरो द्वारा बनाया हुआ एक कार्यक्रम है जिससे हमें चंद्रमा की जानकारी मिलती है। इसे श्रीहरिकोटा (आंध्र प्रदेश) के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से उड़ाया गया था। चंद्रयान-३ चालीस दिनों में चाँद तक पहुँच गया था। इस रॉकेट को बनाने में चार वर्ष लगे। यह रॉकेट MTAR टेक्नोलॉजी से बनाया गया है। यह रॉकेट २३ अगस्त, २०२३ को चाँद के दक्षिण भाग पर उतरा। इसरो ने चंद्रयान-३ केवल ६०० करोड़ रुपयों ($७२४,००५) में बनाया। चंद्रयान-३ का लैंडर विक्रम है और रोवर प्रज्ञान है । इसकी वजह से वैज्ञानिकों को चाँद की बनावट और उस पर सल्फर होने की जानकारी मिली।

गगनयान

सुहाना पुरिणी

गगनयान, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का पहला मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन है जिसके तहत तीन अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष की सैर कराई जाएगी। इन तीन मिशनों में से २ मानवरहित होंगे, जबकि एक मानव युक्त मिशन होगा। मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम में एक महिला सहित तीन भारतीय अंतरिक्ष यात्री होंगे। इस मिशन में "GSLV Mk III" launch vehicle का प्रयोग किया जायेगा | यह मिशन ५-७ दिनों के लिये पृथ्वी से ३००-४०० कि.मी. की ऊँचाई पर निम्न भू-कक्षा में पृथ्वी का चक्कर लगाएगा। ISRO के बाकी मिशनों के तरह ही गगनयान मिशन भी काफी किफायती होगा, और इस कार्यक्रम की कुल लागत दस हज़ार करोड़ रुपये से कम होने की उम्मीद है। भारत का पहला मानव अंतरिक्ष-उड़ान मिशन गगनयान २०२४ में लॉन्च होने कीआशा है। गगनयान मिशन इतना महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि यह पहला स्वदेशी मिशन है जो भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजेगा, और इसकी सफलता भारत को ऐसा करने वाले चौथे देश में शामिल कर देगा, जिसमें अभी अमेरिका, रूस और चीन जैसे देश सम्मिलित हैं, और यह अपना स्वयं का अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने के भारत के सपने को भी ज्यादा गति देगा। यह देश में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के स्तर को बढ़ाने तथा युवाओं को प्रेरित करने में सहायता करेगा।

भारतीय प्रवासी

येशा मेवानी

मेरा नाम येशा मेवानी है। मैं पाँचवी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एडिसन हिंदी स्कूल की मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मुझे कत्थक नृत्य में रुचि है जो मैं दो वर्ष से सीख रही हूँ। मुझे गीत गाना तथा बास्केटबॉल खेलना बहुत पसंद है। मुझे बहुत गर्व है कि मैं हिंदी यू.एस.ए. की छात्रा हूँ।

मैं आज आपसे "भारतीय प्रवासी" के बारे मैं बात करना चाहती हूँ। यह विषय दो शब्दों से मिलकर बना है - "भारतीय" और "प्रवासी" अर्थात् ऐसे भारतीय जो अपना देश छोड़ कर दूसरे देशों में अपना जीवन व्यापन कर रहे हैं। आज हम उनके इस परिवर्तन के बारे में, इसके प्रभाव के बारे में बात करेंगे और कुछ उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

दुनिया भर में दो सौ अस्सी करोड़ प्रवासी हैं और उनमें से लगभग अठारह करोड़ भारत से आते हैं, जो भारत के प्रवासी लोगों को सबसे बड़ा प्रवासी बनाता है। भारतीय प्रवासी जिन देशों में रहते हैं, उन देशों की अर्थव्यवस्था की भी सहायता करते हैं तथा दोनों देशों के संबंध सुदृढ़ बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रवासी भारतीय मुख्यतः उच्च शिक्षा प्राप्त करके उन देशों में महत्वपुर्ण पदों पर नियुक्त है, उदाहरण के लिए - सत्य नडेला जो माइक्रोसॉफ्ट (Microsoft) का नेतृत्व कर रहे हैं, गूगल (Google) सुन्दर पिचाई, अडोब (Adobe) के शांतनु नारायण, यूट्यूब (Youtube) के नील मोहन, शनेल (Chanel) की लीना नायर तथा अजय बंगा विश्व बैंक (World Bank) का नेतृत्व कर रहे हैं। यह सूची अंतहीन है। अब प्रवासी भारतीय राजनीति में भी सम्मिलित हो रहे हैं। भारतीय प्रवासी बहुत ही प्रभावशाली बन रहे हैं, सामाजिक रूप से, आर्थिक रूप से और राजनैतिक रूप से। इसलिए स्पष्ट रूप से यह समुदाय काफी प्रगति कर रहा है।

भारत पर दुनिया के इस भरोसे का मुख्य कारण उनका भारतीय मूल से होना है। वे दुनिया के किसी भी हिस्से में हों, पर वे अपने साथ भारतीयता को सँजोए हुए हैं। वे भारतीयता को जीते, सहेजते और जगाते हुए भारत की सांस्कर्तिक विरासत को विश्व भर में फैला रहे हैं और उसी का नतीजा है कि भारत का खान-पान, वेशभूषा, पारिवारिक मूल्य एवं व्यापार की अहमियत दुनिया भर में चिरपरिचित हैं। इन शैली से जुड़ाव महसूस करने के कारण ही भारतीय प्रवासी ही नहीं, बल्कि विदेशी नागरिक भी भारत के बारे में जानने में रुचि रखते हैं और भारत भ्रमण करने आते हैं।

भारतीय संस्कृति जितनी पुस्तकों और समाचार के माध्यम से पहुंची है, उससे कहीं ज्यादा प्रवासी भारतीयों के योगदान से पहुँची है। इनके जीवन, आचरण तथा व्यवहार ने भारत को दुनिया भर में अपनी पहचान बनाने में सहायता की है। वास्तव में वे ही भारतीयता के मुख्य प्रचारक हैं।

मैं भी भारत मूल की एक लड़की हूँ, और बड़े होकर मैं भी भारत का नाम रोशन करने में अपना योगदान दूँगी।

।।। भारत माता की जय ।।।

चेरी हिल, मध्यमा-२

भारतीय व्यंजनों की विशेषता और पौष्टिकता

इस वर्ष चेरी हिल के मध्यमा-२ के छात्रों ने भारतीय व्यंजनों पर अनुसंधान करके उनकी विशेषताओं के बारे में लिखा है। आज ओबेसिटी/ मोटापा एक महामारी बन चुकी है और भारतीय व्यंजन स्वादिष्ट के साथ-साथ पौष्टिक भी होते हैं। यदि विश्व के लोग ऐसे पौष्टिक खानों को प्रतिदिन खाएँ तो इस महामारी को मात दी जा सकती है।

पार्थ सोनी

भारतीय खाना, इसके विविध रंग, स्वाद और खुशबू के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। हमारे यहाँ हर राज्य का अपना खास खाना होता है। भारतीय खाने में मसालों का उपयोग बहुत होता है जो स्वाद और सेहत दोनों के लिए अच्छे होते हैं। यह ख़ाना बहुत संतुलित और पौष्टिक तत्वों से भी युक्त होता है। त्योहारों पर खास व्यंजन बनते हैं जैसे कि दीवाली पर मिठाइयाँ और होली पर गुजिया। इस तरह, भारतीय खाना न केवल हमारे स्वाद का, बल्कि हमारी संस्कृति और परम्पराओं का भी हिस्सा है। यह हमें एकजुट करता है और पूरे विश्व को हमारी विविधता और आतिथ्य का परिचय देता है।

निकिता चावला

आज मैं आपको मेरी मनपसन्द चाट गोल गप्पे के बारे में बताऊँगी। गोल गप्पे को पानी पूरी और पुचका भी कहते हैं। यह भारत में बहुत प्रचलित चाट है। ये हर गली और सड़क पर मिलते हैं। ये बड़े और बच्चों सब को ही बेहद पसंद है। मुझे मीठे और खट्टे पानी वाले गोल गप्पे पसंद हैं, आपको कौन से पसंद हैं?

समायरा बिनॉय

अप्पम और कडला करी केरल का लोकप्रिय व्यंजन है। अप्पम चावल और नारियल को पीस कर खमन उठा कर

बनाते हैं। ये थोड़ा मीठा होता है। कडला करी काले चने की मसालेदार सब्जी है | यह बहुत स्वादिष्ट होता है, और बहुत पौष्टिक भी है।

इपशिता चौधरी

पोहा को पारम्परिक तरीके से मूँगफली, कढ़ी पत्ते, प्याज, आलू और सब्जियों के साथ या चपटे चावल से तैयार चिवड़ा के रूप में तैयार किया जा सकता है, जिसे शाम के नाश्ते के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इसे अधिक पौष्टिक, स्वादिष्ट और पेट भरने वाला बनाने के लिए इसमें और सब्जियाँ मिलानी चाहिए। पोहा स्वस्थ कार्बोहाइड्रेट (७० प्रतिशत) का एक समृद्ध स्रोत है। इसके अतिरिक्त पोहा एक अच्छा प्रोबायोटिक है और आंत को स्वस्थ रखने में मदद कर सकता है।

जिया सिंह

क्या आप जानते हैं कि खिचड़ी अपनी साधारण सामग्री जैसे दाल और चावल के लिए प्रसिद्ध है? खिचड़ी स्वाद से ज्यादा फायदेमंद होती है क्योंकि यह आपकी सेहत और वजन घटाने के लिए अच्छी होती है। यह स्वादिष्ट व्यंजन सबसे पहले लगभग २००० वर्ष पहले महाराष्ट्र में बनाया गया था।

नंदिनी यादव

इडली दक्षिण भारत का लोक प्रिय नाश्ता है। इसे चावल और उरद से बनाया जाता है। इसे बनाने में तेल-मसाले की ज़रूरत नहीं पड़ती, इसलिए इसे पचाना भी आसान होता है, और इसमें प्रोटीन भी होता है। इडली सेहत के लिए बहुत अच्छी है। इडली को बच्चे और बूढ़े सब खा सकते हैं।

अनिरुद्ध गुरुप्रसाद

दक्षिण भारत के सबसे प्रमुख त्यौहार में एक मकर संक्रांति है। पोंगल एक लोकप्रिय दक्षिण भारतीय भोजन है जो चावल और मूंग दाल से बनाया जाता है, जिसमें घी, कढ़ी पत्ता, काली मिर्च, अदरक, जीरा, और हींग का तड़का लगाया जाता है। पोंगल प्रोटीन से भरपूर है और स्वास्थ्यवर्धक है। पोंगल को मंदिर में भी नैवेद्य के रूप में देवताओं को चढ़ाया जाता है।

राही गोहिल

ढोकला एक लोकप्रिय गुजराती व्यंजन है। लोग इसे स्नैक्स या नाश्ते के तौर पर खाते हैं। इसे बनाने के लिए हमें बेसन और पानी की जरूरत होती है। इसे भाप में पकाकर बनाया जाता है जो इसे बहुत स्वास्थ्यवर्धक बनाता है। बेसन चने से बनता है जिसमें प्रोटीन, विटामिन बी, सी और आयरन बहुत अधिक मात्रा में होता है। खमीर प्रक्रिया इसे आंत और प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए बहुत अच्छा बनाती है। ढोकला न केवल स्वादिष्ट है बल्कि पोषण से भी भरपूर है।

सियोना सारंगी

आज हम खीर में मौजूद पोषक तत्वों के बारे में जानेंगे | भारत के पूर्वी भाग उड़ीसा राज्य में मुख्यतः खीर बनाई जाती है। खीर पानी, दूध, चीनी, चावल, काजू, बादाम, इलायची पाउडर और किशमिश से बनाई जाती है | खीर में कई विटामिन होते हैं जैसे विटामिन ए, विटामिन बी - थियामिन, राइबोफ्लेविन, नियासिन। खीर प्राकृतिक रूप से मीठी भी होती है और इसका पेट पर ठंडा प्रभाव पड़ता है, यही कारण है कि लोग इसे गर्मियों के दौरान खाते हैं। खीर में मौजूद दूध में प्रोटीन और कैल्शियम होता है जो इसे और भी सेहतमंद बनाता है।

एवॉन हिन्दी पाठशाला - मध्यमा-३

भारत का प्राचीन गौरव

मेरा नाम सोहम अरोड़ा है। मैं १२ वर्ष का छठवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैं वेस्ट हार्टफोर्ड, क्नैक्टिकट में रहता हूँ। मैं पिछले ४ वर्ष से हिंदी सीख रहा हूँ। मैंने अब तक की अपनी शैक्षिक यात्रा का आनंद लिया है और मुझे द्विभाषी होने पर गर्व है।

भारत दक्षिण एशिया का एक देश है। "इंडिया" नाम सिंधु नदी से आया है। भारतीय उपमहाद्वीप का इतिहास २५०,००० वर्ष से अधिक पुराना है। इस प्रकार यह इस ग्रह पर सबसे पुराने बसे हुए क्षेत्रों में से एक था। सिंधु घाटी सभ्यता (७०००-६०० ईसा पूर्व) प्राचीन विश्व की महानतम सभ्यताओं में से एक थी।

भारत की पहली सभ्यता हड़प्पा सभ्यता थी, जो सिंधु नदी घाटी के किनारे विकसित हुई थी। पुरातत्वविदों का मानना है कि हड़प्पावासी २३०० और १७०० ईसा पूर्व के बीच विकसित हुए थे।

सिंधु घाटी का प्रत्येक शहर सुनियोजित था। मोहनजोदड़ो हड़प्पा सभ्यता का प्रमुख शहर था। यह विश्व के चार महान धर्मों - हिंदू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म का जन्मस्थान है। भारत में वैदिक परंपरा की शुरुआत, जो आज भी प्रचलित है, बालाथल जैसे प्राचीन स्थलों के मूल निवासियों और उनके बीच इस क्षेत्र में आए आर्य प्रवासियों की संस्कृति के मिश्रण से मानी जा सकती है। इसका प्रारम्भ १५०० – ५०० ईसा पूर्व हुआ, जिसके दौरान वेदों के नाम से जाने वाले हिंदू धर्मग्रंथों को लिखित रूप दिया गया।

इस काल के शहर आयताकार ग्रिड के अनुसार निर्मित थे और मिट्टी, ईंटों से बनाए गए थे। इस काल के विकसित स्थान मोहनजोडेरो और हडप्पा थे। वर्तमान में ये शहर पाकिस्तान का हिस्सा हैं। हड़प्पा की इमारतें गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो गई थीं, लेकिन मोहनजोडेरो को बेहतर ढंग से संरक्षित किया गया था क्योंकि यह १९२२ तक इसका अधिकतर भाग पृथ्वी के नीचे दबा हुआ था। प्राचीन भारत के लोगों के आविष्कारों में आधुनिक जीवन के कई पहलू सम्मिलित हैं, जिनमें फ्लश शौचालय, जल निकासी और सीवर प्रणाली, सार्वजनिक पूल, गणित, पशु चिकित्सा विज्ञान, प्लास्टिक सर्जरी, बोर्ड गेम, योग और ध्यान शामिल हैं।

Excavation Site at Mohenjo-daro
Grjatoi (CC BY-NC-SA)

प्राचीन भारत के आधुनिक विश्व में अनेक योगदान हैं, उल्लेखनीय हैं: दशमलव प्रणाली, शून्य का आविष्कार, गणित, व्याकरण, आयुर्वेद, खगोल विज़ान और योग के मूलभूत तत्व प्रसिद्ध हैं।

यह तो प्राचीन भारत के रहस्यों को उजागर करने की शुरुआत है। मुझे लगता है कि सतह के नीचे एक और ब्रह्मांड है, जैसा कि ऊपर खोजा गया है, और सामने आने की प्रतीक्षा में है।

प्राचीन भारत का इतिहास और संस्कृति

मेरा नाम सान्वी बिस्वाल है। मैं मध्यमा-३ कक्षा की छात्रा हूँ। अपने खाली समय में मुझे खेल खेलना और संगीत सुनना पसंद है। मैं एक उत्साही पाठक भी हूँ और मुझे किताबें पढ़ना अच्छा लगता है। मीनल जी हमारी कक्षा शिक्षिका हैं। हमें उनसे बहुत सी नई चीजें सीखने को मिलती हैं। इस वर्ष भारतीय इतिहास के बारे में पता चला। मैं भारत के प्राचीन गौरव के बारे में एक छोटा सा लेख प्रस्तुत कर रही हूँ।

प्राचीन भारत की सांस्कृतिक और शिक्षण धरोहर में विज्ञान, गणित, दर्शन, कला और शासन में अग्रणी था। इस काल में भारत में बहुत सारे आविष्कार हुए जिसमें गणित में शून्य के आविष्कार से लेकर वेदों और उपनिषदों जैसे प्राचीन ग्रंथों के गहन ज्ञान तक की उपलब्धियों का एक समृद्ध कोष शामिल हैं। भारतीय विरासत एक उल्लेखनीय बौद्धिक और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है, जैसे,

१. सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग ३३००-१३०० ईसा पूर्व) उन्नत शहरी नियोजन, जल निकासी प्रणालियों और एक लिपि के साथ समृद्ध शहरी केंद्र था, जिन्हें अभी तक पूरी तरह से समझा जाना बाकी है।

२. वैदिक काल (लगभग १५००-५०० ईसा पूर्व), वेदों और उपनिषदों के रूप में समृद्ध साहित्यिक परम्पराएँ, जो भारतीय संस्कृति की दार्शनिक और आध्यात्मिक नींव को आकार देती हैं।

३. मौर्य और गुप्त साम्राज्य (३२२ ईसा पूर्व - ५५० ईस्वी), कला, साहित्य और विज्ञान में उपलब्धियों द्वारा चिह्नित स्वर्ण युग, अशोक के अनुकरणीय शिलालेख।

४. बौद्ध धर्म और जैन धर्म, प्रभावशाली दार्शनिक और नैतिक शिक्षाओं का उद्भव, क्षेत्र के आध्यात्मिक परिदृश्य में योगदान।

५. शास्त्रीय कला और वास्तुकला, मंदिर की वास्तुकला (जैसे, खजुराहो, एलोरा और अजंता) और शास्त्रीय नृत्य रूप (जैसे, भरतनाट्यम, ओडिसी) भारत की साँस्कृतिक समृद्धि को प्रदर्शित करते हैं।

६. चिकित्सा एवं आयुर्वेद में चिकित्सा ज्ञान के संकलन सहित अग्रणी चिकित्सा ग्रंथ, जो आयुर्वेद के समग्र दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हैं।

७. व्यापार एवं साँस्कृतिक आदान-प्रदान - सिल्क रोड के साथ भारत की रणनीतिक स्थिति ने जीवंत व्यापार की सुविधा प्रदान की, जिससे दक्षिण पूर्व एशिया तक के क्षेत्रों के साथ साँस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला।

८. शून्य और दशमलव प्रणाली का आविष्कार, गणित में मौलिक योगदान, जिसमें शून्य का आविष्कार और दशमलव अंक प्रणाली का विकास सम्मिलित है।

९. महान विचारक और विद्वान, आर्यभट्ट, चाणक्य और कालिदास जैसे विद्वान जिन्होंने खगोल विज्ञान, राजनीति विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

१०. विविध धार्मिक परम्परायें, विभिन्न धार्मिक विश्वासों का सह-अस्तित्व, जिससे विविध आध्यात्मिक प्रथाओं और दर्शनों का संवाद होता है।

११. ताजमहल जैसे वास्तुशिल्प चमत्कार और नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय भारतीय सभ्यता की सूक्ष्मता और रचनात्मकता को और अधिक दर्शाते हैं।

भारत की महिमा केवल उसके अतीत का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि उसके वर्तमान के विकास की भी है। यह एक राष्ट्र है जो अपने समृद्ध इतिहास, विविध संस्कृति, गहन दर्शन और वैज्ञानिक उन्नयन के साथ आदर्श एकता के सार को वास्तव में दर्शाता है। जय हिन्द!!

भारत का आर्थिक विकास और नवाचार

मेरा नाम ध्रुवी निहलानी है। मैं एवोन हिंदी पाठशाला से हूँ और मैं मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मैं ११ वर्ष की हूँ और मुझे पुस्तकें पढ़ना और वायलिन बजाना पसंद है। इस वर्ष एवोन हिंदी स्कूल में हमारी शिक्षिका श्रीमती मीनल गर्ग हैं। इस वर्ष वे हमें व्याकरण का सही उपयोग और उच्चारण का महत्व सिखा रही हैं। इस निबंध में मैंने इस बारे में अपने विचार साझा किए हैं कि भारत एक अग्रणी देश क्यों बन रहा है ।

भारत कई कारणों से अग्रणी देश बन रहा है, उनमें से एक उनकी अर्थव्यवस्था है। भारत अब दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, और दुनिया में सबसे तेजी से उन्नति होने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। दूसरा कारण भारत की सेना है। भारत को दुनिया की चौथी सबसे मजबूत सेना का स्थान दिया गया है, और कहा गया है कि जून २०२३ तक भारत की उपलब्ध युवा शक्ति ६५३ मिलियन से अधिक थी, जो देश की आबादी का ४७% थी। कुल मिलाकर, भारत एक शक्तिशाली देश होने के मामले में १२वें स्थान पर है।

भारत एक अग्रणी देश क्यों बन रहा है, इसके और भी कई कारण हैं, उनमें से कुछ हैं कि कैसे भारत दुनिया में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने में अग्रणी आवाज उठाता है, भारत में दुनिया के सबसे अधिक स्वास्थ्यप्रद व्यंजन हैं, भारत शिक्षा में ३२वें स्थान पर है, भारत कुल घरेलू उत्पाद में ५वें स्थान पर है, और सबसे महत्वपूर्ण में से एक, भारत के पास एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविध परम्पराएँ हैं। यही कारण है कि मुझे लगता है कि भारत अग्रणी देशों में से एक बन रहा है।

भारत के सुंदर मंदिर

मनस्विनी गोदूपल्ली, मध्यमा-३, ज़र्सी सिटी

हमारा भारत देश अति पुरातन संस्कृति और वास्तुकला के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। इन मंदिरों में की गई नक्काशी हमारे हिंदू पुराणों और धर्मों का प्रतिनिधित्व करती है। मधुरा मीनाक्षी, रामेश्वरम, काशी विश्वनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ और कई अन्य मंदिर दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं और उनके भक्त दुनिया भर से आते हैं।

तमिलनाडु में मधुरा मीनाक्षी मंदिर की दीवारों पर सुंदरेश्वर के साथ मीनाक्षी अम्मन विवाह की तस्वीरें हैं। उन चित्रों को देखना और देवी की कहानी को जानना एक वास्तविक सुंदरता है। मंदिर की नक्काशी और पेंटिंग कला और वास्तुकला के क्षेत्र में चोल और पांड्य जैसे भारत पर शासन करने वाले राजाओं की रुचि को दर्शाती हैं। हालाँकि हर दशहरा उत्सव के लिए मंदिर का नवीनीकरण और रंग-रोगन किया जाता है, लेकिन इसकी पूरी सुंदरता इसकी पुरानी और ठोस संरचनाओं में बनी रहती है जो हजारों साल पहले बनाई गई थीं।

ASTRO DEVAM
Science-Spirituality-Compassion

MEET ACHARY KALKI KRISHNAN JI

Internationally renowned Vastu Expert Achary Kalki Krishnan Ji was honored with the "Best Vastu Consultant of India" award by acclaimed actress Poonam Dhillon. With over 30 years of experience serving individuals and major corporations like Infosys, DLF, and Medanta, his expertise extends across more than 100 countries.

THE BEST VASTU CONSULTANT OF INDIA

ASTRO DEVAM
Science-Spirituality-Compassion

Astro Devam is renowned worldwide for unmatched services in Astrology, Vastu Shastra, Numerology and Vedic Yagya. It offers Real Rudrakshas, Gemstones, Original Parad products and other spiritual products.

ACHARYA ANITA BARANWAL JI

Astrologer Anita Baranwal Ji has 30 years of teaching experience and a Master's degree in astrology and her expertise positions her among the world's elite astrologers. Book a Consultation with her.

Avail Facility of
DISTANCE VASTU

Get Answers to Your Problems with
ONLINE ASTROLOGY CONSULTATION

OUR SERVICES

- Numerology
- Vedic Yagya & Pooja
- Vedic Astrology
- Vastu Solutions

CORPORATE SERVICES

Scan the QR Code to explore

OUR BEST PRODUCTS FOR SPIRITUAL WELL-BEING

REAL RUDRAKSHAS

ORIGINAL PARAD PRODUCTS

GEMSTONES

5 Lakh+ Satisfied Customers in More than 120+ Countries.

CALL US +91-9034242357

astro@astrodevam.com

www.AstroDevam.com

प्लेंसबोरो हिन्दी पाठशाला - मध्यमा-२

शिक्षिकाएँ- अल्पना भरथुआर व सीमा वशिष्ट

प्रवासी भारतीय

मौलिका सक्सेना

प्रवासी भारतीय उन भारतीय लोगों को कहा जाता है जो रोजगार, व्यापार, शिक्षा या किसी और कारण से अपनी जन्मभूमि छोड़ देते हैं और संसार में दूसरी जगहों में रहकर काम करते हैं। भारतीय प्रवासी ११० से अधिक देशों में फैले हुए हैं। आज प्रवासी भारतीय दिवस पूरे देश में ९ जनवरी को मनाया जाता है। प्रवासी भारतीय विदेशों में रहकर भी भारत के उद्योगों, शिक्षा, इन्फ्रास्ट्रक्चर और फ़िल्म जगत में निवेश करते हैं, इसलिए भारत सरकार भारत की अर्थव्यवस्था में प्रवासी भारतीयों के महत्व को समझती है।

भारतीय व्यंजनों का वैश्विक प्रभाव

प्रथम शर्मा

मेरा नाम प्रथम है, और मैं आपको भारतीय व्यंजनों और दुनिया भर में इनके प्रभाव के बारे में बताने जा रहा हूँ। भारतीय व्यंजनों का वैश्विक प्रभाव बहुत गहरा है और यह मज़ेदार स्वाद का एक प्रतीक है। लंबे समय से भारत से विभिन्न प्रकार के मसाले, अनाज और फसलें दुनिया भर में निर्यात की जाती रही हैं। विभिन्न देशों में भारतीय भोजन का आनंद लिया जाता है और यह एक दूसरे के साथ अच्छे संबंध बनाने का एक माध्यम है। सांस्कृतिक विविधता के साथ -साथ वैश्विक भाईचारे के प्रतीक भारतीय व्यंजन बेहद लोकप्रिय और महत्वपूर्ण हैं।

आर्थिक विकास और नवाचार

आहना जोषी

पिछले पाँच सालों में भारत ने सोलर एनर्जी का उपयोग और सोलर परियोजनाएँ बनाई हैं। पवन और जल ऊर्जा का भी उपयोग किया जा सकता है। दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों में प्रदूषण कम करने के लिए प्रदूषणरहित कार का निर्माण करना चाहिए। इसके लिए कार की छत पर सोलर पैनल और कार के पीछे ब्लेड पवन टरबाइन का उपयोग कर सकते हैं। इस तरह से कार दिन और रात दोनों समय चार्ज होगी। इससे स्वच्छ, हरा-भरा और सुंदर भारत बनेगा।

मेक इन इंडिया पहल

माहिका सक्सेना

"मेक इन इंडिया" को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने २०१४ में आरंभ किया था। इसके द्वारा उद्योगों को बढ़ावा और प्रक्रिया को आसान करने का प्रयास किया गया है। 'मेक इन इंडिया' के अंदर मैन्युफैक्चरिंग, इन्फ्रास्ट्रक्चर और आई-टी सेवाओं को सुलभ बनाया जा रहा है। मेक इन इंडिया भारत में निवेश और रोजगार के नए दरवाजे खोल रहा है। देश-विदेश के लोग इसका भरपूर लाभ उठा रहे हैं।

भारतीय व्यंजनों का वैश्विक प्रभाव

रेवांत पांडेय

भारत की सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक विविधता की वजह से भारतीय व्यंजनों के बहुत से प्रकार हैं। हर राज्य में अपने विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं। विदेशों में भी भारतीय व्यंजन इसी विभिन्नता की वजह से अपनी जगह बना रहे हैं। ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, फ़्रांस जैसे देशों में समोसा, आम की लस्सी, पनीर बटर मसाला, पालक पनीर और बिरियानी ने अपनी जगह बहुत ही अच्छी तरह बना ली है। ब्रिटेन में अनेक प्रकार के चावल के व्यंजन भी बहुत पसंद किए जाते हैं। यूरोप में पंजाबी मूल के व्यंजन मलाई कोफ़्ता, दाल मखनी सभी के दिल में अपनी जगह बनाने में सफल रहे हैं। छोले-भटूरे, डोसा, पनीर के व्यंजन आदि को कनाडा में बहुत पसंद किया जाता है। २०२२ में एक सर्वे में भारतीय व्यंजन विश्व में ११ वें स्थान पर हैं। खिचड़ी को सबसे स्वास्थ्यवर्धक खाने के रूप में स्थान मिला है।

भारतीय साहित्य एवं काव्य का योगदान

आरव जैन

महात्मा गाँधी एक बहुत प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने एक पुस्तक लिखी जो उनकी आत्मकथा है और जिस का नाम "સત્યના પ્રયોગો અથવા આત્મકથા" है। यह पुस्तक १९२७ में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक में महात्मा गांधी ने अहिंसा का प्रचार किया। इस पुस्तक ने विश्व को सिखाया कि हिंसा के बिना भी समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। इस पुस्तक के कुछ महत्वपूर्ण अंश हैं:

"सत्य ही ईश्वर है।"

"अहिंसा ही सबसे बड़ा शस्त्र है।"

"सत्याग्रह ही सच्चा मार्ग है।"

यह एक प्रेरणादायक पुस्तक है जो सभी को पढ़नी चाहिए। यह पुस्तक हमें सिखाती है कि कैसे हम एक बेहतर जीवन जी सकते हैं और कैसे हम दुनिया को एक बेहतर जगह बना सकते हैं।

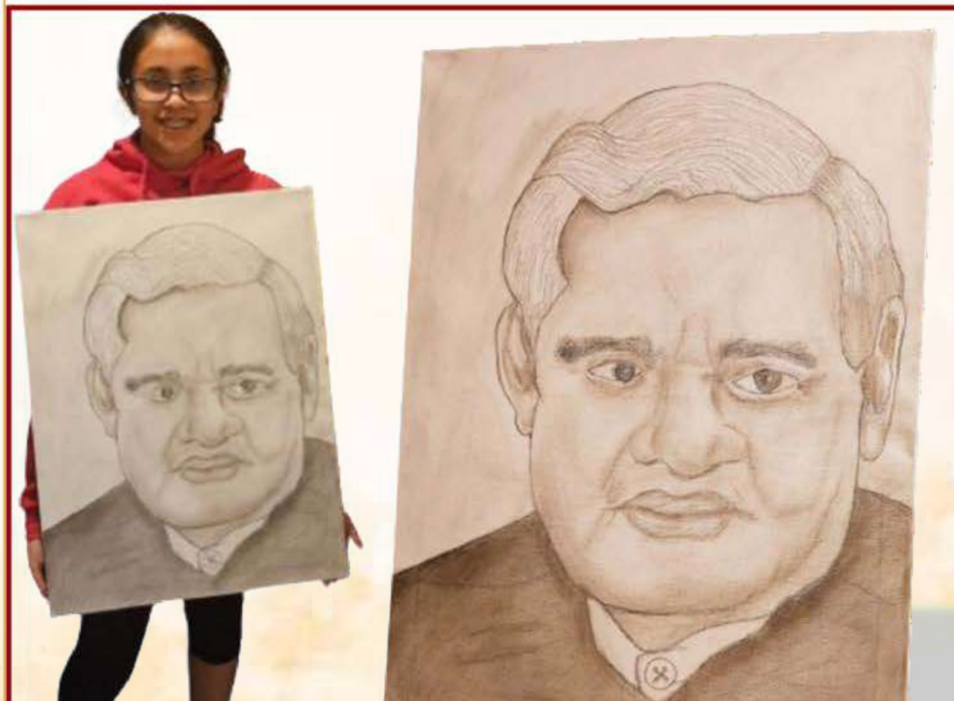

यह चित्र अटल बिहारी वाजपेयी जी की १००वें जयंती वर्ष के अवसर पर बनाया गया।

आशिता नलावडे
मध्यमा-३, चेरी हिल

वंदना वर्मा

भारत देश की संस्कृति जितनी रोचक है, उतनी ही रोचक हैं यहाँ के राज्यों की पारम्परिक पोशाकें

चेरी हिल, मध्यमा-१

वर्षा बांगड़

ओडिशा में महिलाएँ साड़ी पहनती हैं। उड़ीसा की साड़ियों पर हिंदू पवित्र लेखों, विशेष रूप से कृष्ण पर केंद्रित लेखों का भारी प्रभाव पड़ा है। धोती पारम्परिक ओडिशा का परिधान है जो कई जातियों के पुरुषों द्वारा पहना जाता है। यह सफेद सूती कपड़े से बना है, इसमें एक खूबसूरत ईंट के रंग का बॉर्डर है। ओडिशा में पुरुष संबलपुरी पहनते हैं, जो सामान्य कुर्ते का एक छोटा सा रूप है।

अनवी दास

अर्जुन नलावड़

महाराष्ट्र, जो सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है, की पारम्परिक पोशाक उसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। महाराष्ट्र में पुरुष धोती पहनते हैं, जो सम्मान और गरिमा का प्रतीक है, कुर्ता और फेटा भी पहनते हैं जो प्रतिष्ठा का प्रतीक है। महिलाऐं ९-गज लंबी साड़ी पहनती हैं, जिसे नौवारी साड़ी कहा जाता है जो महाराष्ट्रीयन महिलाओं को सम्बोधित करता है। महाराष्ट्र के आभूषणों का बहुत बड़ा महत्व है, चूड़ियाँ, झुमके और हार महिलाएँ पहनती हैं, जो सुंदरता का प्रतीक हैं।

पंजाब में पुरुषों के लिए पारम्परिक पोशाक 'पंजाबी कुर्ता' और 'तहमत' है, विशेष रूप से लोकप्रिय मुक्तसरी शैली, जिसे आधुनिक पंजाब में कुर्ता और पायजामा द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है। महिलाओं के लिए पोशाक पंजाबी सलवार सूट है जिसने पारंपरिक पंजाबी घाघरा की जगह ले ली है। महिलाओं की पोशाक में तीन प्राथमिक तत्व होते हैं: कमीज (अंगरखा), सलवार (बैगी पतलून), और दुपट्टा।

विहान गिरधर

प्रिशा परमार

गुजरात में महिलायें चनिया चोली पहनती हैं। इस पोशाक को नवरात्रि, शादी और पूजा में पहना जाता है। चनिया चोली में ब्लाउज़, घागरा और दुपट्टा होता है। चनिया चोली में बहुत सारे रंग और चमकीली सजावटें लगायीं जाती हैं। इनमें मोती, काँच, लटकन और धाग़ों से आकृतियाँ बनाकर इनको सजाया जाता है। पोशाक के साथ महिलायें पैरों में पायल, हाथों में चूड़ियाँ, माथे में टीका, गले में माला और कानों में झुमके पहनती हैं। पुरुष धोती और कुर्ता पहनते हैं।

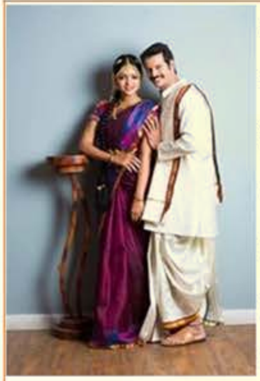

भारत के दक्षिणी राज्य आंध्र प्रदेश में महिलाएं अलग-अलग रंगों की गोटेदार साड़ी पहनती हैं और त्योहारों के दिन साड़ी के ऊपर कमरबंद पहनती हैं। आंध्र प्रदेश में युवा लड़कियाँ लंगा वोनी पहनती हैं। लंगा वोनी में ब्लाउज और लंबे घाघरे के साथ दुपट्टा लिया जाता है। आंध्र प्रदेश में महिलाएं सोने के आभूषण भी पहनती हैं, जिसमें कसुलापेरु (सिक्के का हार), गुट्टापुसालू (मोती का हार), और वड्डनम (कमरबंद) प्रसिद्ध हैं। पुरुषों के लिए आंध्र प्रदेश की पारम्परिक पोशाक धोती और कुर्ता है। वे लुंगी और शर्ट भी पहनते हैं। शुभ कार्यों पर कंधे पर छोटी धोती डाली जाती है।

ईशान पुरिणी

अनिका अग्रवाल

उत्तर प्रदेश की महिलाओं की पारम्परिक पोशाक साड़ी-ब्लाउज या सलवार-कमीज है और पुरुष शर्ट-पैंट, धोती कुर्ता या कुर्ता पायजामा पहनते हैं। पुरुष सिर पर पगड़ी या टोपी भी पहनते हैं। कुछ उत्सव के अवसरों पर पुरुष शेरवानी पहनते हैं और महिलाएँ लहंगा चोली पहनती हैं जिसमें ब्लाउज और एक लंबा दुपट्टा होता है। वे खुद को सोने की चेन, झुमके, हार, अंगूठियाँ, चूड़ियाँ, और पायल, आदि आभूषण से भी सजाती हैं। विवाहित महिलाएं सिन्दूर, बिंदी, मंगलसूत्र और चूड़ियों से सजती हैं।

राजस्थानी पोशाकें राजस्थान की समृद्ध संस्कृति का प्रतीक हैं। राजस्थान की पारम्परिक पोशाकें महिलाओं के लिए रंगीन घाघरा-चोली और ओढ़नी हैं। पुरुष धोती और अंगरखा पहनते हैं। साथ ही सर पर रंगीन पगड़ी भी होती है। पैरों में लोग आरामदायक जूती या मोजरी पहनते हैं।

विराट देवरिया

अद्वय अदलखा

बिहार में पुरुषों की राजकीय पोशाक कुर्ता पायजामा है। प्रायः कुर्ता पायजामा रेशम या सूती कपड़े से बनता है। यह पोशाक रोज़ाना भी पहना जाता है और विशेष अवसर जैसे शादी और त्योहारों में भी पहना जाता है। बहुत लोग कुर्ते में सिलाई-कड़ाई भी पसंद करते हैं और बहुत लोग नेहरू जैकेट के साथ पहनते हैं। बिहार की महिलाओं की मुख्य पोशाक साड़ी है।

कर्नाटक में अधिकतर पुरुष लुंगी पहनते हैं। पूजा के दौरान वे लुंगी या धोती पहनते हैं, साथ ही रेशम या सूती से बना कुर्ता और अंगवस्त्र पहनते हैं। महिलाएं आमतौर पर रेशम की साड़ियाँ पहनती हैं। कभी-कभी पूजा के लिए वे धोती के रूप में साड़ी पहनती हैं। वे बिंदी, मंगलसूत्र, हार, नथनी, चूड़ियाँ, पायल, अंगूठियाँ, बिछिया, झुमका, कमरबंद, बाजूबंद और फूल पहनती हैं।

साईतेज वरनेकर

ऑनलाइन पाठशाला

मध्यमा-१

मेक इन इंडिया

विवान गणेश पवार

नमस्ते, मेरा नाम विवान गणेश पवार है। मैं मैडिसन, विस्कॉन्सिन में रहता हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ रहा हूँ। मेरे शौक तैराकी, पुस्तकें पढ़ना और अपने छोटे भाई के साथ खेलना हैं। मैं "मेक इन इंडिया" पहल के बारे में लिखूंगा।

मेक इन इंडिया पहल की शुरुआत २५ सितंबर २०१४ को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा की गई थी। २०१४ में भारतीय अर्थव्यवस्था उस दशक के सबसे निचले स्तर पर थी। मेक इन इंडिया को भारतीय अर्थव्यवस्था और बुनियादी ढाँचे के उत्थान के लिए लॉन्च किया गया था। इस पहल का प्रतीक घूमने वाले गियर और पहियों वाला एक शाही शेर था।

मेक इन इंडिया पहल चार स्तंभों पर आधारित है, जो भारत में उद्यमिता को बढ़ावा देते हैं। चार स्तंभ हैं नई मानसिकता, नए क्षेत्र, नया बुनियादी ढाँचा और नई प्रक्रियाएँ।

नई मानसिकता: मेक इन इंडिया के अनुसार उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व व्यवसाय करने में आसानी है।

नए क्षेत्र: मेक इन इंडिया पहल ने पच्चीस विनिर्माण, बुनियादी ढाँचे और सेवा क्षेत्रों की पहचान की है।

नया बुनियादी ढाँचा: औद्योगिक समूहों में बुनियादी ढाँचे के आधुनिकीकरण से मौजूदा बुनियादी ढाँचे को मजबूती मिलेगी।

नई प्रक्रियाएँ: सरकार आर्थिक विकास में उद्योग जगत के साथ साझेदारी करेगी।

इस पहल के विनिर्माण वृद्धि में प्रति वर्ष १२%-१४% की वृद्धि, विनिर्माण क्षेत्र में १०० मिलियन नौकरियों का सृजन, और विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी में २५% की वृद्धि ये सभी लक्ष्य थे, जिन्हें मेक इन इंडिया ने २०२२ तक हासिल करने की योजना बनाई थी। इस पहल के परिणामस्वरूप, हाल के इतिहास में किसी राष्ट्र द्वारा की गई सबसे बड़ी विनिर्माण पहल का रोड मैप तैयार हुआ। इस सहयोगी मॉडल को भारत के वैश्विक साझेदारों जैसे कि अमेरिका को सम्मिलित करने के लिए भी सफलतापूर्वक विस्तारित किया गया। हालाँकि नतीजे उम्मीद से जल्दी आए। सितंबर २०१४ से जून २०१५ तक जापान ने भारत की अर्थव्यवस्था में अपना निवेश लगभग तीन गुना कर दिया। भारत की अर्थव्यवस्था में निवेश करने वाले १८% प्रतिशत देश वैश्विक औसत के मुकाबले भारत की अर्थव्यवस्था के बारे में सकारात्मक महसूस करते हैं। मेक इन इंडिया से न केवल विनिर्माण क्षेत्र, बल्कि अन्य क्षेत्रों को भी बढ़ावा मिला। ५४% विदेशी निवेशक स्वीकार करते हैं कि उन्हें यकीन है कि भारत प्रमुख वैश्विक शक्तियों में से एक बनेगा।

इस पहल के परिणामस्वरूप भारत अब वैश्विक कंपनियों के लिए सिर्फ एक बड़ा बाजार ही नहीं है, बल्कि एक आत्मनिर्भर राष्ट्र भी बन गया है।

भारतीय वेशभूषा और आभूषणों का विकास और भारतीय संस्कृति में इसका महत्व

अनिका गुप्ता

नमस्ते, मेरा नाम अनिका गुप्ता है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. ऑनलाइन पाठशाला में मध्यमा-१ की छात्रा हूँ। मैं अपने परिवार के साथ यू.एस.ए. के वाशिंग्टन प्रदेश के स्पोकेन नगर में रहती हूँ। मुझे गाना, तैरना, घूमना और बागवानी करना पसंद है। मुझे भारतीय संस्कृति पर गर्व है। मैं अपने परिवार के साथ हर त्यौहार हर्ष और उल्लास से मनाती हूँ।

भारतीय वेशभूषा और आभूषण हमारे समाज और संस्कृति की कहानी कहते हैं। हमारी भारतीय सरस्वती-सिन्धु सभ्यता हजारों वर्षों पुरानी है। प्राचीन काल से हम कॉटन, वुल (ऊन), और सिल्क का वस्त्र बनाने में प्रयोग करते आ रहे हैं। पहले मिट्टी से जेवर बनते थे। फिर शंख, कॉपर, सोने, चाँदी, हीरे आदि वस्तुओं का प्रयोग होने लगा। पुरातत्व शास्त्रियों द्वारा खुदाई में हमें अनेक डिज़ाइन, फैब्रिक और इन्हें बनाने के उपकरण मिले हैं। यह अलग बात है कि अब नये मैटेरियल्स, डिज़ाइन और टेक्नोलॉजी आ गयी है।

वेशभूषा और आभूषण महत्त्वपूर्ण उद्योग भी है। प्राचीन समय से भारत से वस्त्र और आभूषण दूसरे देशों में निर्यात किए जाते हैं। इससे विदेशी मुद्रा के साथ दूसरी संस्कृतियों को जानने का अवसर मिलता है।

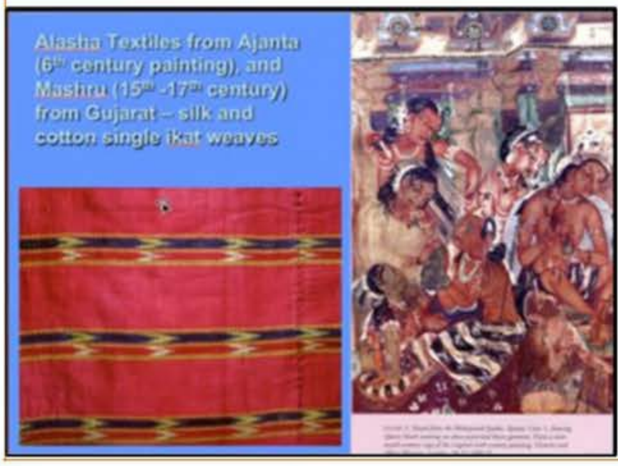

मेक इन इंडिया

नमस्ते, मेरा नाम दक्षा रव्वा है। मैं नॉर्थ कैरोलिना में आठवीं कक्षा में पढ़ रही हूँ। मुझे चित्रकारी करना और टी.वी देखना पसंद है। मैं वॉलीबॉल, बैडमिंटन और टेनिस खेलती हूँ। मेरा पसंदीदा रंग नीला है।

"मेक इन इंडिया" २०१४ में प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया एक सरकारी कार्यक्रम है। मेक इन इंडिया का लोगो एक शेर है जो निर्माण और भारत की शक्ति को दर्शाता है।

"मेक इन इंडिया" योजना का मुख्य लाभ? इससे भारत सरकार को सहायता मिल सकती है:

- **विनिर्माण केंद्र:** "मेक इन इंडिया" पहल अन्य स्थानों पर विनिर्माण इकाइयाँ स्थापित करने में सरकार के अभियानों में मदद करती है और उन्हें विशेष लाभ देती है।
- **आर्थिक विकास:** यह विनिर्माण क्षेत्र में निर्यात की शुरुआत है। इससे हमें अर्थव्यवस्था में सहायता मिलती है।
- **रोजगार:** इससे युवा उद्यमियों को वित्तीय सहायता और नवीन कौशल प्रदान किया जाएगा।
- **वैश्विक निवेश:** कई देशों के पास भारतीय अभियानों में निवेश करने का अवसर है।
- **नौकरियाँ:** वे इस ऑपरेशन के जरिए देश में लोगों के लिए वस्तुओं की माँग बढ़ाने और आजीविका के विकास के लिए एक करोड़ नौकरियां पैदा करना चाहते हैं।

भारत का प्राचीन गौरव

मेरा नाम तर्जनी पंडित है। मैं १४ वर्ष की छात्रा हूँ। मैं सात वर्षों से भरतनाट्यम् सीख रही हूँ। मुझे चित्रकारी अच्छी लगती है। मुझे गाना भी पसंद है। मेरा पसंदीदा धारावाहिक "तेनाली राम" है।

भारत का प्राचीन इतिहास बहुत गौरवपूर्ण रहा है। भारत की संस्कृति और सभ्यता ने विश्व को विज्ञान, अंक गणित, आकाश शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, खगोल शास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। भारत की सांस्कृतिक धरोहर विश्व को एक प्रकाश स्तम्भ की तरह मार्गदर्शन देने में सक्षम है। भारत के वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवत गीता जैसे ग्रन्थ आज भी विश्व को जीवन जीने का मार्ग दिखाते हैं। भारत की संस्कृति "वसुधैव कुटुंबसकम्" अर्थात सम्पूर्ण विश्व मेरा परिवार है, इस भावना पर आधारित है।

ऐसी गौरवपूर्ण भारतीय सभ्यता का अंश होने पर मुझे अत्यंत गर्व है।

भारत का प्राचीन गौरव

नमस्ते। मेरा नाम शेरिशा जैन है और मैं दस वर्ष की हूँ। मैं मध्यमा – ३ कक्षा में पढ़ती हूँ और पाँच वर्ष से हिंदी यू.एस.ए. में हिंदी सीख रही हूँ। मेरी रुचि चित्र बनाना, तैरना और रस्सी कूदना हैं। मेरा लेख प्राचीन भारत के गौरव के बारे में है। आशा है आपको मेरा लेख पसंद आएगा।

आपने कभी भारत के प्राचीन गौरव के बारे में कुछ सुना है? खैर, अगर आपको पता नहीं तो कोई बात नहीं, क्योंकि मैं आपको भारत के प्राचीन गौरव के बारे में बहुत सी बातें बताने जा रही हूँ।

धर्म

भारत, जिसको वेदों की भूमि के रूप में जाना जाता है, अपने समृद्ध इतिहास पर गर्व करता है। यह हिंदू धर्म, बुद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म का जन्मस्थान था। वेद, पुराण, गीता और रामायण जैसी महान पुस्तकें भारत देश की धरोहर हैं। भारतवर्ष के गौरव से आकर्षित कोलंबस भी भारत की खोज में निकला था। अंग्रेज भी भारत की संपूर्णता को देखकर व्यापार करने आए और धीरे-धीरे भारत में अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। प्राचीन काल में भारत एक महान देश था। पहले लोग इसे सोने की चिड़िया के नाम से सम्बोधित करते थे। सभी प्रकार से यह देश सम्पन्न था। सभी लोग धर्म में विश्वास करते थे। समाज में बुराइयाँ नहीं थीं। यहाँ तक कि लोग अपने घरों में ताला लगाना भी ज़रूरी नहीं समझते थे।

दार्शनिक विरासत

भारत की दर्शनिक विरासत इसके गौरव का एक और पहलू है। भारतीय दर्शन ने जीवन, अध्यात्मिक्ता और नैतिकता पर अपने गहन शिक्षाओं के साथ दुनिया भर के विचारों पर प्रभाव डाला है। वेदांत, बुद्ध धर्म, सिख धर्म और जैन धर्म के दर्शन भारत में उत्पन्न हुए, जिन्होंने देश के बौद्ध परिदर्शन को आकार दिया और वैश्य विचार पद्धतियों को प्रभावित किया। जैसे कि याज्ञवल्क्य प्रारंभिक विचार से जुड़े एक महत्वपूर्ण वैदिक ऋषि हैं। जैन दर्शन का प्रचार तीर्थंकरों, विशेष रूप से पार्श्वनाथ और महावीर भगवान द्वारा किया गया था। बौद्ध दर्शन की स्थापना गौतम बुद्ध ने की थी और सिख दर्शन का विकास गुरु गोविंद सिंह ने किया था।

त्यौहार और संस्कृती

भारत का एक अनोखा गौरव इसके त्यौहार और संस्कृति हैं। यहाँ नियमित अंतराल पर कोने-कोने में उत्सव मनाया जाता है। यही बात भारत को गौरवशाली, अद्वितीय और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाती है।

शिक्षा

प्राचीन काल में भारत की शिक्षा का सितारा भी बहुत ऊँचा था। दूर-दूर से लोग शिक्षा ग्रहण करने भारत आते थे। नालन्दा और तक्षशिला जैसे विश्वविख्यात पुस्तकालय भी भारत की शोभा बढ़ाते थे। स्त्री और पुरुष, समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते थे। भारत में विज्ञान और कलाएँ भी बहुत विकसित थीं। भारत विज्ञान, कला, संस्कृति और सभ्यता, सभी क्षेत्र में सम्पन्न था। भारत में शिक्षा के विभिन्न स्तर होते थे, जैसे प्रारंभिक बचपन की शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा।

भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो अपने समृद्ध इतिहास, विविध संस्कृति और दर्शन से प्रेरित होता रहता है, जो वास्तव में विविधता में एकता का सार प्रस्तुत करता है और गौरव भी प्रदर्शित करता है।

भारतीय वेशभूषा तथा आभूषण

मेरा नाम श्लोक हंपी है। मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और स्टैमफर्ड में रहता हूँ। मैं ऑनलाइन हिंदी पाठशाला में मध्यमा-१ का छात्र हूँ। मुझे क्रिकेट खेलना बहुत पसंद है। मुझे किताबें पढ़ने में भी अत्यंत रुचि है। मुझे अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताना बहुत पसंद है।

भारतीय वेशभूषा और आभूषण भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि को दर्शाते हैं। प्रत्येक भारतीय राज्य अपनी वेशभूषा और आभूषणों की परंपराओं को सँजोए हुए है, जो उस क्षेत्र की संस्कृति, इतिहास और जीवनशैली के प्रतिबिंब हैं। यहाँ मैं कुछ प्रमुख भारतीय वेशभूषा और आभूषणों का विवरण दे रहा हूँ।

वेशभूषा

साड़ी: साड़ी भारतीय महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली एक पारंपरिक पोशाक है। इसे विभिन्न शैलियों में लपेटा/पहना जाता है, और यह विभिन्न प्रकार के कपड़ों और डिज़ाइनों में आती है।

सलवार कमीज़: यह एक और लोकप्रिय पोशाक है जिसमें एक लंबी कुर्ती (कमीज़), पतलून (सलवार) और एक दुपट्टा सम्मिलित होता है। यह पहनावा उत्तरी भारत में बेहद लोकप्रिय है।

लहंगा-चोली: यह एक पारंपरिक वस्त्र है जिसमें एक अंगरखा (चोली) और एक घेरदार लंबा स्कर्ट (लहंगा) होता है। यह मुख्यतः उत्सवों और विवाहों में पहनी जाती है।

धोती और कुर्ता: पुरुषों के लिए धोती और कुर्ता एक पारंपरिक पोशाक है। धोती एक लंबा कपड़ा होता है जिसे पैरों के चारों ओर लपेटा जाता है|

आभूषण

भारतीय आभूषणों का इतिहास और विविधता अत्यंत समृद्ध है, जो इसकी प्राचीन सभ्यता और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है। भारतीय आभूषण विभिन्न प्रकार के धातुओं, रत्नों, डिजाइनों और शिल्प कौशल के साथ बनाए जाते हैं, जिनमें प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अनूठी शैली और परंपरा होती है। आइए भारतीय आभूषणों की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नज़र डालते हैं।

सोने के आभूषण: सोने के आभूषण भारतीय समाज में बहुत लोकप्रिय हैं। ये शुभता, समृद्धि और स्थायित्व का प्रतीक माने जाते हैं। विवाह और अन्य शुभ अवसरों पर सोने के आभूषणों का विशेष महत्व होता है।

चांदी के आभूषण: चांदी भी एक लोकप्रिय धातु है जिसका उपयोग भारतीय आभूषण निर्माण में किया जाता है, विशेषकर पैरों के आभूषण जैसे कि पायल और बिछिया।

हीरे और अन्य रत्नों के आभूषण: भारतीय आभूषण में हीरे, माणिक, पन्ना, नीलम जैसे विभिन्न प्रकार के कीमती और अर्ध-कीमती रतनों का उपयोग होता है। ये आभूषण न केवल सुंदरता को बढ़ाते हैं बल्कि विभिन्न धार्मिक और ज्योतिषीय महत्व भी रखते हैं।

मीनाकारी और कुंदन का काम: मीनाकारी और कुंदन के काम वाले आभूषण भारतीय शिल्प कौशल की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। मीनाकारी में रंगीन डिजाइनों को धातु पर उकेरा जाता है, जबकि कुंदन का काम मूल्यवान पत्थरों को सोने के फ्रेम में जड़ने की एक प्राचीन विधि है।

तो अपने देखा कि किस तरह भारतीय आभूषण पारंपरिक

त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों, विवाह समारोहों और अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर धारण किए जाते हैं। इनका महत्व केवल सौंदर्य शास्त्र तक सीमित नहीं है, बल्कि ये सांस्कृतिक पहचान, पारिवारिक विरासत और व्यक्तिगत ओहदा के प्रतीक भी हैं।

भारतीय वेशभूषा में इतनी विविधता इस देश के विविध सांस्कृतिक ताने-बाने को दर्शाती है। प्रत्येक राज्य की वेशभूषा उसके इतिहास, भूगोल, और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है।

मेरा नाम मानित सेठिया है। मैं छठी कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरा मनपसंद खेल फुटबॉल है। मुझे वायोलिन बजाना भी बहुत अच्छा लगता है।

भारत सम्पन्न संपत्ति के लिए जाना जाता है। भारत की वेशभूषा सारे विश्व में प्रसिद्ध है। स्थानीय संस्कृति, धर्म, जलवायु और भूगोल के भिन्नता के कारण भारत के प्रत्येक क्षेत्र के लोगों के कपड़े भी भिन्न होते हैं। पुरुष कुर्ता, धोती, लुँगी और शेरवानी पहनते हैं। महिलाएं साड़ी, लहंगा, चुन्नी, चोली, और चूड़ीदार पहनती हैं।

भारत के अंतरिक्ष अन्वेषण और कूटनीति

मेरा नाम साई वैष्णवी जाडव है। मैं हिंदी यू.एस.ए. मध्यमा–३ कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं ११ वर्ष की हूँ और छठीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं नॉर्थ कैरोलिना में रहती हूँ।

डॉ. विक्रम अंबालाल साराभाई को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के पिता के रूप में माना जाता है। देश में अंतरिक्ष गतिविधियाँ १९६२ में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (इंकोस्पर) की स्थापना के साथ शुरू हुई थी। डॉ. होमी जहांगीर भाभा ने डॉ. साराभाई के साथ मिलकर भारत में पहले रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन की स्थापना तिरुवनंतपुरम के पास थुम्बा में की थी। भारत का पहला उपग्रह आर्यभट्ट का लॉन्च १९७५ में हुआ था। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का गठन १५ अगस्त, १९६९ को हुआ था। यह भारत की अंतरिक्ष एजेंसी है, और इसका मुख्य उद्देश्य भारत और मानवता के उपयोग के लिए अंतरिक्ष के लाभों को प्राप्त करना है। इसको पूरा करने के लिए इसरो ने संचार, टेलीविजन प्रसारण, मौसम सेवाएँ, अंतरिक्ष नेविगेशन सेवाएँ जैसी मुख्य अंतरिक्ष प्रणालियाँ स्थापित की हैं। डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, भारत के ११वें राष्ट्रपति, इसरो के स्वदेशी सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल के मिशन निर्देशक रहे। इसरो का मुख्यालय बेंगलुरु में है और मुख्य लॉन्चिंग स्टेशन श्रीहरिकोटा में है।

भारत के चंद्रयान-१, २, और ३ मिशन के मुख्य उद्देश्य हैं, चंद्रमा की उत्पत्ति और विकास के बारे में ज्ञान बढ़ाना और चंद्रमा के अंछूए दक्षिण ध्रुव की खोज करना। मंगल ग्रह के लिए मार्स ऑर्बिटर मिशन ने भारत को अंतरग्रहीय मिशन में सफलता प्राप्त करने वाला चौथा देश बना दिया है। इसरो ने विदेशों के लिए करीब ४०० उपग्रहों को लॉन्च किया है और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा में भी कदम बढ़ाया है। इसके परिणामस्वरूप, भारत को अंतरिक्ष क्षेत्र में एक उभरती हुई शक्ति के रूप में देखा जाता है, और यह अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम है।

● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ●

पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ उनहत्तर को स्थापित इसरो, अंतरिक्ष अनुसन्धान, उपग्रह प्रोद्योगिकी और अंतरिक्ष अनवेषण में एक प्रुमख खिलाड़ी के रूप में उभरा है। पिछले कुछ वर्षों में इसरो ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, उनमें से कुछ उदाहरण हैं :

प्रक्षेपण वाहन – पी. एस. एल. वी. (PSLV)और जी. एस. एल. वी. (GSLV) वाहन संचार, नैविगेशन, रिमोट सेंसिंग के लिए उपग्रहों को लाँच करने में सहायक रहें हैं।

चन्द्र मिशन - चंद्रयान - १, बाईस अक्टूबर दो हजार आठ में लाँच किया गया भारत का पहला चन्द्र जाँच मिशन था, जिसने चन्द्रमा की सतह पर पानी के अणु की खोज की। वर्ष दो हजार तेईस में लाँच किए गए चंद्रयान -३ मिशन का उद्देश्य चन्द्रमा के दक्षिण ध्रुव पर उतरना और एक लैंडर और रोवर को तैनात करना था, जो भारत ने सफलतापूर्वक किया और दक्षिण ध्रुव पर पहुँचने वाला दुनिया का पहला देश बना। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो (ISRO) तकनीकी कुशलता और वैज्ञानिक उपलब्धि के प्रतीक के रूप में खड़ा है, जो भारत को दुनिया के विशिष्ट अंतरिक्ष यात्रा करने वाले देशों में रखता है।

रोहन ग्रोवर

भारतीय आर्थिक विकास और नवाचार

मेरा नाम श्रीजा कोटि है। मैं अमेरिका के टेक्सास प्रदेश के ऑब्रे शहर में रहती हूँ और हिन्दी यू.एस.ए. ऑनलाइन स्कूल में माध्यमा-१ की छात्रा हूँ। मैं इस लेख में भारतीय आर्थिक विकास और नवाचार के बारे में बता रही हूँ।

आज हर भारतीय अपने जीवन में आधुनिकता के साथ परंपरा का मिश्रण कर रहे हैं। पूर्वजों से मिले ज्ञान के साथ-साथ नए जमाने की तकनीक को, नवाचार (Innovation) को अपना रहे हैं और अनुसंधान और विकास में भारी निवेश कर रहे हैं। भारत का विकास चीन के निकट होने के कारण भी बड़े पैमाने पर हो रहा है। चीन भारत का सबसे बड़ा निर्यातक है। भारत दुनिया में कपड़े का तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक है। इस व्यापार में भारत का ५००० वर्ष से भी अधिक का समृद्ध इतिहास है। गाँवों में हथकरघा के रूप में छोटी सी शुरुआत से लेकर बड़े पैमाने पर आधुनिक कपड़ा मिलों तक इस उद्योग में बहुत अधिक विकास हुआ है। नवाचार और नई पीढ़ी के उद्यमी होने की हिम्मत ने भी आर्थिक विकास में गति ला दी है।

भारत दुनिया के प्रमुख खाद्य सामानों जैसे गेहूँ और चावल का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। भारत इस समय कई सूखे मेवों, कृषि आधारित कच्चा माल, जैसे कपास और कंद (जड़) फसलों का दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। भारत अपने कपड़ा, कृषि और निर्यात के आधुनिक तरीकों को अपनाकर और नवाचार के नये-नये प्रयोगों के बल पर दिन प्रतिदिन विकास शील और आत्मनिर्भर हो रहा है।

विश्व गुरु की भूमिका और भारत का योगदान

मेरा नाम आरव गाबा है। मैं पार्कवे नॉर्थ हाई स्कूल, सैंट लुईस, मिसौरी में ८वीं कक्षा में पढ़ाई करता हूँ। आज मैं आपको विश्व गुरु की भूमिका और जिम्मेदारियों के बारे में अपनी राय दूँगा।

विश्व गुरु की भूमिका है विभिन्न विषयों में ज्ञान प्रदान करना। विश्व को सामाजिक, सांस्कृतिक, और वैज्ञानिक विषयों की समझ और जागरूकता प्रदान करना। विश्व गुरु की एक महत्वपूर्ण भूमिका है विश्व भर में सभी की सहायता करना। विश्व गुरु की भूमिका है समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन लाना। विश्व गुरु के माध्यम से समाज में नवाचार और सुधार होता है। विश्व गुरु वह होता है जो अपने शिष्यों को सिर्फ पुस्तकों का ज्ञान ही नहीं बाँटता, बल्कि विश्व की अनुभूतियों और संस्कृतियों की शिक्षा भी देता है। मेरी यह चाह है कि भारत एक बार फिर से विश्व गुरु बने। हम मिलकर भारत को एक बार फिर विश्व गुरु बनाएँगे और अपने देश का परचम पूरे विश्व में लहराएँगे।

भारतीय वेशभूषा तथा आभूषण

एडिसन हिन्दी पाठशाला, मध्यमा-१, शिक्षिका/शिक्षक: वीनस जैन एवं लवकेश गोयल

भारत में वस्त्र, जातियों, भूगोल, जलवायु और सांस्कृतिक परंपराओं के आधार पर भिन्न होते हैं। ऐतिहासिक रूप से ये साधारण वस्त्रों से लेकर नृत्य प्रदर्शनों तक के लिए विकसित हुए हैं। शहरी क्षेत्रों में भी पश्चिमी वस्त्र प्रयोग में आ गये हैं और इसे सभी सामाजिक स्तर के लोग एक समान रूप से पहनते हैं। भारत में वस्त्र की विविधता में विभिन्न बुनाई, रंग और कपड़े के माल की विशालता भी दिखाई देती है। भारत में विभिन्न कपड़ों का खास अंदाज़ है। ये कपड़े बहुत रंगीन और सुंदर हैं। स्कूलों में बच्चे वर्दी पहनते हैं। विवाहों में महिलायें साड़ी और पुरुष शेरवानी पहनते है। रंगीन टी-शर्ट और जीन्स लोगों का आम पहनावा है। भारत में पोशाकों का पता सिंधु घाटी के समय से लगाया जा सकता है, जो लगभग २७०० ईसा पूर्व अस्तित्व में थी। इस अवधि में पुरुष और महिलाएँ दोनों कपड़े का टुकड़ा अपने शरीर के चारों ओर लपेटते थे। भारत में प्रत्येक क्षेत्र के अपने अनूठे कपड़े और डिजाइन हैं, जो उन्हें एक दूसरे से अलग बनाते हैं। भारतीय संस्कृति में आभूषणों का महत्वपूर्ण स्थान है, और यह आभूषण-धारकों के जीवन में सौंदर्य और आनंद लाते हैं। साथ ही आभूषणों को भगवान और देवताओं को भी समर्पित किया जाता है। भारतीय संस्कृति में आभूषण और देवताओं के संबंध का अत्यधिक महत्व है। जटिल डिजाइन बनाने के लिए जोहरी कीमती पत्थरों और धातुओं का उपयोग करते हैं। क्या आप जानते हैं कि भारतीय आभूषण परंपरा ५०००-७००० वर्ष पुरानी है। ऐसा कहा जाता है कि विस्तृत डिजाइन वाले और कीमती पत्थरों से जड़े आभूषण महाभारत में भी संगृहीत थे। भारत में आभूषण लोगों के गौरव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। हिन्दू धर्म के अनुसार माता लक्ष्मी को सोने की देवी माना जाता है और यह धन एवं कल्याण का प्रतिनिधित्व करता है। दीपावली जैसे त्योहारों पर हिन्दू समुदाय के लोग देवी लक्ष्मी की पूजा के लिए सोना खरीदते हैं। विवाह के अनेक रीती रियाज़ों में सोने के आभूषण पहने जाते हैं जो कि समृद्धि और सुन्दरता का प्रतीक हैं। इसलिये आभूषण और वेशभूषा भारतीयों के दिलों से कभी नहीं उतरते।

भारत की शिक्षा प्रणाली

नमस्ते, मेरा नाम पार्थ मेहता है। मैं सातवीं कक्षा में हूँ और मेरे बहुत सारे शौक हैं। इनमें से कुछ में क्रिकेट, बास्केटबॉल, गायन और ड्राइंग सम्मिलित हैं। मुझे अपने करीबी लोगों जैसे दोस्तों और परिवार के साथ बाहर जाना भी पसंद है।

भारत में शिक्षा प्रणाली में चार स्तर होते हैं: निम्न प्राथमिक जो ६ से १० वर्ष की आयु के होते हैं, उच्च प्राथमिक जो ११ और १२ वर्ष की आयु के होते हैं, हाई स्कूल जो १३ से १५ वर्ष की आयु के होते हैं, और उच्चतर माध्यमिक जो १७ और १८ वर्ष की आयु के होते हैं। पूरा होने तक हाई स्कूल में छात्र एक सामान्य पाठ्यक्रम का पालन करते हैं, जिसमें मातृभाषा में भिन्नता ही एकमात्र महत्वपूर्ण अंतर है। पूरे देश में छात्रों को तीन भाषाएँ सीखने की आवश्यकता होती है - अंग्रेजी, हिंदी और उनकी मातृभाषा - उन क्षेत्रों को छोड़कर जहाँ हिंदी मातृभाषा है।

भारत की स्कूल प्रणाली में तीन श्रेणियां हैं। उनमें से दो को राष्ट्रीय स्तर पर प्रबंधित किया जाता है, और एक को केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) द्वारा प्रबंधित किया जाता है। मूल रूप से यह उन सरकारी कर्मचारियों के बच्चों के लिए था जो बहुत घूमते हैं। उन्होंने पूरे देश के बड़े शहरों में "केंद्रीय विद्यालय" स्थापित किए। ये स्कूल एक सामान्य कार्यक्रम का पालन करते हैं, इसलिए यदि आप एक स्कूल बदलते हैं, तो लगभग वही चीजें पढ़ाई जाती हैं।

भारतीय माध्यमिक शिक्षा प्रमाणपत्र (आई.सी.एस.ई.) एक अन्य प्रमुख शैक्षिक ढाँचे के रूप में कार्य करता है। शुरुआत में कैम्ब्रिज स्कूल सर्टिफिकेट के विकल्प के रूप में कल्पना की गई। यह विदेशी कैम्ब्रिज स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा को अखिल भारतीय परीक्षा के साथ प्रतिस्थापित करने के उद्देश्य की चर्चा से उभरा। वर्तमान में देश भर में कई निजी स्कूल इस परिषद से संबद्ध हैं, जो मुख्य रूप से समृद्ध पृष्ठभूमि के छात्रों को शिक्षा प्रदान करते हैं।

राष्ट्र में प्रत्येक राज्य अपना स्वयं का शिक्षा विभाग संचालित करता है। प्रत्येक राज्य में आम तौर पर तीन प्रकार के स्कूल होते हैं जो उसके विशिष्ट पाठ्यक्रम में फिट होते हैं। तीसरी श्रेणी में सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान करने वाले स्कूल सम्मिलित हैं। शुरुआत में निजी संगठनों द्वारा स्थापित होने के बावजूद इन स्कूलों को, जिन्हें आमतौर पर सरकारी स्कूल कहा जाता है, कम फीस की सुविधा के लिए अनुदान मिलता है, जिससे आर्थिक रूप से वंचित परिवार अपने बच्चों का दाखिला करा पाते हैं। ऐसे स्कूलों में ट्यूशन फीस आम तौर पर कम होती है।

इसके अतिरिक्त, एक और शिक्षा बोर्ड है जिसे आई.जी.सी.एस.ई. या इंटरनेशनल जनरल सर्टिफिकेट ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन कहा जाता है। यह छात्रों को एक अंग्रेजी सीखने का पाठ्यक्रम प्रदान करता है जो उन्हें बी.टी.ई.सी. स्तर ३ और ए-स्तर पाठ्यक्रम के लिए तैयार करता है। यह जी.सी.ई. ओ-लेवल पर आधारित है। इसे जी.सी.एस.ई. और अन्य अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रम के समकक्ष भी मान्यता प्राप्त है।

भारत - कई मायनों में है विश्व गुरु

नमस्ते, मैं इन्दु श्रीवास्तव, ऑनलाइन हिन्दी पाठशाला की मध्यमा-१ कक्षा को, मृदुभाषी सह-शिक्षिका रचिता पांडेय जी, और कर्मठ युवा स्वयं सेविका उर्वी अखौरी के साथ मिलकर पढ़ाती हूँ। अलग-अलग क्षेत्रों में भारत देश किस रूप में विश्व गुरु है, इस पर हमारी कक्षा के विद्यार्थियों ने लखु लेख और चित्रकला के माध्यम से अपने विचार सामने रखे हैं, जो हम आप सब के लिए यहाँ लेकर आये हैं। आशा है उनका यह प्रयास आपको बेहद सुंदर लगेगा और बहुत पसंद आयेगा।

विश्व गुरु भारत – कोरोना वैक्सीन का दान दाता

सुकृति सरकार: सुकृति सरकार, ह्यूस्टन, टेक्सास में कक्षा ४ में पढ़ती है। सुकृति विश्व संस्कृति और इतिहास के बारे में पढ़ना पसंद करती है। वह ड्रॉइंग और क्राफ्टिंग करना भी पसंद करती है।

कोरोना काल में भारत ने जो समय रहते वैक्सीन बनाई और दुनिया भर में निःशुल्क बाँटी वह एक विश्व गुरु और विश्व का मित्र ही कर सकता है।

विश्व गुरु भारत - अंतरिक्ष में चाँद पर भी नेता

अल्ताफ़ मुहम्मद: नमस्ते! मेरा नाम अल्ताफ़ है और मुझे कार्डबोर्ड से चीज़ें बनाना पसंद है, जैसे कि रेलगाड़ियाँ! मैं १२ वर्ष का हूँ और साउथ विंडसर कनेक्टिकट में टिमोथी एडवर्ड्ज़ मिडिल स्कूल में पढ़ता हूँ। मुझे अंतरिक्ष के बारे में सीखना और किताबें पढ़ना पसंद है। मेरी बहन हानिया भी ।-१ स्तर में सेक्शन C में पढ़ रही है। मैं स्कूल बैंड के लिए बाँसुरी बजाता हूँ। मैं बड़ा होकर इंजीनियर या खगोलशास्त्री (astronomer) बनना चाहता हूँ।

भारत की अंतरिक्ष एजेंसी “इसरो” द्वारा शुरू किया गया चंद्रयान-३ सबसे क्रांतिकारी चंद्र मिशन था। चंद्रयान-मिशन इतना अद्भुत इसलिए था क्योंकि यह अंतरिक्ष में भेजा गया भारत का चाँद पर उपग्रह भेजने का बस तीसरा प्रयास ही था। चंद्रयान-३ के एक महान मिशन होने का एक और कारण यह था कि यह चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरा था। कई अन्य देशों ने यह कोशिश की और असफल रहे लेकिन चंद्रयान-३ अपने कार्य में सफल रहा। भारत ने यह साबित कर दिया कि अंग्रेजों द्वारा आर्थिक चोरी किए जाने के बाद, आर्थिक रूप से पीछे रहने के बाद भी, गुणवान और मेहनती वैज्ञानिक इस अद्भुत उपलब्धि को कम पैसे (लागत) में और समय सीमा में प्राप्त करने में कामयाब रहे।

विश्व गुरु भारत – गुरु परंपरा और विविध व्यंजनों में आदर्श और अग्रणी

संशेथा विजय: मैं मोंटवेल, न्यू जर्सी में ६वीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे चिकित्सा की पढ़ाई करना पसंद है। मेरी रुचि भरतनाट्यम् नृत्य में है और मंदिर में कीर्तन करने में मुझे बहुत आनंद आता है। मैंने ऑनलाइन चित्रकारी करके २ विषयों पर अपने विचार साझा किए हैं - पहला भारत एक विश्व गुरु सदियों से रहा है और दूसरा भारतीय व्यंजन की विविधता! आशा है आप सभी को मेरी आकृतियाँ/चित्रकला पसंद आयेंगी।

गुरु द्रोणाचार्य - गुरु कृपाचार्य, कौरवों की अधर्मता जानने के बाद भी, राजा धृतराष्ट्र के प्रति वफादार रहे और एक शिक्षक एवं योद्धा के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को अंत तक निभाते रहे।

गुरु परशुराम - परशुराम जी भगवान विष्णु के छठे अवतार माने जाते हैं। वे एक महान योद्धा थे और धर्म के प्रति अपनी अटूट श्रद्धा के लिए जाने जाते हैं।

भगवान श्री कृष्ण - भगवान कृष्ण, अर्जुन के लिए एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक और गुरु के रूप में सदा साथ रहे। भगवद गीता में जब अर्जुन युद्ध के मैदान में नैतिक दुविधा का सामना कर रहे थे, तब कृष्ण ने उनको गहन दार्शनिक और नैतिक शिक्षा दी थी।

विश्व गुरु भारत के भोजन की विविधता

- संशेथा विजय, मध्यमा-१-e, ऑनलाइन पाठशाला

चना मसाला - मुँह में पानी ला देने वाली काबुली चने की सब्जी उत्तर भारतीय नाश्ते का एक प्रमुख और लोक प्रिय अंग है।

डोसा - चावल और दाल के घोल से बनता है डोसा! इस की किस्मों पर लगातार प्रयोग होते रहे हैं और अबतक डोसे की ६०० से अधिक किस्में हैं।

आइए एक भारतीय घर में खाने चलें

हलवा - आपके मुँह में घुल जाने वाली मिठाइयाँ में सबसे समृद्ध और अत्यधिक मीठे व्यंजनों का प्रतिनिधि है हलवा! इसे आप सभी तरह के भारतीय व्यंजनों में पायेंगे।

समोसा

गुलाब जामुन

भिंडी मसाला
(भिंडी फ्राई)

विश्व गुरु भारत - भारतीय आभूषणों का प्रभाव: कल, आज और कल

अदविका त्रिपाठी: मैं बारह वर्ष की हूँ। मैं सातवीं कक्षा में हूँ। मुझे लैक्रोस और वॉलीबॉल खेलना पसंद है| मैं न्यू जर्सी, अमेरिका में अपने माता, पिता और बहन के साथ रहती हूँ।

कान की बालियाँ

भारतीय आभूषणों में कान की बालियों के प्रभावशाली इतिहास के बारे में आप सबसे मैं अपनी जानकारी साझा करना चाहती हूँ। कल, आज और कल की बालियों के माध्यम से सजने में परिवर्तन और निरंतरता के बारे में छानबीन करके मैंने इस विषय पर बहुत ही रोचक जानकारी पाई। दक्षिण भारत के एक संग्रहालय में दो हजार साल पुरानी बालियाँ रखी हुई हैं। आभूषण के ये नमूने पिछले कुछ वर्षों में शानदार तरीके से विकसित हुए हैं। चित्र में दिख रही पुराने समय की बालियाँ आज भी इतनी ही सुंदर और उपयोग में हैं। मुझे लगता है कि नये स्टाइल की बालियों की बनावट को इतिहास प्रभावित और प्रेरित कर रहा है।

मैं फरवरी २०२४ में भारत में मेरे गृह नगर के मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा और पूजा में गयी थी। हमारे दादा, दादी और परिवार के सब लोगों ने मिलकर इस मंदिर को बनवाया है। इस मंदिर में गणेश जी, दुर्गा जी, शिव परिवार, राम-सीता, हनुमान जी, सरस्वती जी, और अन्नपूर्णा जी की मूर्तियाँ स्थापित हुई हैं। इस मंदिर की पूजा ४ दिन तक चली और ३००० से ज्यादा लोग आये थे। इस मंदिर की कुछ फोटो मैंने यहाँ लगाई हैं।

उच्चस्तर-१

स्टैमफर्ड हिन्दी पाठशाला

भारत का गणित: आधुनिक विज्ञान की नींव

सिद्धांत बिसाने

नमस्ते, मेरा नाम सिद्धांत बिसाने है। मैं १३ वर्ष का हूँ और ७वीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं अपनी माँ, पिताजी और छोटे भाई के साथ स्टैमफोर्ड, कनेक्टिकट में रहता हूँ। मेरा पसंदीदा विषय गणित है और मुझे अपना समय अपने कुत्ते के साथ बिताना पसंद है, उसका नाम ग्रोगु है, यह मैंडलोरियन स्टारवार्स श्रृंखला से आता है जो मुझे और मेरे भाई को बहुत पसंद है।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक बार कहा था, "हम भारतीयों के बहुत ऋणी हैं, जिन्होंने हमें गिनना सिखाया, जिसके बिना कोई भी सार्थक वैज्ञानिक खोज संभव नहीं हो पाती। जबकि भारतीयों ने **दशमलव प्रणाली** का आविष्कार किया था, प्राचीन भारतीय गणितज्ञों ने **अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति, और त्रिकोणमिति** के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कीं। प्राचीन दुनिया से भारतीय गणितज्ञों की प्रगति का वर्तमान समय जीवन पर एक अतुलनीय प्रभाव पड़ा है।

छठी शताब्दी ईस्वी से **आर्यभट्ट** पुरातनता में सबसे प्रभावशाली गणितज्ञों में से एक थे। उन्होंने वर्ग और घन जड़ों के लिए एक एल्गोरिथ्म विकसित किया। उन्होंने **साइन और कोसाइन** फ़ंक्शंस का भी आविष्कार किया, और उन्होंने साइन फ़ंक्शन के लिए एक टेबल बनाई। वास्तव में, हमारे आधुनिक शब्द "साइन" और "कोसाइन" -- **ज्या और कोटि-ज्या** शब्दों के गलत अनुवाद हैं। इसके अलावा, आर्यभट्ट ने दिखाया कि: 1nx2=n(n+1)(2n+1)6 और वह 1nx3=(1nx)2। यहां यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्राचीन भारत के गणितज्ञों ने हमारे मानक बीजगणितीय संकेतन के बजाय मात्राओं को प्राप्त करने के लिए कविताओं और लिखित निर्देशों का उपयोग किया था।

इसके अलावा छठी शताब्दी के **ब्रह्मगुप्त** हैं, जिन्होंने गणित में पर्याप्त योगदान दिया। उन्होंने सबसे प्रसिद्ध रूप से सामान्य द्विघात समीकरण का समाधान पाया था, अर्थात् x=b2-4ac-b2a, जो ax2+bx+c=0 का समाधान है। इसके अतिरिक्त वह नकारात्मक संख्याओं से निपटने के लिए नियम विकसित करने वाले पूरे क्षेत्र में पहले गणितज्ञ थे। इसके अतिरिक्त वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने संख्या 0 का उपयोग एकमुश्त संख्या के रूप में किया था, न कि केवल एक स्थान-धारक। उन्होंने चक्रीय चतुर्भुज के क्षेत्रफल को खोजने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक सूत्र भी रखा, जो एक चतुर्भुज है जिसमें इसके सभी बिंदु एक वृत्त के किनारे पर अंकित हैं: A=(t-p)(t-q)(t-r)(t-s), p,q,r, और s के साथ उक्त आकार के पक्षों की लंबाई का प्रतीक है, और t आकार का अर्ध-परिधि है और A अंत में क्षेत्र है।

भास्कर प्रथम एक और ७ वीं शताब्दी में प्रभावशाली गणितज्ञ थे। वे अपने **साइन सन्निकटन** सूत्र के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते थे: sin(x)16x(-x) 52-4x(-x){0 < x < }। यह एक उल्लेखनीय सटीक सूत्र है, जिसमें अधिकतम त्रुटि ०.००१७, या १.८ प्रतिशत है!

यह साइन के सभी व्यावहारिक अनुप्रयोगों के लिए पर्याप्त से अधिक था, लेकिन, जैसा कि आप सीखेंगे, इसने साइन और कोसाइन कार्यों के अधिक सटीक सन्निकटन के लिए एक खोज को जन्म दिया।

भास्कर॥ १२वीं शताब्दी के गणितज्ञ थे, जिनका दुनिया की गणित की समझ पर गहरा प्रभाव था। सबसे पहले, उन्होंने **पाइथागोरस प्रमेय** का प्रमाण प्रदान किया, जो उसी क्षेत्र की गणना करके और समान शब्दों को रद्द करके पाया गया। वह ऐसा महसूस करने वाले पहले व्यक्ति थे कि एक संख्या के दो वर्गमूल होते हैं, (एक सकारात्मक और एक नकारात्मक। उनके काम में कैलकुलस के ज्ञान का प्रमाण भी है, क्योंकि उन्हें रोले के प्रमेय के बारे में पता था।

संगमग्राम माधव दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण गणितज्ञों में से एक थे, खासकर त्रिकोणमिति। उन्हें ग्रेगरी की श्रृंखला की पहली खोज का श्रेय दिया जाता है: tan-1(x)=k=0(-1)k2k+1x2k+1 एक विशेष मामला, (4=k=0(-1)k2k+1) ,यह तब होता है जब x को 1 पर सेट किया जाता है, के लीबनिज़ सूत्र के रूप में जाना जाता है। गॉटफ्रीड लीबनिज़ और जेम्स ग्रेगरी, (जिनके नाम पर इन सूत्रों का नाम रखा गया है) दोनों माधव के सैकड़ों साल बाद आए थे। उन्हें साइन और कोसाइन के लिए अनंत श्रृंखला की खोज का श्रेय भी दिया जाता है: sin()=k=0(-1)k(2k)!2k और cos()=k=0(-1)k (2k+1)!2k+1.

भारतीय गणित का दुनिया पर एक अतुलनीय प्रभाव पड़ा है जैसा कि हम आज जानते हैं, साइन्स और कोसाइन से लेकर द्विघात सूत्र तक। गणितज्ञ आर्यभट्ट, भास्कर प्रथम, भास्कर द्वितीय और माधव प्रत्येक ने बड़ी सफलताएँ हासिल की हैं जिनके बिना गणित जैसा कि हम जानते हैं कि यह संभव नहीं होता।

योग, स्वास्थ्य और आयुर्वेद

वेदांग पालीवाल

नमस्ते, मेरा नाम वेदांग पालीवाल है। मैं हिंदी यू.एस.ए. की उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं स्टैमफोर्ड, कनेक्टिकट में रहता हूँ। मेरे स्कूल का नाम स्कोफिल्ड मैग्नेट स्कूल है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।

योग एक अभ्यास है। योग व्यक्ति को ध्यान केंद्रित करने में सहायता करता है और शरीर को स्वस्थ और लचीला बनाए रखता है। योग की शुरुआत एक आध्यात्मिक अभ्यास के रूप में हुई, लेकिन बाद में यह लोगों के लिए तनाव निवारक, और बहुत कुछ और भी बन गया। इसकी उत्पत्ति सबसे पहले प्राचीन भारत से हुई थी।

स्वास्थ्य अच्छे आकार में होने के साथ-साथ सामाजिक कल्याण होने की एक अवस्था है। स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बिना किसी के लिए बहुत सारी समस्याएँ हो सकती हैं। स्वास्थ्य योग से संबंधित है क्योंकि योग आपको तनाव मुक्त करने में मदद करता है जो महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्वास्थ्य ज्यादातर मानसिक होता है, इसलिए यदि कोई तनावग्रस्त है तो इसका असर स्वास्थ्य पर पड़ेगा।

आयुर्वेद भारत की एक पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली है जो संस्कृत शब्द "आयुर" (जीवन) और "वेद" (ज्ञान) से आई है। इसे दुनिया में सबसे पुरानी, सबसे अधिक प्रचलित चिकित्सा पद्धति माना जाता है। आयुर्वेद उपचार आंतरिक शुद्धिकरण प्रक्रिया से शुरू होता है, और उसके बाद एक विशेष आहार, हर्बल उपचार, मालिश चिकित्सा, योग और ध्यान को भी समाहित करता है।

भारत का उदय: २०२४ में विश्व गुरु

अलीशा सक्सेना

नमस्ते, मेरा नाम अलीशा सक्सेना है। मेरी उम्र तेरह वर्ष है और मैं स्टैम्फ़र्ड में रहती हूँ। मैं स्कोफ़ील्ड मैग्नेट मिडल स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। इसके अतिरिक्त मैं टाएकवोंडो, तैराकी, गणित और कई भाषाएँ जैसे कि फ्रांसीसी, स्पैनिश, जापानी और हिंदी भी सीखती हूँ। मैं बड़ी होकर गायिका बनना चाहती हूँ।

२०२४ में भारत का लक्ष्य विश्वगुरु बनना है, एक ज्ञानी नेता जिसका लक्ष्य दुनिया को चीजें सिखाना है। भारत योग, प्राचीन विज्ञान और दर्शन सहित प्राचीन ज्ञान का खजाना साझा करता है। यह चीजों को साझा करने और सहायता प्रदान करके अन्य देशों को बढ़ने में भी सहायता करता है। भारत का लक्ष्य संवाद करके और बिना लड़ाई के समाधान करके दुनिया में शांति लाना है। भारत धरती का उपयोग करके और पेड़ लगाकर अपने ग्रह की देखभाल भी करता है। भारत के सबसे प्रतिभाशाली दिमागों का उपयोग नवाचार और समस्या-समाधान के लिए किया जाता है, जिससे देश और वैश्विक समुदाय दोनों को लाभ होता है। २०२४ में भारत की यात्रा सिर्फ नाम बदलने की नहीं पर विश्व में अहम भूमिका निभाने की है। भारत दुनिया में ज्ञान की अगुवाई, धरती का सही उपयोग, शांति स्थापना, अपने ग्रह की रक्षा और अपने दिमाग का इस्तेमाल भलाई के लिए करना चाहता है। विश्व गुरु बनना एक बड़ी चीज़ है और भारत इसके लिए तैयार है!

भारत की अमूल्य धरोहर: संस्कृति, परंपराएं और विरासत

अनुषा मुंद्रा

मेरा नाम अनुषा मुंद्रा है। मैं छठी कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे डांस करना और ड्राइंग करना पसंद है। मैं अपने माता-पिता, दादा-दादी और भाई के साथ नॉरवॉक, कनेक्टिकट में रहती हूँ।

राजवंशों, शक्तिशाली शासकों, समृद्ध सभ्यताओं और प्रसिद्ध इतिहास के धन और गौरव से भरी भूमि, भारत के पास एक शानदार विरासत है जो इसकी वास्तुकला, स्मारकों, कला, शिल्प, संस्कृतियों और यहाँ तक कि धर्मों में भी दिखाई देती है। भारत अनेक धर्मों का देश है। हिंदू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म भारत के कुछ प्रमुख धर्म हैं। हर धर्म की अलग-अलग संस्कृति होती है। भारतीय लोगों के लिए अपनी संस्कृतियों और परंपराओं का पालन करना बहुत महत्वपूर्ण है।

भारत में संयुक्त परिवार होना एक बहुत महत्वपूर्ण संस्कृति है। संयुक्त परिवार का अर्थ है विभिन्न पीढ़ियों के परिवार के सदस्य एक घर में एक साथ रहते हैं। भारतीय संस्कृति में पारिवारिक निष्ठा का बहुत महत्व है। भारतीय घरों में अवसर के अनुरूप कपड़े पहनना बहुत सम्मानजनक माना जाता है। भारतीय संस्कृति संगीत, कला, नृत्य, भाषा, खान-पान, वेशभूषा, दर्शन और साहित्य की विविधता के कारण दुनिया भर में प्रसिद्ध है। भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषताएँ सभ्य संचार, मान्यताएँ, मूल्य, शिष्टाचार और अनुष्ठान हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम: एक आदर्श जीवन का प्रतिबिम्ब

आद्वितीया माहेश्वरी

नमस्ते, मेरा नाम आद्वितीया माहेश्वरी है। मैं स्टैमफोर्ड हिंदी पाठशाला की एक छात्रा हूँ और उच्चतर-१ में हूँ। मुझे नृत्य करना, संगीत बजाना, और चित्रकला करना पसंद है। मैं हिंदी कक्षा में भी भाग लेने का आनंद लेती हूँ और वहाँ नए लोगों और अपने दोस्तों से मिलकर मजा करती हूँ।

"राम एक नाम नहीं अभिव्यक्ति है"

"मर्यादा पुरुषोत्तम" एक उपनाम है जो भारतीय संस्कृति में भगवान राम के लिए सामान्यतः प्रयोग होता है। इसका हिंदी अनुवाद है "गुणों का सम्पूर्ण पुरुष" या "धर्म (धार्मिकता) का उच्च स्थान।" भगवान राम को हिन्दू धर्म के ग्रंथ रामायण में एक केंद्रीय पात्र, एक आदर्श शासक, पति और पुत्र के रूप में पूजा जाता है। "मर्यादा पुरुषोत्तम" शीर्षक राम के नैतिक मूल्यों, कर्तव्य, और धर्म के प्रति अडिग समर्पण को सूचित करता है। इसे एक आदर्श चित्र माना जाता है जो ईमानदारी, विनम्रता, करुणा, और सिद्धांतों का अनुसरण करते हैं। यह शब्द उन आदर्श गुणों को दर्शाता है जिन्हें भारतीय संस्कृति में कई लोग अपने जीवन में अनुकरण करने के इच्छुक होते हैं।

आन्या लूथरा, उच्चत्तर–२, ईस्ट ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला

हमारी परिवार व्यवस्था

हिंदू परिवार एक संयुक्त परिवार की तरह रहता है जिसमें तीन से चार पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं। महिलाएँ घरेलू जिम्मेदारियाँ निभाती हैं और पुरुष आय प्रदान करते हैं। घर के बुजुर्ग महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। वे अपने जीवन के अनुभव के आधार पर युवा पीढ़ियों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। जब महिलाएँ विवाह करती हैं तो वे अपने पति के परिवार में सम्मिलित हो जाती हैं तथा अपने कर्तव्यों का पालन करती हैं, हालांकि अपने परिवार के साथ संपर्क बनाये रखती है।

परिवार स्नेह के मजबूत बंधनों का प्रदर्शन करते हैं, जो कई पश्चिमी परिवारों से बिल्कुल अलग है। परिवार के बच्चे अपने दादा दादी से बहुत स्नेह करते हैं और उनके साथ समय व्यतीत करते हैं। रिश्तेदारों के अलग अलग नाम होते हैं जैसे चाचा, चाची, मामा, मामी, मौसी, मौसा आदि, जो पश्चिमी परिवारों से काफी अलग हैं जहाँ रिश्तेदारों को आंटी और अंकल कहकर पुकारते हैं।

विस्तारित परिवार परंपरागत रूप से बुजुर्गों और कम संपन्न लोगों को आश्रय और सहायता प्रदान करते हैं। जीवन के सभी कष्ट सब के सहयोग से बिना किसी को विचलित किए दूर हो जाते हैं। बच्चों से अपेक्षा की जाती है की वे अपने माता पिता कि सेवानिवृत्ति और बुढ़ापे में उनका समर्थन करके उनका ऋण चुकाए। हिंदू परिवार में एक महत्वपूर्ण पहलू सदस्यों के बीच परस्पर निर्भरता है। विस्तृत परिवार काफी व्यावहारिक और भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं जो सदस्यों के शारीरिक और मानसिक विकास में सहायता करते हैं।

एडिसन हिन्दी पाठशाला - उच्चस्तर-२

भारत की शिक्षा की नींव - प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति

नमस्ते, मेरा नाम सरगम गोडबोले है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और उच्चस्तर-२ की विद्यार्थी हूँ। मैं पिछले ९ वर्ष से हिंदी यू.एस.ए में पढ़ रही हूँ और इस वर्ष स्नातक बन जाऊँगी। मैंने हिंदी यू.एस.ए से बहुत कुछ सीखा है, हिंदी बोलना, लिखना, पढ़ना, और एक दूसरे के साथ बातचीत करना। हर शुक्रवार हिंदी पाठशाला जाने से मैंने बहुत सारे मित्र बनाए और मुझे गायन और वाचन के बहुत अवसर भी मिले। मुझे विश्वास है कि आगे जाकर मैं हिंदी भाषा के ज़ान का बहुत उपयोग कर पाऊँगी।

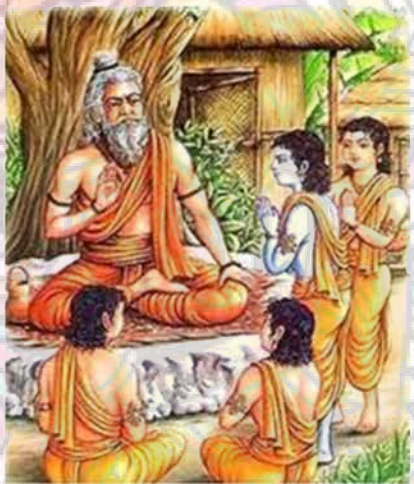

प्राचीन भारतीय शिक्षा को गुरुकुल कहा जाता था। इसमें विद्यार्थी अपने गुरु के घर जाकर उतने समय तक अभ्यास करते थे जितने समय की उन्हें आवश्यकता होती थी। गुरूजी, जो विद्यार्थियों को सिखाना चाहते थे, वह सिखाते थे। विद्यार्थी गुरुजी के घर काम भी करते थे। इसकी वजह से छात्र और गुरुजी के बीच एक मजबूत संबंध बन जाते थे। शिक्षा, प्रकृति और जीवन से जुड़ी रहती थी, बस आजकल की जैसी जानकारी याद रखने पर ज़ोर नहीं था। ऋषि मुनियों के काल में विद्यार्थी वनों, उपवनों में जाकर प्रकृति की छाया में रहकर प्राणी, पक्षी, पेड़, पौधे, सूरज, चाँद, दिन, रात, हवा की गति, बारिश तूफान का अनुभव करते थे। इन कारण उन्हें गणित, विज्ञान, भूगोल, कृषि, खेल, संस्कृत आदि विषयों का अध्ययन सहज हो जाता था। विद्यार्थी अपने गुरूजी के घर रहकर उनकी सहायता भी करते थे। रामायण और महाभारत के काल में आजकल जैसे पक्के घर नहीं हुआ करते थे। सूखी घास, पत्ते, गोबर, मिट्टी, जैसी चीजों से सामान्य लोगों की कुटियाएँ बनती थीं। विद्यार्थी शिक्षा के साथ-साथ ही खाना बनाना, योग मुद्राएँ, आयुर्वेद की शिक्षा लेना भी सीखते थे। इस वजह से विद्यार्थी एक दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते थे। योग से उनके शरीर में हमेशा लचीलापन बना रहता था और आयुर्वेद की शिक्षा से वे एक दूसरे की पीड़ा को दूर करने में निपुण होते थे। उस ज़माने में गुरुओं को आजकल जैसे शुल्क के रूप में धन का आदान-प्रदान नहीं हुआ करता था और गुरु उसकी अपेक्षा भी नहीं करते थे। अगली पीढ़ी को ज़ानवर्धन करना, उनको सशक्त बनाना, उनका मनोबल हमेशा दृढ़ रखना, एक दूसरे के प्रति विश्वास रखना, अपनों से बड़ों का आदर करना, और अपने से छोटों से संवेदनशीलपूर्ण संवाद करना यही सारे गुरुओं का लक्ष होता था। विद्यार्थियों का मन, बुद्धि चित्त से शिक्षा ग्रहण करना केंद्रबिंदु हुआ करता था। वातावरण में अनुभव होने वाली अनेक घटनाओं का शास्त्रीय दृष्टि से कारण ढूँढा जाता था। जैसे आजकल हम प्रयोगशाला में काम करते हैं। यही है हमारी भारतीय प्राचीन शिक्षा की छोटी सी झलक; जिससे हमें यह पता चलता है कि हम कितने समृद्ध देश से आते है और हमारे पूर्वजों ने बहुत मेहनत,

लगन, और गांभीर्य से आने वाली पीढ़ियों को शिक्षित, साक्षर ही नहीं, किन्तु एक संपूर्ण गुणवान मनुष्य बनने की सूत्रों की सरल रचना बनायी थी। जैसे-जैसे दशक बीतते गए, शिक्षा के नए-नए उपाय सामने आने लगे। मुख्य बदलाव १८०० की दशक से दिखने लगा, जब ब्रिटिश अंग्रेजी भाषा की भूमिका को प्राथमिक रूप देने में सफल हुए। बड़े-बड़े विश्वविद्यालय स्थापित हुए और आज भी इसी शिक्षा पद्धति का भारत की सारी पाठशालाओं में अनुसरण होता है। भारत पहले से ही शिक्षा प्रधान देश हुआ करता था और हमेशा ही रहेगा। भारत ने अगणित विद्वानों को जन्म दिया है। दुनिया भर में हमारे विशेषज्ञ अपनी विषय पारंगता से अपने साथ-साथ भारत का नाम भी ऊँचा कर रहे हैं।

भारत में आज भी विद्यार्थी प्रतिकूल परिस्थितियों में कड़ी मेहनत से शिक्षा लेकर दुनिया भर के विश्वविद्यालय में जाकर उच्च शिक्षा पाने का अथक प्रयास करते हैं। भारत गणित, वाणिज्य, विज्ञान में ही नहीं, बल्कि खेल कूद, कला संगीत, साहित्य जैसे क्षेत्रों में भी हमेशा अव्वल स्थान पर होता है। आज भी हमारे भारत के सभी स्तरों के शिक्षक मेहनत से विद्यार्थियों को शिक्षा देते हैं। आधुनिक भारत में राज्य स्तरीय शिक्षा बोर्ड की मान्यता से विद्यार्थियों की दसवीं का पाठ्यक्रम पूर्ण होता था और आज भी हो रहा है। परन्तु पिछले १०-१५ वर्ष से इसमें अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रम की पाठशालाओं का समावेश हुआ है, जिससे लाभार्थियों को बचपन से ही अनेक पहलुओं का शिक्षण ग्रहण करने का अवसर मिलता है। मुझे बहुत गर्व महसूस होता है कि मैं भारत से आती हूँ, परन्तु अमेरिका में पढ़ती हूँ और मैं यह विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि मेरे परिवार में जो शिक्षा का स्थान है, शिक्षित होने के प्रति जो श्रद्धा और एकभाव है, सत्कर्म करने की वृत्ति है, सत्य वचन का आग्रह है, और सफलता और विफलता को परिणाम स्वरूप न देखकर उनके विकल्पों को बूझ कर ही आगे जाने का मार्ग माना जाता है।

इसका श्रेय अगर मेरे परिवार को सौ प्रतिशत जाता है तो में यह कहना चाहूँगी कि इस सोच का बीज हजारों वर्ष पहले हमारे हिन्दू संस्कृति के ऋषि, मुनि, योगी, और ज्ञानियों ने बोया था। हजारों दशकों के बाद भी यह सोच कायम है और यह बहुत प्रेरणादायी है। इस सशक्त और बलवान शिक्षा प्रणाली की वजह से हम जैसे विद्यार्थी सहज प्रगति के मार्ग पर चलने का साहस कर पा रहे हैं। हमारे इस समृद्ध इतिहास को जानने के बाद

मैं बहुत गर्व महसूस करती हूँ कि मुझे मेरे परिवार द्वारा प्राचीन शिक्षा पद्धति के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा पद्धति सीखने का अवसर मिल रहा है। अगर प्राचीन शिक्षा पद्धति से मुझे एक बात आज की शिक्षा पद्धति में लानी हो तो मुझे योग और आयुर्वेद को बचपन से ही एक विषय के रूप में सीखना होगा। इसी को जोड़कर अगर आजकल के विद्यार्थी पाठशाला के कमरे से बाहर आकर प्रकृति में पेड़ पक्षियों के साथ ज्ञान लें तो उन्हें आनंद आयेगा। अगर यह बात हो पायी तो मुझे लगता है कि प्राचीन शिक्षण पद्धति जो सदियों पहले शुरू हुई थी वह सम्पूर्ण होगी और उसकी पूर्णता का परिणाम विश्व के सामने आएगा।

भारत विश्व का गुरु था, है, रहेगा

नमस्ते, मेरा नाम शिवानी प्रसाद है। मैं तेरह वर्ष की हूँ और आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में छः वर्ष से पढ़ रही हूँ। मुझे हिन्दी पढ़ना, लिखना, एवं बोलना अच्छा लगता है।

यह लेख मेरी भारत यात्रा के बारे में है। पहले हम सब स्वर्वेद महामंदिर गए थे, जो वाराणसी में है। यह अभी भी बन रहा है, पर यह एक दिव्य और भव्य मंदिर है, बहुत विशाल और अति सुंदर लगता है, विशेष रूप से रात को। यह मंदिर ऐसा बना है कि २०,००० व्यक्ति एक समय पर बैठकर ध्यान कर सकें। दिसंबर १७, २०२३ को भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इस मंदिर का उद्घाटन किया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में एक पच्चीस हज़ार कुंड का हवन भी हुआ था, जिसमें मैं भी उपस्थित थी।

उसके बाद हम मुंबई के एक आयुर्वेदिक चिकित्सालय गए जो 'योग का अभ्यास स्कूल' के नाम से मशहूर है। वहाँ हमने देखा कि वातावरण बहुत शांत एवं मनमोहक था। वहाँ हम सब को खाना खाने के सही तरीके बताए गए थे। यह चिकित्सालय विदेशी लोगों की सुविधा के अनुसार बनाया गया है। वहाँ एक और चीज पता चली कि यदि कोई बच्चा लापता हो गया जाता है तो मुंबई की पुलिस उस बच्चे को २४ घंटे के अंदर ढूँढ कर ले आती है।

अंत में हम अपने गाँव मानपुर गए। वहाँ मैंने कुछ सहेलियाँ बनाईं और पता चला कि अब लड़कियाँ भी पाठशाला जा सकती हैं। मेरे पिताजी ने कहा था कि बहुत पहले लड़कियाँ कहीं नहीं जा पाती थीं, पाठशाला भी नहीं। अब यह सुनकर अच्छा लगा कि मेरी नई सहेलियाँ ऐसा जीवन जी सकती हैं जहाँ वे मजबूर न हों।

इस तरह हम सब देख सकते हैं कि पहले के भारत और आज के भारत में बहुत फर्क पड़ रहा है। जैसे पहले लड़कियाँ पाठशाला नहीं जा पाती थीं, अब आज लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं। पहले यदि कोई विदेश से आता था तो उनके लिए भारत में रहना बहुत मुश्किल होता था, परंतु अब भारत में ऐसी सुविधा दी गयी हैं कि विदेशी भी आसानी से रह सकें। आज विदेश में ऐसा स्थान नहीं है जहाँ मुफ्त में कोई शांति की प्राप्ति के लिये जा सके, परंतु भारत में ऐसी कई जगह हैं, जो विदेश में भी होनी चाहिये। बीस वर्ष पहले भारत और आज के भारत में बहुत की अंतर है इस से पता चलता है कि भारत एक प्रगतिशील देश है, एवं और सब देशों को भी ऐसे ही होना चाहिए।

भारतीय शिक्षा प्रणाली

नमस्ते, मेरा नाम राम शेठ है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं एडिसन, न्यू जर्सी में रहता हूँ। मुझे फुटबॉल, बास्केटबॉल और टेनिस खेलना पसंद है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली दुनिया की सबसे पुरानी प्रणालियों में से एक है। बच्चे अपने माता-पिता को छोड़कर गुरुकुल में रहते थे। गुरुकुल वह स्थान होता था जहाँ विद्यार्थी कुछ वर्षों तक गुरु के पास रहकर उनसे शिक्षा प्राप्त करते थे।

वर्तमान में भारत की शिक्षण व्यवस्था में पुराने और नए तरीकों का मिश्रण है। अधिकतर भारतीय विद्यार्थी अपनी स्मरणशक्ति और याद रखने की क्षमता के लिए सबसे अधिक जाने जाते हैं। भले ही कक्षाएँ छात्रों से भरी हों और संसाधनों की कमी हो या कोई और समस्याएँ हों, फिर भी कई चतुर और बुद्धिमान लोग भारतीय पाठशालाओं से निकल कर अपने लिए सम्मानजनक जगह बना पाए हैं। जैसे की, ए.पी.जे.

अब्दुल कलाम, एरोस्पेस वैज्ञानिक; सी.वी. रमन, एक प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी; श्रीनिवास रामानुजन, एक बुद्धिमान गणितज्ञ; सुंदर पिचाई, गूगल के सी.ई.ओ.; सत्य नडेला, माइक्रोसॉफ्ट के सी.ई.ओ.; अरविंद कृष्ण, आई.बी.एम. के सी.ई.ओ.; और कई अन्य।

भारत की शिक्षा इतनी अच्छी, और इसकी नींव इतनी मजबूत है कि दुनिया भर से लोग पढ़ने के लिए भारत आ रहे हैं। भारत की शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कई लोग डॉक्टर और इंजीनियर बन गए हैं। हालाँकि, भारत को अभी भी कुछ विषयों को ठीक करने की आवश्यकता है। बढ़ती जनसंख्या और कुछ स्कूलों में अध्यापकों की संख्या कम होने के कारण शिक्षक हर एक विद्यार्थी पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि विद्यार्थी अच्छी तरह से सीख नहीं पाता है और पुस्तकों की सामग्री को याद करने के लिए मजबूर हो जाता है। संक्षेप में कहें तो भारत की शिक्षा प्रणाली के अपने फायदे और कमियाँ हैं। एक बेहतर प्रणाली बनाने के लिए हमें सामयिक होते रहना होगा और इन विद्यार्थियों की मदद के लिए और नए तरीके खोजने होंगे।

सनातन धर्म (हिंदू धर्म)

नमस्ते, मेरा नाम हविषा गंगुला है और मैं आठवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैं एडिसन पाठशाला में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ।

हिंदू धर्म का अनुशासन और अभ्यास, कर्म में विश्वास द्वारा नियंत्रित होता है। यह सोच हमारे ऋषियों ने रामायण ग्रंथ द्वारा हमें बतायी थी। हिंदू धर्म का मानव जीवन में आध्यात्मिकता, भक्ति और धार्मिकता की भावना बढ़ाने के लिए अनुष्ठान (नियमपूर्वक प्रयास का आरंभ) किया जाता है। इस धर्म कार्य को सम्पूर्ण करने के लिए समाज में पारिवारिक व्यवस्था का होना उचित लाभ लाता है। परिवार व्यवस्था का पहला कदम है विवाह। विवाह एक आध्यात्मिक, सामाजिक और धार्मिक मान्यता प्राप्त संस्कार है जो भविष्य में जीवन के भागीदारों के मन और आत्मा को एक जुट करता है, और दो परिवारों के बीच पवित्र बंधन बनाता है। हिंदू धर्म के अनुशासन से सम्मानपूर्वक जीवन जिया जा सकता है। ईमानदारी, उदारता और करुणा जैसे गुणों से हम अपना जीवन आनंदपूर्वक जी सकते हैं। चार लक्ष्यों में एक लक्ष्य है धर्म। वेदों के अनुसार एक संतुलित और सार्थक अस्तित्व के मार्ग में आम तौर पर सही कार्यों (धर्म), भौतिक सुरक्षा (अर्थ), भौतिक सुख (काम), और आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) की समग्र खोज की आवश्यकता होती है। कर्मभूमि में जब धर्म का अनुशासन होता है तब भविष्य में बच्चे भी उसका आदर करेंगे। रामायण में राम जी ने एक पुत्र, भाई, पति और राजा का अपना कर्तव्य कुशलता से पूर्ण किया था। एक और रामराज्य लाने के लिए इस कर्मभूमि में हिंदू धर्म का पालन सब को करना चाहिए।

हिन्दू धर्म का दर्शन

नमस्ते, मेरा नाम अरिका शाह है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। हिंदी सीखने से विदेश में अपने परिवार से बात करने में मदद मिलती है और मुझे अपनी पसंदीदा हिंदी फिल्में समझने में भी मदद मिलती है! हिंदी मुझे अपने भारतीय मूल से जुड़ने में भी मदद करती है और यह मेरी पहचान का एक हिस्सा है। मुझे मेरी हिंदी कक्षा बहुत पसंद है और यह लंबे समय से मेरे जीवन का हिस्सा है। मैंने इस यात्रा में कई दोस्त बनाए हैं और बहुत कुछ सीखा है। मैं बहुत दुखी हूँ कि यह मेरा आखिरी वर्ष है। धन्यवाद हिंदी यू.एस.ए.। हिंदी में बातचीत करते रहना मेरा धर्म है।

धर्म क्या है? धर्म एक कर्तव्य अथवा जिम्मेदारी

है।

हिंदू धर्म के सिद्धांत, जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म के निरंतर चक्र, कर्म और उसके और प्रभाव के सार्वभौमिक नियमों में विश्वास रखना है। हिंदू धर्म के प्रमुख विचारों में से एक 'आत्मन' या आत्मा में विश्वास होना है। यह मानता है कि जीवित प्राणियों में आत्मा होती है, और सभी आत्मा, ब्रह्मन का हिस्सा हैं। हिंदू धर्म में 'मोक्ष' प्राप्त करना हमारा धर्म है, जो पूर्ण आत्मा का हिस्सा बनने के लिए पुनर्जन्म के चक्र को समाप्त करता है।

मेरी राय में भगवदगीता हिंदू धर्म का संपूर्ण दर्शन करवाता है। भगवदगीता, भगवान कृष्ण द्वारा दिया गया सर्वोच्च दिशानिर्देश है जो हमें इस मानव जीवन का सर्वोत्तम उपयोग करने, और इससे वास्तविक खुशी प्राप्त करने में मार्गदर्शन करता है। कृष्ण सिखाते हैं कि कोई केवल शरीर को मार सकता है; आत्मा अमर है। मृत्यु के समय आत्मा दूसरे शरीर में पुनर्जन्म लेती है, या उन लोगों के लिए जिन्होंने सच्ची शिक्षाओं को पूरी तरह से समझ लिया है, यह मोक्ष या निर्वाण को प्राप्त करती है - यानी, पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति।

अध्याय १-५ मेरे पिताजी का भगवदगीता से पसंदीदा अध्याय हैं जो कर्म के बारे में बताता है। हिंदू धर्म पर मेरी राय यह है कि परिणाम के बजाय अपने कार्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हिंदू धर्म में दूसरों को स्वीकार करने की सहनशीलता है।

भारत की शिक्षा प्रणाली

मेरा नाम नेत्रा भट्टड है। मैं १३ वर्ष की हूँ। मैं उच्चस्तर-२ में पढ़ती हूँ और एडिसन, न्यू जर्सी में रहती हूँ। मेरे शिक्षक नीलेश जी और प्रिया जी हैं। यह मेरा हिन्दी पाठशाला का अंतिम वर्ष है।

भारत की शिक्षा प्रणाली के बहुत सारे अंग हैं जिसमें पाँच अलग-अलग तरह के शिक्षा मंडल होते हैं, जो हैं, स्टेट बोर्ड (State Board), सी.बी.एस.ई (CBSE), आई.सी.एस.ई (ICSE), सी.आई.एस.सी.ई (CISCE), और आई.बी (IB)।

विद्यार्थी किसी भी शिक्षा मंडल में हो, उन्हें प्राथमिक शिक्षा के सात वर्ष और उच्च माध्यमिक शिक्षा के चार वर्ष पूर्ण करने होते हैं। जब बच्चे पाँच वर्ष के हो जाते हैं, तब वे प्री-प्राइमरी स्कूल में पढ़ते हैं। जब वे ६ से १० वर्ष के होते हैं तब वे लोअर-प्राइमरी पाठशाला में पढ़ते हैं। इसके बाद, जब वे १३ वर्ष के होते हैं तब तक वे सेकंडरी कक्षा में पढ़ते हैं। जब वे १६ वर्ष के होते हैं तब तक वे अप्पर सेकंडेरी स्कूल या महाविद्यालय में पढ़ते हैं। इसके बाद उनके पास चुनने का विकल्प होता है कि उनको आगे और दो वर्ष जूनियर कालेज या हाईयर सेकेंडरी स्कूल में जाना है या नहीं।

स्टेट बोर्ड (State Board) एक तरह का शिक्षा मंडल है जो भारत में हर राज्य के लिये अलग होता है। हर स्टेट बोर्ड उनके विद्यार्थियों को अलग-अलग शिक्षा देता है, और उनको अपनी राष्ट्रभाषा में सिखाता है। भारत में १०६७ स्टेट बोर्ड की पाठशालाएँ हैं।

सी.बी.एस.ई (CBSE) या सेंट्रल बोर्ड औफ सेकंडेरी एड्युकेशन (Central Board of Secondary Education) भारत का सबसे लोकप्रिय शिक्षा मंडल है। यह बोर्ड दसवीं कक्षा तक की सब कक्षाओं में शिक्षा देता है, और दसवीं कक्षा के बाद यह विषयों की एक बड़ा विकल्प देता है। इस बोर्ड की सब पाठशालाएँ अंग्रेज़ी में शिक्षा देती हैं। यह एक राष्ट्रीय बोर्ड है, और इसमें दोनों पब्लिक और प्राईवेट पाठशालाएँ होती हैं। भारत में २७,००० सी.बी.एस.ई. (CBSE) बोर्ड की पाठशालाएँ हैं।

आई.सी.एस.ई. (ICSE) या इन्डियन सर्टिफिकेट फॉर सेकंडेरी एड्युकेशन (Indian Certificate for Secondary Education) एक ऐसा शिक्षा मंडल है जिसमें सिर्फ प्राइवेट पाठशालाएँ रहती हैं। ये पाठशालाएँ

अंग्रेज़ी में शिक्षा देती हैं। इस बोर्ड की पाठशालाएँ उनके विद्यार्थियों के अच्छे व्यक्तित्व बनाने पर ध्यान देती हैं, और गणित और विज्ञान पर भी ध्यान देती हैं।

सी.आई.एस.सी.ई. (CISCE) या कौंसिल फ़ोर दी इन्डियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्सेमिनेशन (Council for the Indian Certificate Examination) एक शिक्षा मंडल है जिसमें सिर्फ़ प्राइवेट पाठशालाएँ होती है। ये पाठशालाएँ केवल दसवीं और बारहवीं बोर्ड की परिक्षाओं के लिये प्राइवेट कक्षाएँ और अतिरिक्त ऊँची गुणवत्ता की अभ्यास सत्र प्रदान करती हैं। सी.आई.एस.सी.ई. (CISCE) बोर्ड की २,३०० पठशालाएँ भारत में हैं।

आइ बी (IB) या इंटरनेशनअल बैचलौरिएट (International Baccalaureate) एक शिक्षा मंडल जो तीन से उन्नीस वर्ष के बच्चों को सिखाता है। यह शिक्षा मंडल बहुत कठिन है, लेकिन यह बच्चों को उनके पसंदीदा विषयों में अभ्यास करने की अनुमति देता है। भारत में आई बी (IB) बोर्ड की २०६ पाठशालाएँ हैं।

हिंदू धर्म का दर्शन

मेरा नाम अनिष्का जिंदल है और मैं सातवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे नृत्य और संगीत बहुत पसंद है। मुझे अपने खाली समय में तैरना, स्केच बनाना और बास्केटबॉल खेलना अच्छा लगता है।

हिंदू धर्म का दर्शन करवाना और इस विषय के बारे में लिखना एक बहुत विशालकाय प्रयास है और इसे एक लेख के द्वारा समझाना वास्तव में बहुत कठिन है। हमारे देश में प्रमुख अवधारणा हिंदू धर्म की है, और यह मानव जीवन के चार उचित लक्ष्यों को संदर्भित करता है। चार पुरुषार्थ हैं, धर्म (धार्मिकता, नैतिक मूल्य), अर्थ (समृद्धि, आर्थिक मूल्य), काम (खुशी, प्रेम, मनोवैज्ञानिक मूल्य) और मोक्ष (मुक्ति, आध्यात्मिक मूल्य, आत्म-प्राप्ति)।

मैं अनिष्का जिंदल, उच्चतर-२ की छात्रा, आज अपने लेख में हिंदू धर्म के एक दार्शनिक पहलू 'भारतीय परंपराएँ' पर प्रकाश डालना चाहूँगी जो न केवल अद्भुत हैं बल्कि हिंदू धर्म के लक्ष्यों को परिभाषित करने में हमारी मदद भी करती हैं।

भारतीय संस्कृति में त्यौहार, उत्सव मनाने के अवसरों से कहीं अधिक हैं। वे जीवन के गहनतम और गहरे पहलुओं को भी दर्शाते हैं। प्रत्येक त्यौहार का अपना एक अनूठा महत्व होता है जो हमें मूल्यवान सबक और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का पाठ पढ़ाता है और पीढ़ियों से चली आ रही सांस्कृतिक परंपराओं को पेश करता है। आइए गहराई से जानें और समझें।

परंपराएँ लोगों को एक साथ लाती हैं - हमारे त्यौहार केवल उत्सव नहीं हैं, वे जीवन के सबसे गहरे और सबसे सार्थक पहलुओं का पता लगाने का मार्ग प्रदान करते हैं। सभी त्यौहार किसी न किसी तरह से अलग-अलग होते हैं और सभी अपने बारे में कुछ अनोखे और विशेष तथ्य रखते हैं। सभी त्यौहार हमें अलग-अलग बातें सिखाते हैं और लोग उन्हें अलग-अलग तरीकों से मनाते हैं, जैसे कि अपने पूर्वज इन्हें कैसे मनाते थे और प्रत्येक परिवार के पास इन्हें मनाने का एक विशेष तरीका भी होता है जो पीढ़ियों से चला आता है। उदाहरण के लिए,

राखी का त्योहार हालांकि भाई-बहन के बंधन का उत्सव है जहाँ बहन भाई की कलाई पर राखी बाँधती है और उसकी खुशहाली के लिए प्रार्थना करती है। मेरे परिवार में इसे थोड़ा अलग ढंग से मनाया जाता है। हमारे परिवार में इसे भाई-बहन, भाई-भाई, बहन-बहन के प्यार का उत्सव कहते हैं और इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि आप किस लिंग के हैं। एक दूसरे को धागा बांधें, एक-दूसरे की भलाई के लिए प्रार्थना करें और वादा करें कि चाहे कुछ भी हो, हमेशा अपने भाई-बहन के

साथ खड़े रहेंगे।

त्यौहार एकता और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देता है - भारतीय परंपराओं में लोग हमेशा एक साथ रहना और समारोह, उत्सव मनाना पसंद करते हैं। वे अधिक बेहतरी की विचारधाराओं में विश्वास करते हैं। वे लोगों को बहिष्कृत महसूस नहीं कराते और हर किसी के साथ परिवार की तरह व्यवहार करते हैं, चाहे वह व्यक्ति कोई भी हो। इस बर्ताव से लोगों को अपनापन और स्वतः को मूल्यवान होने का एहसास होता है। जब भी भारतीय उत्सव मनाते हैं तो वे इसे हमेशा एक बड़े समूह में मनाते हैं और एक साथ मिलते हैं। लोग अलग-अलग नहीं होते, वे हमेशा लोगों के साथ रहते हैं। यह हमारे समुदाय में एकता को दर्शाता है।

त्योहारों में आम तौर पर जोशपूर्ण संगीत होता है - भारतीय ऐसे नृत्य में विश्वास करते हैं जैसे कि उन्हें कोई न देख रहा हो। इससे वहाँ के वातावरण और अन्य उपस्थितियों में सकारात्मकता पैदा होती है। यदि आप कभी भारतीय विवाहों में सम्मिलित हुए हैं तो आपको पता होगा किस तरह लोग बस आपको खींच कर कुर्सी से उठाकर नृत्य मंच पर ले जाते हैं। इससे न केवल खुशी के माहौल में आनंद आता है, बल्कि परिवारों के बीच एक विशेष बंधन भी बनता है।

परंपराएँ दैनिक जीवन में कृतज़ता, करुणा और सचेतनता के महत्व को उजागर करने का प्रयास करती हैं कृतज़ता हमारे व्यक्तित्व को विकसित करने और हमारे परिवारों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संक्षेप में, ये परंपराएँ न केवल हमें अपने मूल्यों पर टिके रहने में मदद करती हैं, हमें न केवल भारतीय और हिंदू धर्म का मूल्य समझाती हैं, बल्कि हमें धर्म के सही रास्ते पर मार्गदर्शन भी कराती हैं। सभी त्योहारों पर भारत और अन्य देशों में रहने वाले परिवार के सदस्यों से बात करके मुझे उनके प्रति निकटता और लगाव की भावना का एहसास होता है। मैं अपने आप को भाग्यशाली मानती हूँ कि मेरे जीवन में इतने सारे लोग हैं जो मुझसे प्यार करते हैं।

भारत की शिक्षा प्रणाली

समानताएँ और भिन्नताएँ

नमस्ते, मेरा नाम अवधी बैद है। मैं आठवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे कला, पेंटिंग और बेकिंग पसंद है और मैं पिछले सात वर्षों से भरतनाट्यम सीख रही हूँ। मैं अपने स्कूल में एक क्लब (FCCLA) की अध्यक्षा हूँ, और अपने स्कूल की टीम के लिए फुटबॉल खेलती हूँ। मुझे हमारे देश की संस्कृति बहुत पसंद है, और आशा है कि मेरे द्वारा लिखा गया लेख आपको पसंद आएगा।

अमेरिका और भारत की शिक्षा प्रणालियों में समानताएँ और भिन्नताएँ भी हैं। दोनों देश तीन स्तरीय शिक्षा-संरचना का पालन करते हैं, जिसमें प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर सम्मिलित हैं। हालाँकि, व्यवस्थाएँ अपनी सामग्री और संगठन में भिन्न होती हैं।

अमेरिकी शिक्षा में प्रत्येक राज्य की अपनी नीतियाँ होती हैं। इससे पाठ्यक्रम और परीक्षण विधियों में भिन्नता होती है। भारत में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम व्यवस्था है, हालाँकि राज्यों को अभी भी कुछ स्वायत्तता प्राप्त है। भारतीय शिक्षा प्रायः: पुनरावृत्ति और परीक्षा प्रदर्शन के आधार पर जानकारी को याद रखने की प्रक्रिया पर निर्भर रहती है, जबकि अमेरिका आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता को महत्व देता है।

अमेरिका में उच्च शिक्षा मिश्र स्वरूप की है। प्रसिद्ध विश्वविद्यालय विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रदान करते हैं, जो अधिकतर उदार कला (Liberal Art) पर जोर देते हैं। इस बीच भारत में उच्च शिक्षा के लिए प्रतिस्पर्धा है, खासकर अभियांत्रिकी और चिकित्सा जैसे

एस.टी.ई.एम. (स्टेम) क्षेत्रों में।

सांस्कृतिक प्रभाव इन प्रणालियों को आकार देते हैं। अमेरिका व्यक्तिवाद और रचनात्मकता पर जोर देता है और छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी के लिए प्रोत्साहित करता है। अभियांत्रिकी और चिकित्सा जैसे स्थिर व्यवसायों पर ध्यान देने के साथ-साथ भारत में शैक्षणिक उपलब्धि के लिए एक पारंपरिक सम्मान है।

संक्षेप में, दोनों देशों में त्रि-स्तरीय शिक्षा प्रणाली है, लेकिन पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों और सांस्कृतिक प्रभावों में भिन्नता प्रत्येक प्रणाली को अद्वितीय बनाती है। अंतर-सांस्कृतिक समझ और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए इन मतभेदों को पहचानना महत्वपूर्ण है।

रूस और युक्रेन का युद्ध

मेरा नाम तनय गुप्ता है। मैं एडिसन की जॉन एडम्स मिडिल स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे चित्रकला में बहुत रुचि है ।

रूस और युक्रेन के युद्ध में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। रूस ने युक्रेन पर NATO के बेस बनाने के कारण आक्रमण किया। रूस ने कई महीनों तक अमरीका को युद्ध प्रारंभ करने की धमकी दी थी। यह बात भारत और रूस की मित्रता के अनुसार छुपी बात नहीं थी। अत: रूस का आक्रमण करना, कम से कम भारत के लिए बहुत चौंकाने वाला अवसर नहीं था, जबकि भारत स्वयं शांति प्रिय देश है।

भारत ने रूस के राष्ट्रपति से युद्ध रोकने का आग्रह किया है। विश्व मंच पर भारत ने रूस के खिलाफ आवाज़ उठाने से मना किया। परिणामस्वरूप भारत की कड़ी निंदा हुई। परंतु भारत और रूस की मित्रता कायम रहने के कारण भारत रूस को प्रभावित करने की अच्छी स्थिति में है। भारत रूस से तेल खरीद रहा है। युद्ध के कारण रूस की आर्थिक स्थिति कमज़ोर पड़ चुकी है और विश्व के दबाव ने उस पर और कई परेशानियाँ उत्पन्न कर दी हैं। भारत का सबल नेतृत्व यह आशा बनाए रखता है कि इस युद्ध का अंत तुरन्त हो जाएगा।

भारतीय आभूषण और वेशभूषा
साउथ ब्रंसविक - मध्यमा–१

ऑनलाइन हिन्दी पाठशाला - उच्चस्तर -२

हिन्दू धर्म का दर्शन

मेरा नाम हर्ष अग्रवाल है। मैं अमेरिका में पेन्सिल्वेनिया राज्य के यार्डले शहर में रहता हूँ। मैं ऑनलाइन हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला का उच्चस्तर–२ का विद्यार्थी हूँ। इस लेख में मैंने हिन्दू धर्म पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

हिन्दू धर्म की उत्पत्ति:

हिन्दू धर्म विश्व का सबसे प्राचीन धर्म है। ऐसा माना जाता है कि इस धर्म की उत्पत्ति मानव की उत्पत्ति से भी पहले हुई थी। इस धर्म का संस्थापक कौन है अभी विवादास्पद है क्योंकि विद्वान लोग इसे भारत की संस्कृतियों और परम्पराओं का मिश्रण मानते हैं।

हिन्दू धर्म के अनुयायी:

दुनिया भर में हिंदू धर्म के १ अरब से अधिक अनुयायी हैं और इस आधार पर इसे संसार का तीसरा बड़ा धर्म माना जाता है। इसके अनुयायी भारत, नेपाल, मॉरीशस, अमेरिका और अन्य बहुत से देशों में हैं। लगभग ९५% हिंदू भारत में रहते हैं। यह वेदों पर आधारित है इसीलिए इसे वैदिक धर्म भी कहा जाता है। इण्डोनेशिया में इसे आगम भी कहा जाता है। हालाँकि इसमें कई देवी-देवताओं की पूजा की जाती है, लेकिन वास्तव में यह एक ईश्वरवादी धर्म है।

अवधारणा एवं विशेषताएं:

हिन्दू धर्म वट वृक्ष के समान है जिसकी सैकड़ों शाखाएँ हैं। जितनी शाखाएं हैं उतने ही देवी, देवता, भगवान और ऋषि हैं और उन सभी देवी-देवताओं को मानने वालों की संख्या बहुत बड़ी है। सभी में विभिन्नता होने की बावजूद भी वे कुछ सिद्धांतों पर एकमत है। हिन्दू धर्म में त्रिदेवों को विशेष महत्व दिया गया है। ये त्रिदेव हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव)। ब्रह्मा को जन्मदाता, विष्णु को पालनहार और शिव को संहारक माना गया है।

हिन्दू धर्म वेद और पुराणों पर आधारित धर्म है जो आत्मा की अमरता में विश्वास रखता है और यह कर्म सिद्धांत को मानता है। हिन्दू धर्मानुसार ८४ लाखों योनियों में भटकने के बाद अपने कर्मों के अनुसार आत्मा मनुष्य योनि को प्राप्त करती है।

हिन्दू धर्म चार पुरुषार्थ और चार आश्रमों के सिद्धांतों पर आधारित जीवन पद्धति पर जीवनयापन करने की प्रेरणा देता है। मोक्ष को हिन्दू धर्म में हर व्यक्ति या आत्मा का अंतिम लक्ष्य माना गया है। यह धर्म सर्वधर्म समभाव, उदारता, परोपकार, सहअस्तित्व, सहिषुणता, और स्वीकार्यता की भावना को प्रोत्साहित करता है। हिन्दू धर्म वसुधैव कुटुम्बकम में विश्वास रखता है जिसका अर्थ है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार ही है।

भारत और उसके अंतर्राष्ट्रीय संबंध

मेरा नाम प्रिषा गर्ग है और मै नार्थ कैरोलिना मे रहती हूँ। मैं आठवी कक्षा मे पढ़ती हूँ और मेरे कुछ शौक हैं पियानो बजाना, स्केचिंग केरना, और किताब पढ़ना।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध राष्ट्रों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करने, संसाधनों को एकत्रित करने और किसी विशेष देश या क्षेत्र से परे जाने वाले वैश्विक मुद्दों का सामना करने के तरीके के रूप में जानकारी साझा करने की अनुमति देते हैं। प्रत्येक देश को विदेशी संबंध की आवश्यकता होती है क्योंकि इससे दोनों देशों को लाभ होता है। ये लाभ व्यापार या व्यवसाय संबंधी, सामरिक और सैन्य संबंधी हो सकते हैं। १९४७ में भारत की आजादी के बाद पिछले कुछ वर्षों में भारत ने धीरे-धीरे अन्य देशों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंध बनाए थे। भारत का पहला आधिकारिक वैश्विक संबंध सिल्क रोड के प्राचीन काल में चीन के साथ शुरू हुआ, बाद में उन्होंने १९५५ में रूस के साथ और १९६२ में संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंध स्थापित किया।

भारत और चीन के रिश्ते की शुरुआत सिल्क रोड पर व्यापार से हुई थी लेकिन गठबंधन नहीं बन पाया क्योंकि भारत पर ग्रेट ब्रिटेन का शासन था। १९५० में दोनों देशों के बीच एक-दूसरे के साथ अच्छे संबंध थे और एक-दूसरे की भूमि पर अकसर मेहमान आते थे, लेकिन वह समय धीरे-धीरे उनके बढ़ते संघर्ष के कारण धूमिल हो गया। १९६२ में दोनों देशों के बीच सीमा को लेकर विवाद शुरू हो गया जिससे उनके संबंधों में खटास आ गई। तब से भारत और चीन अपनी सीमा को लेकर विवादों में उलझे हुए हैं और इससे उनके गठबंधन में कमजोरी आई है और २०२० में गलवान घाटी में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच सीमा विवाद के साथ उनका संबंध और अधिक तनावपूर्ण हो गया है। चीन मानता है कि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के राज में भारत उनकी साझा हिमालयी सीमा पर परेशानी पैदा करने और चीन के उदय को रोकने और हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति का मुकाबला करने के लिए अन्य शक्तियों के साथ सहयोग करने का इरादा रखता है। हालाँकि भारत और चीन अपनी सीमा पर विवाद कर रहे हैं, फिर भी दोनों के बीच व्यापार का संबंध बना हुआ है, भारत से चीन को निर्यात में लौह अयस्क और पेट्रोलियम सम्मिलित हैं और इसी तरह चीन से भारत को निर्यात में कंप्यूटर, टेलीफोन और सेमीकंडक्टर उपकरण सम्मिलित हैं।

रूस के साथ भारत के संबंध शीत युद्ध के दौरान शुरू हुए जब भारत और सोवियत संघ ने आम सैन्य और आर्थिक विचारों पर एक मजबूत और सामरिक संबंध बनाया। यह मजबूत रिश्ता २०२२ तक जारी रहा जब प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने पुतिन के यूक्रेन पर आक्रमण के फैसले पर असहमति जताई। रूस भारत का सबसे बड़ा सैन्य आयात के साथ-साथ पेट्रोलियम, हीरे और सोने का भी आयात करता है। रूस को निर्यात किए जाने वाले भारत के कुछ शीर्ष उत्पादों में पैकेज्ड दवाई और प्रसारण उपकरण शामिल हैं।

अमेरिका के साथ भारत का गठबंधन भारत और चीन के सीमा विवादों का परिणाम था। १९६२ में प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेरू ने राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी को पत्र लिखकर चीन और भारत के बीच युद्ध में सहायता माँगी, जिस पर अमेरिका ने हवाई सहायता और हथियार प्रदान किये। अमेरिका और भारत के बीच गठबंधन बहुत परिवर्तनशील संबंध था, खासकर परमाणु परीक्षण पर जो १९७४ में शुरू हुआ था। १९९८ में भारत ने पाकिस्तानी सीमा के पास कई भूमिगत परमाणु परीक्षणों की

सफलता की घोषणा की जिससे अमेरिकी खुफिया हैरान हो गया और संभावित परमाणु हथियारों की होड़ का डर बढ़ गया और भारत-अमेरिका संबंधों को गंभीर नुकसान पहुंचा। अमेरिका और भारत ने २००५ में परमाणु सहयोग पहल की, जिसने भारत परमाणु ऊर्जा व्यापार पर ३० साल के अमेरिकी अस्थायी निलंबन को हटा दिया। २०१६ में अमेरिका ने भारत को एक प्रमुख रक्षा भागीदार के रूप में पदोन्नत किया। यह दर्जा किसी अन्य देश के पास नहीं है। अगस्त २०१८ में १० साल के रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए गए और दो महीने बाद अमेरिका और भारत ने सैन्य सहयोग पर एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।

भारत के यूनाइटेड किंगडम, जापान, सिंगापुर फ्रांस, इज़राइल, ब्राजील, ताजिकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका और इटली सहित कई अन्य देशों के साथ भी मजबूत सैन्य संबंध हैं। भारत ने G8+5 (आठ+पांच का समूह), IBSA (भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका) और WTO (विश्व व्यापार संगठन) जैसी कई संघों मैक्सिको, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील जैसे अन्य देशों के साथ भी गठबंधन बनाया है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली

मेरा नाम सोनाक्षी राउतराय है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे किताब पढ़ना और नृत्य करना बहुत अच्छा लगता है।

शिक्षा हर मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी है। शिक्षा ही उसे हर काम में सफलता प्रदान करती है। जिस देश की शिक्षा प्रणाली उत्तम होती है वही देश हर तरह से शक्तिशाली बनता है। प्राचीन काल में भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रक्रिया होती थी। गुरुकुल प्रणाली में छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए गाँव और शहरों से दूर गुरु के आश्रम में रहना पड़ता था। वहाँ पर उनको अपना काम खुद करना पड़ता था। यह करने पर उनमें अहंकार की भावना नहीं आती थी और वे आत्मनिर्भर बनते थे।

ब्रिटिश काल में भारत की शिक्षा प्रणाली में काफी बदलाव आया। विज्ञान, गणित और अंग्रेजी जैसे विषयों को लाया गया। यह विषय गुरुकुल में सिखाए जाने वाले विषयों से बहुत भिन्न थे। इस प्रणाली से एक लाभ था कि लड़कियाँ भी शिक्षा लेने लगीं। पर इस प्रणाली से यह नुकसान हुआ कि हम अपने वेदों और उपनिषदों से दूर जाने लगे। जब १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वाधीन हुआ तो सबसे पहले भारत की शिक्षा प्रणाली को बदला गया क्योंकि अंग्रेजी की आधुनिक शिक्षा प्रणाली हमारे देश के लिए अनुकूल नहीं थी। स्वाधीन भारत की शिक्षा समिति ने देश में नए स्कूल, कॉलेज और विश्व विद्यालय स्थापित किए। वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया से भारत को बहुत लाभ हुआ है। वर्तमान शिखा प्रणाली में काई दोष भी पाये गये हैं। विकसित देशों में हर दो वर्ष में पाठ्यक्रम बदला जाता है, जबकि भारत में पुराना पाठ्यक्रम चला आ रहा है।

भारत को यदि विश्व के विकसित देशों में सम्मिलित करना है तो शिक्षा प्रणाली में बड़ा बदलाव लाना पड़ेगा और व्यवहारिक दृष्टि अपनाना होगा।

“अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो, तो सूरज की तरह जलना सीखो।”
डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम

भारत: अगला विश्व गुरु

समिति जैन १२ वर्ष की है और ऑस्टिन, टेक्सास में रहती है। वह उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ती है और ८ वर्ष से हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई है। अपने खाली समय में किताब पढ़ना, कलाकारी करना और नाचना पसंद है। समिति को भारत की भोजन, गाने, और फिल्म पसंद हैं।

भारत पिछले वर्षों में बहुत आगे बढ़ा है और इसमें कोई शक नहीं है कि भारत अगला विश्व नेता बनेगा। भारत ने कई क्षेत्रों में बहुत बड़ा योगदान दिया है जैसे कृषि, कंप्यूटर विभाग और अर्थशास्त्र। दुनिया की १७.७६% जनसंख्या भारत से है और भारत ५वाँ-उच्चतम जी.डी.पी. वाला देश है। अमेरिका, UAE, इजराइल, भूटान, और बांग्लादेश के साथ भारत के रिश्ते बहुत अच्छे हैं। संसार के ४६% लोग भारत को पसंद करते हैं, जहाँ सबसे ज्यादा वोट इजराइल से मिला है। भारत अंतरिक्ष यान को चाँद पर पहुँचाने वाला चौथा देश बना है। भारत ने अपना यान चाँद की दक्षिण दिशा पर पहुँचाया है जो बहुत कठिन है और कभी पहले नहीं हो पाया। भारत ने विज्ञान और तकनीकी के अध्ययन में बहुत काम किया है। भारत ने दुनिया को बहुत तरीकों से प्रभावित किया है जैसे संस्कृति, खाना, गाना, और फिल्म। दुनिया के सब लोग होली और दिवाली के त्योहार मनाते हैं और खूब मजे से खाने और मिठाइयाँ खाते हैं। बॉलीवुड की फिल्में पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। भारत दुनिया का एक बहुत बड़ा देश है और सभी तरह के लोग यहाँ रहते हैं। हर जगह के लोग भारत की संस्कृति को मानते हैं और आदर करते हैं। इन सब वजहों से भारत अगला विश्व नेता बनेगा।

हिंदू धर्म

आरव मल्होत्रा सातवीं कक्षा के छात्र हैं। वे अपने माता-पिता और छोटे भाई के साथ मिलबर्न न्यू जर्सी में रहते हैं। वे पिछले सात वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. से जुड़े हुए हैं। उन्हें अपने खाली समय में किताबें पढ़ना, बोर्ड गेम और वीडियो गेम खेलना पसंद है।

क्या आप जानते हैं हिंदू धर्म क्या है और इसकी शुरुआत कब हुई? कुछ लोगों का मानना है कि इसकी शुरुआत ४५०० ईसा पूर्व सिंधु नदी सभ्यता के दौरान हुई थी, जिसे हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है। आर्य भारत के उत्तरी मैदानों में बसने वाले लोगों का पहला समूह थे जिनकी प्राथमिक भाषा संस्कृत थी। हिंदू धर्म के मूल ग्रंथ जिन्हें वेद कहा जाता है, आर्यों के समय (१५००-५०० ईसा पूर्व) में लिखे गए थे। इस युग को वैदिक युग भी कहा जाता है। हिंदू धर्मग्रंथों की दो मुख्य श्रेणियाँ हैं। श्रुति वह पाठ है जो सुना जाता है, इसमें चार वेद और उपनिषद ग्रंथ सम्मिलित हैं। स्मृति वह पाठ है जो याद रखा जाता है, उनमें रामायण, महाभारत और पुराण आते हैं। हिंदू धर्म कई देवताओं में विश्वास करता है जैसे ब्रह्मा निर्माता हैं, विष्णु संरक्षक हैं और शिव संहारक हैं। हिंदू धर्म पुनर्जन्म के चक्र में विश्वास करता है। हिंदू धर्म के अनुसार सभी जीवित प्राणियों में एक आत्मा होती है जो कर्म के आधार पर पुनर्जन्म लेती है। हिन्दू धर्म अहिंसा में विश्वास रखता है। गंगा हिंदूओं के लिए एक पवित्र नदी है। हिंदूओं का मानना है कि गंगा में पवित्र स्नान करने से उनके पाप धुल जाते हैं और उन्हें अच्छे कर्म प्राप्त करने में मदद मिलती है। हिंदू धर्म दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। हिंदू धर्म में भक्ति, पूजा, ध्यान और योग का अभ्यास किया जाता है। दुनिया भर में कई लोग अब हिंदू धर्म का पालन कर रहे हैं।

भारतीय कूटनीति और विदेशी संबंध

मेरा नाम अनायशा झा है। मुझे पढ़ना और लिखना पसंद है। मैं उच्चस्तर–२ कक्षा में हूँ। मैं कई वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला में पढ़ रही हूँ और मैंने इस यात्रा का भरपूर आनंद लिया है। मैं स्नातक होने के बाद भी इस कार्यक्रम से जुड़े रहने की आशा रखती हूँ।

आज भारत सबसे शक्तिशाली देशों की सूची में १२वें स्थान पर है, जो भारत की पहुँच का स्पष्ट संकेतक है। आज जहाँ वह है वहाँ तक पहुंचने के लिए भारत ने प्रभावी कूटनीति स्थापित की और अंतरराष्ट्रीय संबंध बनाए रखे। यह सब भारत की आजादी के बाद शुरुआती दो दशकों में शुरू हुआ, जहाँ भारत की विदेश नीति काफी हद तक इसके पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू और उनके शिष्य वी.के. कृष्ण मेनन के व्यक्तिगत झुकाव से निर्धारित थी। वे दोनों ब्रिटिश समाजवाद से प्रभावित थे। १९४७-१९६४ के दौरान भारत की विदेश नीति 'गुटनिरपेक्ष' थी, एक ऐसा दृष्टिकोण जहाँ कोई देश किसी भी प्रमुख शक्ति गुट के साथ खुद को संरेखित नहीं करने का विकल्प चुनता है।

सिद्धांत रूप में गुटनिरपेक्षता एक स्वतंत्र और शांतिपूर्ण विदेश नीति को बढ़ावा देती है। लेकिन गुटनिरपेक्षता के पीछे का आदर्शवाद भारत के सुरक्षा हितों और जरूरतों के लिए अच्छा काम नहीं कर सका। यह पूरे १९४७-१९६४ के दौरान दिखाया गया था। इस अवधि के दौरान भारत ने चीन और पाकिस्तान दोनों से अपने क्षेत्र खो दिये।

१९७६ में जब इंदिरा गाँधी ने प्रधान मंत्री पद संभाला तो यथार्थवाद ने भारत के राजनीतिक, राजनयिक और सैन्य हलकों में मजबूती से अपनी पकड़ बना ली थी। इस समय भी भारत गुटनिरपेक्षता की नीति पर हठपूर्वक कायम रहा। १९९१ में जब सोवियत संघ, जो उस समय तक भारत के लिए आर्थिक और सैन्य सहायता का एक प्रमुख स्रोत था, विघटित हो गया, तो सब कुछ बदल गया। सोवियत संघ के विघटन के बाद शीत युद्ध समाप्त हो गया।

यह भारत की रणनीतिक गणना में एक बड़ा व्यवधान था। परिणामस्वरूप, १९९१ का मुद्रा संकट शुरू हो गया। १९९१ मुद्रा संकट तब था जब १९९१ के मध्य में भारत की मुद्रा, रुपये का मूल्य काफी कम होने लगा था। आगे की गिरावट को रोकने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक ने अपने अंतर्राष्ट्रीय भंडार का उपयोग किया। जब ये भंडार लगभग समाप्त हो गए तो प्रमुख विदेशी मुद्राओं की तुलना में रुपये के मूल्य में काफी गिरावट आई। भारत सरकार द्वारा नए उभरते आर्थिक माहौल को तेजी से अपनाने और इस समस्या से निपटने के प्रयास में प्रधान मंत्री नरसिम्हा राव द्वारा राजनयिक पहल "लुक ईस्ट" शुरू की गई थी। इस पहल का उद्देश्य भारत की अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजारों के लिए उदार बनाना और खोलना है। जाहिर है, १९९१ में एक नए भारत के निर्माण की शुरुआत हुई जहाँ आर्थिक और व्यापारिक मामलों पर राज्य का अत्यधिक नियंत्रण अब कोई व्यवहार्य विकल्प नहीं रह गया था। अंततः, "लुक ईस्ट" सफल रहा, और दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र और वैश्विक मंच दोनों में भारत की पहुँच और उपस्थिति का विस्तार हुआ।

"पूर्व की ओर देखो" विदेशी संबंधों और कूटनीति की दुनिया में भारत द्वारा की जाने वाली कई बड़ी प्रगति के पहले कदमों में से एक था। समय के साथ, जैसे-जैसे भारत ने इस क्षेत्र के कई अन्य देशों के साथ अधिक साझेदारियाँ बनाईं, उनके संबंध तीन प्रमुख स्तंभों पर

टिके हुए थे: विस्तृत संस्थागत तंत्र; साझा आर्थिक हित और कनेक्टिविटी। इन तीन स्तंभों का उदाहरण देने वाले विदेशी संबंध का एक उदाहरण रूस के साथ भारत का संबंध है।

यह व्यापक रूप से ज्ञात है कि भारत ने यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के प्रति एक विशिष्ट सार्वजनिक तटस्थता बनाए रखी है। भारत चीन का मुकाबला करने के लिए अमेरिका के साथ भागीदार रहते हुए रूसी आक्रामकता की निंदा करने से परहेज कर रहा है। यह रुख, जिसे "रणनीतिक द्विपक्षीयता" कहा जाता है, भारत के भू-राजनीतिक हितों से प्रेरित है, जो रूस और अमेरिका के साथ संबंधों को संतुलित करना चाहता है। आज तक भारत रूस को एक ऐतिहासिक सहयोगी और सैन्य उपकरणों के मुख्य स्रोत के रूप में महत्व देता है। हालाँकि, देश अपने हथियार स्रोतों में विविधता लाकर रूस पर निर्भरता कम करने का लक्ष्य बना रहा है। रूस की खुले तौर पर आलोचना करने में भारत की अनिच्छा इसलिए है क्योंकि भारत सोचता है कि पश्चिम रूस पर भारत के रुख को भूल जायेगा और चीन का मुकाबला करने पर सहयोग को प्राथमिकता देगा। यह रणनीति अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रति भारत के व्यापक दृष्टिकोण को दर्शाती है, जो अपने मूल मूल्यों पर अपने हितों को प्राथमिकता देती है। भारत का दृष्टिकोण अभी भारत के लिए काम कर रहा है, लेकिन यह देखना बाकी है कि क्या यह भविष्य में काम करेगा। यहाँ हम भारत की बहु -संरेखण नीति का एक उदाहरण देख सकते हैं, जहाँ भारत रणनीतिक तरीके से खुद को कई विश्व शक्तियों के साथ जोड़ रहा है।

स्पष्ट रूप से, भारत अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर स्वतंत्र निर्णय लेने के अधिकार का दावा करते हुए रणनीतिक स्वायत्तता को उच्च महत्व देता है। यह दृष्टिकोण भारत को किसी एक गठबंधन से बंधे बिना विभिन्न देशों के साथ जुड़ने की अनुमति देता है। हाल के वर्षों में, भारत सख्त गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़कर बहु -संरेखण की नीति अपना चुका है। इसमें विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी विकसित करना सम्मिलित है, साथ ही पारंपरिक सहयोगियों और नए भागीदारों दोनों के साथ संबंधों को संतुलित करना भी सम्मिलित है। भारत का दृष्टिकोण निश्चित रूप से अब तक उसके लिए काम कर रहा है, और यह संभव है कि भविष्य में इसके लिए और भी अधिक संभावनाएँ हो सकती हैं। भारत को अभी भी कई बाधाओं से पार पाना है, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण वैश्विक महाशक्ति बनने की राह पर है।

“भारत मानव जाति का उद्गम स्थल, मानव वाणी की जन्मभूमि, इतिहास की जननी, किंवदंती की दादी और परंपरा की परदादी है। मानव इतिहास में हमारी सबसे मूल्यवान और सबसे शिक्षाप्रद सामग्री केवल भारत में ही संग्रहित है।”

मार्क ट्वेन

भारतीय साहित्य एवं काव्य का योगदान

मेरा नाम प्रियांषी गर्ग है। मैं तेरह वर्ष की हूँ और आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और कॉनकॉर्ड, उत्तरी कैरोलिना में रहती हूँ मैं ऑनलाइन हिंदी स्कूल की उच्च स्तर - २ कक्षा में पढ़ रही हूँ। अपने खाली समय में मुझे बुनाई करना, किताब पढ़ना और शहनाई और पियानो बजाना पसंद है।

पहला भारतीय साहित्य रामायण और महाभारत था जो मूल रूप से संस्कृत में लिखा गया था। यह दोनों पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व में लिखे गए थे। इन साहित्य कृतियों के परिचय से मध्यकाल में कन्नड़ और तेलगू साहित्य का विकास हुआ। मध्यकाल गुप्त राज्य के पतन और मुगल राज्य के उदय के बीच में भारत का ऐतिहासिक युग था। हिंदी कविता और साहित्य एक हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। मुस्लिम साहित्यिक परंपराएँ भारतीय संस्कृति का बड़ा हिस्सा हैं क्योंकि मध्यकाल के दौरान, भारत में ज्यादातर मुस्लिम शासकों का शासन था। प्राचीन भारत में सबसे पहली साहित्यिक रचनाएँ वेद थीं जो हिंदू धर्म पर आधारित हैं। बाद में मध्यकालीन युग में भारतीय साहित्य को बहुत सारी भारतीय भाषाओं में नए आयाम (dimensions) मिले जिनमें से कुछ हैं असमिया, बंगाली, गुजराती, कन्नड़ और मराठी। १८५० से १९०० तक का समय वह है जब भारतीय कवि भावुक कवि थे और १९०० से १९४७ तक का समय है जब कवियों ने रूमानियत (romanticism) को सम्मिलित करने का प्रयास किया। भारतीय अंग्रेजी साहित्य का विकास बीसवीं शताब्दी के दौरान हुआ जब ब्रिटिशों ने भारत पर कब्ज़ा कर लिया। यह जल्द ही रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे भारतीय लेखकों और कवियों के लिए रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बन गया। रवीन्द्रनाथ टैगोर, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय और शरत चंद्र चट्टोपाध्याय महान बंगाली लेखक थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर एक कवि भी थे। वह अपने साहित्यिक कार्यों के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय बने। सरोजिनी नायडू, श्री अरबिंदो घोष और कमला दास अन्य प्रसिद्ध लेखक हैं। भारतीय साहित्य और कविता भारतीय इतिहास का बड़ा हिस्सा हैं। भारतीय साहित्य और कविता को पूरे इतिहास में बहुत परिवर्तनों का सामना करना पड़ा, उसके बाद भी इसे आज भी याद किया जाता है। प्रसिद्ध कवियों और लेखकों को आज भी जाना जाता है और उनके कार्यों को मान्यता दी जाती है।

"हम भारतीयों के बहुत आभारी हैं, जिन्होंने हमें गिनती करना सिखाया, जिसके बिना कोई भी सार्थक वैज्ञानिक खोज नहीं की जा सकती थी।"

अल्बर्ट आइंस्टीन

हिन्दू धर्म का दर्शन

मेरा नाम चाहक गोयल है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं उच्चस्तर–२ में पढ़ती हूँ। पिछले कुछ वर्षों में मुझे हिंदी सीखना बहुत पसंद आया है। मैं ऑनलाइन स्कूल में हूँ और टेक्सास में रहती हूँ।

हिंदू धर्म को जानने के लिए आपको भारत के प्राचीन दर्शनों के बारे में जानना जरूरी है। इस लेख में हम भारत में पनपे छः दर्शनों की बात करेंगे। यानी इस बात में भी संदेह नहीं कि दुनिया में पहुंचे दर्शन शास्त्र की उद्भव स्थली भारत ही है। भारत में प्रचलित ये छः दर्शन इस प्रकार हैं-

१. सांख्य दर्शन
२. योग दर्शन
३. न्याय दर्शन
४. वैशेषिक दर्शन
५. मीमांसा दर्शन
६. वेदान्त दर्शन

हिंदू परंपरा का मूल ही ईश्वर विश्वास है। यही वजह है कि आज भी दर्शन शास्त्र का मूल स्त्रोत ये ही छः दर्शन माने जाते हैं।

सांख्य दर्शन को सबसे अधिक सम्मान इसलिए मिला क्योंकि यह सबसे रहस्यमय प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम था। जैसे कि प्रकृति और मनुष्य के बीच संबंध और कारण और प्रभाव का सिद्धांत।

योग दर्शन को आमतौर पर महर्षि पतंजलि से जोड़ा जाता है क्योंकि योग से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने पुष्य मित्र श्रृंग के काल में अष्टांग योग को पुनर्स्थापित करके किया था। अष्टांग योग पूर्व लिखित उपनिषदों और वैदिक ज्ञान पर आधारित है।

न्याय दर्शन: महर्षि गौतम ने इस दर्शन शास्त्र की रचना की थी जिसमें न्याय की परिभाषा और न्याय करने की पद्धति का स्पष्ट वर्णन है। सबसे महत्वपूर्ण विषय है जय और पराजय के सिद्धांतों को समझाना जिसे बहुत व्यवहारिक तरीके से महर्षि गौतम ने इस दर्शन मे समझाया है।

वैशेषिक दर्शन: भौतिक जगत और आज के युग में इस दर्शन का विशेष महत्व है। इस दर्शन में उन्होंने धर्म को सही मायने में समझाया है। यह दर्शन भी परमात्मा को सर्वोच्च सत्ता मानता है।

मीमांसा दर्शन: राष्ट्र के प्रति हमारे क्या कर्तव्य होने चाहिए जैसे महत्वपूर्ण सिध्दांतों का प्रतिपादन ये महान दर्शन करता है।

वेदान्त दर्शन: यह दर्शन ब्रह्म और जीव के भेद को स्पष्ट करता है। इस दर्शन में ब्रह्म को जगत का कर्ता-धर्ता व संहारकर्ता माना जाता है।

"भारत में बीस लाख देवता हैं और हम उन सभी की पूजा करते हैं। धर्म की दृष्टि से अन्य सभी देश कंगाल हैं; भारत एकमात्र करोड़पति है।"

मार्क ट्वेन

भारतीय शिक्षा प्रणाली

नमस्ते, मेरा नाम ओजस श्रीवास्तव है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं साउथ ब्रंसविक, न्यूजर्सी, हिंदी पाठशाला से वर्ष २०२३ में स्नातक हुआ हूँ। अब मैं हिंदी यू.एस.ए. ऑनलाइन पाठशाला के उच्चस्तर-२ कक्षा में कविता प्रसाद जी के साथ युवा स्वयंसेवक के रूप में कार्य कर रहा हूँ।

मैं अमेरिका में जन्मा और पला बड़ा हूँ, किंतु मेरे माता पिता भारत से हैं। मैं उनसे जब भी अपनी पढ़ाई लिखाई की बातें करता हूँ तो भारत और अमेरिका की शिक्षा प्रणाली का अंतर महसूस करता हूँ। अपने तेरह वर्ष के जीवन के पिछले दशक में मैंने अमेरिका में रहते हुए भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के मानकों को समझा है। फ़िल्में देखने से लेकर, समाचार देखने तक, और मेरे परिजनों के अनुभवों को देख सुनकर मैं भारतीय शिक्षा की प्रतिस्पर्धात्मकता से अवगत हुआ हूँ। IPS/IAS/IES बनने के लिए लोगों को हर विषय की बहुत गहराई में पढ़ाई करनी पड़ती है। केवल किताबी ज्ञान ही नहीं अपितु व्यावहारिक ज्ञान की भी जानकारी और समझ होनी होती है। मेरे मौसाजी भी IAS and Allied services में थे, इसलिए मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि इन लोगों से किन मानकों की अपेक्षा की जाती है। मेडिसिन और आईटी उद्योग भी अत्यधिक प्रतिस्पर्धी क्षेत्र हैं। मेडिकल और ईंजीनियरिंग कॉलेजों की प्रवेश परीक्षा को उत्तीर्ण करना भी बहुत कठिन होता है। प्रवेश परीक्षा एक ऐसी साधना है जिसका अध्ययन व्यक्ति को वर्षों पहले से शुरू करना पड़ता है। इन सभी क्षेत्रों में जो लोग प्रवेश पाते हैं वे देश के सबसे प्रतिभाशाली छात्रों में गिने जाते हैं। ये प्रतिभाशाली छात्र आगे चलकर भारत का मान हर क्षेत्र में बढ़ाते आ रहे हैं। इस कारण से मैं भारतीय शिक्षा प्रणाली से बहुत ही प्रेरित हुआ हूँ।

भारतीय आभूषण और वेशभूषा

मेरा नाम रीसा वोहरा है। मैं साउथ ब्रंसविक पाठशाला की मध्यमा–१ कक्षा में पढ़ती हूँ। मेरी नानी जी ने इस विषय के बारे में समझाते हुए मुझे इसका महत्व बताया। मुझे भारतीय गहने और पोशाक दोनों बहुत पसंद हैं। जब मैं इन्हें पहन कर सुंदर दिखती हूँ तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। भारतीय नारी की पहचान उसकी वेशभूषा और आभूषणों से है। माथे पर चमकती बिंदिया, चूड़ियों की खनक और पैरों में पायल की छनक, ये सब एक भारतीय महिला की पहचान हैं। मेरी नानी, शमा अरोड़ा जी, कविता लेखन में भी रुचि रखती हैं। उनकी लिखी कविता के कुछ अंश इस प्रकार हैं —

लहंगा चोली चुनरी और साड़ी में जब वो सजती है,
भारत की सभ्यता और संस्कृति तब झलकती है।
ये भारत की नारी है, हाँ भारत की नारी है!!
यहाँ का आभूषण और वेशभूषा सब पर पड़ता भारी है।
अब तो भारत की वेशभूषा की दुनिया के कोने-कोने में जानकारी है।
ये भारत की नारी है, हाँ भारत की नारी है!!

Sharad & Shashi Agarwal
☎: (718) 473-6281
Travel Make Easy
OCI, VISA,
AIR TICKETS, & TOURS
PASSPORT RENEWAL SERVICE
AT NOMINAL SERVICE FEE
SN TRAVEL & TOUR, INC.
290 Benjamin Avenue,
Iselin, NJ 08830
(732) 283-0566 ▪ (718) 639-9700
sharad@sntravel.net
www.sntravel.net
www.avisanyc.com
OCI
VISA
RENEWAL
TICKETING
NOTARY
WASHINGTON DC,
NAIGRA FALL
BUS TOUR

हिंदी यू.एस.ए. भारत-यात्रा

चेतना मल्लारपु

भारत की विशाल सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर से बच्चों का प्रत्यक्ष परिचय

माणक काबरा

हम हिंदी यू.एस.ए को धन्यवाद देते हैं कि इस बार की भारत यात्रा के लिए संरक्षक के रूप में हमारा चुनाव किया। १३ विद्यार्थियों के साथ हमारी १८ दिन की शिक्षात्मक यात्रा हर तरह से बहुत ही सफल रही, वह चाहे वहाँ की पाठशालाओं में जा कर कार्यक्रम करना हो, या कवियों के साथ कविताएँ सुनाना हो। इस बार दिल्ली में कुछ दिनों के लिए देवेंद्र जी, रचिता जी और राज जी का हमारे साथ होना सोने पर सुहागा जैसा था। राज जी के अनुभव और मार्ग दर्शन से ये यात्रा और भी आसान हो गयी थी।

एयरपोर्ट पर – सभी तैयार हैं न?

भारत बुला रहा है! उड़ान भरने की प्रतीक्षा

यात्रा का आरंभ, प्यार भरे स्वागत के साथ। दिल्ली में मालाओं के साथ शानदार स्वागत! अब यादें बनाने की बारी।

संस्कृतियों का संगम: सीसीए और के.आर. मंगलम स्कूलों में मित्रता और सीख का जन्म

मेरा नाम आशी जिंदल है। मैं नौवीं कक्षा में हूँ और हिंदी यू.एस.ए. के लिए स्वयंसेवा का यह मेरा दूसरा वर्ष है। हमने हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से १६ दिसंबर, २०२३ से २ जनवरी, २०२४ तक भारत का दौरा किया। पूरे १८ दिन की यात्रा के दौरान हमने ८ अलग-अलग भारतीय शहरों का दौरा किया।

मुझे CCA और K.R. मंगलम पाठशालाओं का हमारा दौरा सबसे अच्छा लगा क्योंकि हमें भारतीय छात्रों के साथ बातचीत करने का अवसर मिला और यह देखकर अच्छा लगा कि उनकी शिक्षा अमेरिका में हमारी शिक्षा की तुलना में बहुत अलग थी। हमारे पास एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम था, जिसमें दोनों पाठशालाओं ने प्रदर्शन के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। हमने कविताएँ, नृत्य, गीत प्रस्तुत किए और एक नुक्कड़ नाटक भी किया। अन्य पाठशालाओं के अद्भुत नृत्य और संगीत प्रदर्शन को देखकर भी बहुत अच्छा लगा। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के बाद, छात्रों ने हमें अपने स्कूल का दौरा कराया। दोनों पाठशालाओं में पश्चिमी नृत्य और भारतीय नृत्य दोनों के लिए अलग-अलग कक्षाएँ थीं, और CCA में एक 3-डी प्रिंटर और 3-डी प्रोजेक्टर वाला एक सभागार भी था। KR मंगलम के पास वॉलीबॉल कोर्ट भी है, साथ ही एथलेटिक्स के लिए काफी बड़ा मैदान भी है। दौरे के बाद, CCA में छात्रों ने हमें खो-खो खेलना सिखाया और हमारे खिलाफ एक दोस्ताना मैच भी खेला। कुल मिलाकर, दोनों पाठशालाओं की यात्रा बहुत यादगार। यह यात्रा बेहद मज़ेदार और फायदेमंद अनुभव थी। १६ दिनों में, मैं अपने साथी यात्रियों के साथ जुड़ी रही और पूरी तरह से नए दृष्टिकोण से भारत का अनुभव किया। इस यात्रा ने मुझे अधिक परिपक्व और स्वतंत्र व्यक्ति भी बनाया और मैंने भारतीय संस्कृति और इतिहास के बारे में बहुत कुछ सीखा।

स्वर्ण मंदिर, वाघा बॉर्डर और काशी विश्वनाथ: एक अद्भुत भारत यात्रा

मेरा नाम अस्मी जैन है और मैं नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं पिछले वर्ष हिंदी यू.एस.ए. से स्नातक हो गयी थी और अब मैं एक युवा स्वयंसेवक हूँ। मुझे नाचना और चित्रकारी करना बहुत पसंद है।

मुझे अमृतसर सबसे ज्यादा पसंद आया क्योंकि हमने स्वर्ण मंदिर और वाघा बॉर्डर दोनों का दौरा किया। स्वर्ण मंदिर अत्यंत सुंदर था और एक धार्मिक अनुभव था। वाघा बॉर्डर भारत के लिए देशभक्ति से भरा एक अनुभव था और एक दिलचस्प प्रदर्शन था। धक्का-मुक्की करना एक नया अनुभव था। एक गहन अनुभव के बाद आखिर २४ दिसंबर को हमने बनारस में काशी विश्वनाथ मंदिर का दौरा किया। हम बस से बाहर निकले और हमें सूचित किया गया कि मंदिर के आसपास मोटर वाहनों की अनुमति नहीं है और हमें शेष दूरी पैदल करनी होगी। जैसे ही हम बस से बाहर निकले और मंदिर की ओर जाने वाली सड़क पर प्रवेश किया तो गीता जयंती के वजह से भारी भीड़ दिखी । यह देखकर हम सभी ने एक दुसरे का हाथ थामा और भीड़ के बीच से निकल गए। इस एक मंदिर के दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हजारों लोग के बीच ढाई घंटे तक खड़े रहना पड़ा। फिर हमें हमारी सेना का एस्कॉर्ट मिल गया, और हमें मंदिर में ले जाया गया। मंदिर में प्रवेश करते ही हमें लंबी लाइन छोड़कर मुख्य शिवलिंग के दर्शन करने को मिले। बाद में हमें अन्नपूर्णा मंदिरों को देखने और दोनों मंदिरों से प्रसाद प्राप्त करने का अवसर मिला। यह एक ऐसा अनुभव था जिसे मैं जीवन भर याद रखूँगी और इस धार्मिक स्मारक को इतने करीब से देखने का अवसर हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से पाकर मैं बहुत आभारी हूँ। एक लाभ जो मुझे इस यात्रा से मिला है की मैं अब अलग- अलग स्थितियों में समायोजित कर पाती हूँ । इस यात्रा में बहुत से ऐसे वक्त थे जब हमें पता नहीं था की क्या होने वाला है या हम घर कब पहुँचेंगे। अंतिम में इस यात्रा ने मुझे सिखाया की अज्ञात से डरना नहीं चाहिए।

पंद्रह यात्री, एक परिवार: दोस्ती, मस्ती और यादों का खजाना

मेरा नाम आर्याही शर्मा है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एडिसन पाठशाला में उच्यस्तर-१ पढ़ती हूँ। इस यात्रा पर हमने बहुत सारी सुन्दर-सुन्दर जगह देखीं पर मेरी सबसे मनपसंद जगह वाघा बॉर्डर थी। अंदर कदम रखते ही हम सभी में देश भक्ति की भावना जाग उठी। वाघा बॉर्डर पर सभी लड़कियों ने राष्ट्र भक्ति के गीतों पर नाच गाना भी किया। वहाँ पर हम सिपाहियों से भी मिले और भारत और पाकिस्तान की बॉर्डर को भी देखा। यह सब देख कर हम सभी को अपने भारत पर गर्व हुआ। इस यात्रा के माध्यम से मैं बहुत लोगों से मिली। मेरे कोई भाई बहन नहीं है तो मुझे इतने सरे बच्चों के साथ रहकर एक अलग ही अनुभव मिला। इस यात्रा की पहली मीटिंग में हम सब अलग-अलग खड़े थे। लेकिन इस यात्रा के अंत में हम सभी एक दूसरे के साथ घुल मिल गए थे। पहले दिन में हम सब बस में अलग-अलग और चुप चाप बैठे थे। पर जैसे समय बीतता गया बस हमारा दूसरा घर बन गया। हमारा आधे से ज्यादा समय बस में बीतता था और हम बस में गाना गाते, नाचते, उछल कूद करते, और कभी-कभी झगड़ते भी थे। हमारे साथ-साथ माणक अंकल और चेतना आंटी भी बच्चे बन जाते थे। एक तरीके से हम सभी पंद्रह यात्रियों का एक परिवार बन गया था और हमेशा बना रहेगा।

जलियाँवाला बाग

गंगा नदी की गोद में: एक अविस्मरणीय भारत यात्रा

मेरा नाम दिया सचदेवा है। मैं नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और पिस्काटावे हिंदी विद्यालय के मध्यमा-३ में स्वयंसेवक हूँ।

भारत यात्रा में मुझे गंगा आरती सबसे अच्छी लगी। हमने गंगा नदी में नाव से सुन्दर आरती देखी। वहाँ का माहौल इतना खूबसूरत और प्रभावशाली था कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए। गंगा आरती देखने से मुझे अपनी जड़ों और संस्कृति से जुड़ाव महसूस हुआ। इस यात्रा से मुझे जो एक अद्भुत स्मृति प्राप्त हुई वह थी गंगा नदी की सुंदर आरती देखना। गंगा आरती बहुत सुंदर और मनमोहक थी। मैं बहुत आभारी हूँ कि हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से मैं इस सुंदर आरती के दर्शन कर सकी। हमें नावों में बिठाकर गंगा के अलग-अलग घाटों पर ले जाया गया। इतने सारे लोगों को एक साथ शामिल होते और गंगा माँ के जयकार लगाते देखना बहुत सुंदर था। मुझे अपने जीवन में गंगा आरती जैसा अनुभव पहले कभी नहीं हुआ था। इतने सारे लोगों के दैनिक जीवन में गंगा को जल स्रोत के रूप में उपयोग करते देखना आश्चर्यजनक था। गंगा नदी के पवित्र जल ने मुझ पर जीवन बदलने वाली छाप छोड़ी। मुझे हिंदी यू.एस.ए. की मदद से इस अनुभव को आपके साथ बांटने में बहुत खुशी हो रही है। मेरी यह भारत यात्रा अन्य यात्राओं से बिल्कुल अलग थी। इस यात्रा में मेरे माता-पिता मेरे साथ नहीं थे जिससे मुझे बहुत आत्मविश्वास मिला। इस यात्रा ने मुझे अपनी और अपने सामान की जिम्मेदारी भी लेनी सिखाई। इस यात्रा के कई लाभ थे, जिनमें से एक लाभ आजीवन मित्रता बनाने का था। मुझे लगता है कि भारत यात्रा के दौरान बनी मेरी दोस्ती जीवन भर बनी रहेगी क्योंकि हम सब ने मिलकर अद्भुत भारत यात्रा का अनुभव किया।

मित्रों के साथ भारत: राम मंदिर दर्शन, राजस्थानी संस्कृति, और स्वादिष्ट भोजन

मेरा नाम ओजस श्रीवास्तव है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं साउथ ब्रंसविक, न्यूजर्सी, हिंदी पाठशाला से वर्ष २०२३ में स्नातक हुआ हूँ। अब मैं हिंदी-यू.एस.ए ऑनलाइन पाठशाला में स्वयंसेवक के रूप में कार्य कर रहा हूँ।

मुझे "राम लल्ला विराजमान" के दर्शन करना सबसे अच्छा लगा क्योंकि हम उन कुछ सौभाग्यशाली लोगों में से थे जो राम मंदिर के ५०० साल लंबे संघर्ष के अंतिम पड़ाव के साक्षी बन पाये। हमने बाबा मौर्य के माध्यम से राम लल्ला विराजमान के दर्शन किये। बाबा मौर्य राम जन्मभूमि आंदोलन के कर्मठ सिपाही रहे हैं । "राम लल्ला आएँगे, मंदिर वहीं बनायेंगे", उन्हीं का दिया हुआ नारा था। उनके साथ राम लल्ला का दर्शन एवं आरती करना ऐसा था मानो स्वयं राम दूत हनुमान जी ही हमें वहाँ लेकर गये हों। यह मेरे लिए एक बहुत ही सुःखद अनुभूति थी।

जयपुर में चोखी ढाणी इस यात्रा की सबसे रोचक जगहों में से एक थी। मैं वहाँ दाल बाटी चूरमा का स्वाद चखने के लिए अत्यंत उत्साहित था। खाना ज़्यादातर सभी लोगों के लिए काफ़ी तीखा था, पर मुझे आश्चर्य हुआ जब काव्या खाने के साथ हरी मिर्च खा रहीं थीं। सभी यात्रियों ने ढेर सारा भोजन लिया और प्रत्येक व्यंजन घी से तर था। स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेने के के बाद हम लोग वहाँ लगे मेले को देखने निकल पड़े। हमने लोक नर्तकों के साथ नृत्य किया, झूले पर खूब झूला, और बहुत कुछ खेला। हमने राजपूत योद्धाओं की मूर्तियाँ भी देखीं। वहाँ कई मंदिर थे और हमने राजस्थान की संस्कृति के बारे में बहुत कुछ देखा और सीखा। हम इतना मज़ा कर रहे थे कि हमें समय का पता ही नहीं चला और हम मेले में खो गए थे। मैंने वहाँ पर पहली बार मीठा पान खाया था। यह मेरे लिए सबसे मनोरंजक स्थान था।

मेरी यह भारत यात्रा पिछली भारत यात्राओं से अलग थी क्योंकि आमतौर पर, मैं अपने माता-पिता के साथ केवल एक या दो स्थानों पर ही जा पाता हूँ। यह मेरी अपनी उम्र के बच्चों के साथ पहली यात्रा थी। आरंभ से लेकर अंत तक मेरे लिये सब कुछ कर पाना कठिन सा लग रहा था, पर मित्रों के साथ मस्ती, चेतना जी और माणक जी के स्नेह भरे मार्गदर्शन, सबके साथ नई जगहों को देखना, कई तरह का भोजन, और बस में यात्रा ने इसको बहुत आनंद दायक और रोचक बना दिया।

बाबाजी मौर्या के साथ राम मंदिर: इतिहास, संस्कृति, और प्रेरणा

मेरा नाम काव्या सिंह है। मैं १५ वर्ष की हूँ और मैं दसवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला में पिछले २ वर्ष से युवा कार्यकर्ता हूँ।

भगवान राम की जन्मभूमि जाकर मुझे बहुत ही अलग अनुभूति हुई। मुझे बहुत अच्छा लगा कि भारत सरकार ने न केवल राम मंदिर बनवाया, बल्कि अयोध्या का भी बहुत विकास किया। मंदिर में आरती करने के बाद मेरी आँखों में आँसू आ गए। ऐसा अनुभव मुझे पहले कभी नहीं हुआ था। यह चमत्कार तो बस अयोध्या में ही संभव है। हमारे लिए बहुत गर्व की बात है की हम राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के पहले राम मंदिर देख पाए। मंदिर के बाहर हमने कलाकारों को काम करते हुए देखा। राम मंदिर सीमेंट से नहीं बना है, लेकिन सारे स्तम्भ एक दूसरे से इंटरलॉकिंग सिस्टम से जुड़े हुए हैं। हालांकि हमें सदियों तक अपनी संस्कृति, धरती, और धर्म के लिए लड़ना पड़ा, हमें इस मेहनत का फल भगवान श्री राम जी की दया से मिला है।

बाबाजी मौर्या ने हमें सिखाया कि बुढ़ापे में भी हम स्वस्थ रह सकते हैं! वे बहुत तेज़ी से चलते हैं और हम सब को उनकी तरह चलना बहुत कठिन लगा। उन्होंने हमें राम मंदिर के इतिहास के बारे में बहुत कुछ बताया। बहुत लोग अपने जीवन में अयोध्या कभी नहीं देखते हैं, लेकिन हमें इतनी छोटी उम्र में देखने को मिला। बहुत लोग हैं जिन्होंने राम मंदिर कि लड़ाई में अपनी जान दे दी थी, और बाबाजी ने भी कुछ प्रिय मित्र खोये।

इस यात्रा का महत्वपूर्ण लाभ है कि हमें अपने देश से जुड़ने का अवसर मिला और हमने भारतीय संस्कृति और हिन्दी को विदेश में जीवित रखने के बारे में सीखा। भारत के राज्यों में अनेकता है, लेकिन इस से ही भारत में एकता बनी रहती है। भारत सदा से ही मेरे लिए बहुत माननीय देश रहा है लेकिन इस यात्रा के बाद से मैं भारत की संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान, धर्म और अपनी जड़ों से और भी ज़्यादा जुड़ गई हूँ।

जलियाँवाला बाघ: इतिहास का गवाह, देशभक्ति का अनुभव

मेरा नाम रिथ्विक अग्रवाल है और मैं वूडब्रिज हिन्दी पाठशाला में स्वयंसेवक हूँ। मैं पिछले ५ वर्षों से स्वयंसेवक हूँ। मुझे शतरंज खेलना और शहनाई बजाना बहुत पसंद है।

मेरा मनपसंद शहर अमृतसर था। अमृतसर में मुझे जलियाँवाला बाग सबसे अच्छा लगा।

जलियाँवाला बाग में भारतीय इतिहास का एक अलग पहलू देखने को मिलता है। इस ऐतिहासिक स्थान पर मुझे बहुत सी छोटी-छोटी बातें अच्छी लगी। वहाँ के वातावरण ने यह बात स्पष्ट कर दी कि भारत के स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत को स्वतंत्र देश बनाने के लिए कितनी मेहनत की। भारत की आजादी में लाखों मासूम लोग मारे गए। हमारे दैनिक जीवन में हमें इसका एहसास नहीं होता होगा परंतु जलियाँवाला बाग में ऐसे विचार मेरे दिमाग में बार-बार घूमते रहे। मैं यह सोचता रह गया कि उस मैदान में लोग डर के मारे कैसे भाग रहे थे और कुएँ में कितने लोगों की लाशें पड़ी होंगी। जलियाँवाला बाग के प्रभाव के कारण देशभक्ति की भावना मेरे हृदय में हमेशा रहेगी।

दूसरी भारत यात्राओं में मैं हमेशा अपने परिवार से मिलने जाता हूँ परंतु इस यात्रा में अपनी संस्कृति से जुड़ पाया। और तो और, मैंने हमारे इतिहास के बारे में बहुत कुछ सीखा। यह यात्रा अनोखी थी और ये अनुभव दूसरी यात्राओं में नहीं मिल सकते हैं। यह यात्रा और यात्राओं से भिन्न है क्योंकि इस यात्रा में भारत की सुंदरता देखने को मिलती है। मुझे समझ में आया कि भारत को सोने की चिड़िया क्यों कहते हैं।

वाघा बॉर्डर

हाथी गाँव और रिक्शा का रोमांच: भारत यात्रा की यादें

मेरा नाम मिहिका दाते है और मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे बुनाई, नृत्य करना, और यात्रा करना पसंद है। जानवरों के प्रति मुझे बहुत लगाव है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ में पढ़ती हूँ।

मेरी सबसे मनपसंद जगह का नाम जयपुर का हाथी गाँव है। वहाँ हम सभी ने हाथियों के साथ फोटो खिचवायें, उनको हाथ लगाया, उनके शरीर पर चित्रकारी की, उनको नहलाया, सवारी की, और खाना खिलाया। हाथियों को इतने गौर से मैंने पहली बार देखा था।

रिक्शा की यात्रा बहुत मजेदार रहती थी। बनारस में जब हम गंगा आरती के लिए निकले तब हमें पता चला कि रास्ते इतने ऊबड़ थे की हम बोल भी नहीं पा रहे थे। वहाँ जाते समय हमारे ड्राइवर ने एक शॉर्टकट लिया जहाँ रास्ता ही नहीं था। सीधा नब्बे औंस की ढलान लेकर हम दूसरे रास्ते पर पहुँच गए। सबको रोलर कोस्टर की याद आयी।

यह यात्रा दूसरों से अलग थी क्योंकि मैं बच्चों के साथ गयी थी, अपने माता-पिता के साथ नहीं। इससे पहले मैंने कभी अकेले यात्रा का अनुभव नहीं किया था। मैंने कई महत्वपूर्ण स्मारकों का भी दौरा किया और महत्वपूर्ण लोगों से मुलाकात की जैसे की उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ज़ी से राजभवन में मुलाक़ात, अयोध्या में बाबा मौर्य जी से बातें की। इस यात्रा के कई लाभ हैं- मेरा खुद पर विश्वास हुआ की मैं कुछ दिन परिवार से दूर रह सकती हूँ, मुझे अच्छे दोस्त भी मिले।

हिंदी यू.एस.ए के साथ भारत दर्शन: एक अविस्मरणीय अनुभव

मेरा नाम रिद्धि राजपाल है। मैं बोरडनटॉऊन हाई स्कूल में दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैं चेस्टरफ़ील्ड हिंदी यू.एस.ए पाठशाला से हिंदी स्नातक हूँ और अभी मैं हिंदी यू.एस.ए से एक स्वयंसेविका के रूप में जुड़ी हुई हूँ।

अभी हाल ही में मुझे १२ अन्य हिंदी यू.एस.ए विद्यार्थियों के साथ हिंदी यू.एस.ए के माध्यम से शैक्षिक भारत यात्रा जाने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं यह कह सकती हूँ की यह यात्रा न केवल अभी तक की सभी पिछली भारत यात्राओं, पर अभी तक की सब जगहों की यात्राओं से अनोखी एवं सर्वश्रेष्ठ यात्रा थी। वैसे तो हमारी पूरी यात्रा बहुत ही रोमांचित एवं भारत के बारे में ज़ान देने वाली रही, और हमने बहुत सारे धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सरकारी स्थानों का भ्रमण किया। यह सभी स्थान बहुत ही दिलचस्प थे जिनके बारे में उल्लेख करना एक सूरज को दिया दिखाने जैसा होगा क्योंकि हर एक स्थान अपने आप में बहुत सारी विशेषताएं रखते है।

मंत्री जी से मुलाकात और वृन्दावन की अनोखी बस यात्रा

मेरा नाम नमन अरोड़ा है। मैं हिंदी विद्यालय संगठन का अत्यंत गौरवान्वित सदस्य हूं। मैं पिछले दस वर्षों से हिंदी स्कूल का हिस्सा रहा हूँ। पिछले दो वर्ष से मैं छोटे बच्चों को हिंदी पढ़ा रहा हूँ। मुझे सबसे अच्छा तब लगा जब हम लखनऊ के मंत्री जी से मिलने गये। यह एक बहुत ही दिलचस्प अनुभव था। यह यात्रा का मेरा पसंदीदा हिस्सा था क्योंकि हम मंत्री से अपने सभी प्रश्न पूछने में सक्षम थे। हमें न केवल यह नया ज्ञान उपहार में दिया गया, बल्कि हमें नवनिर्मित राम मंदिर की प्रतिकृतियां भी उपहार में मिलीं। मेरी भारत यात्रा की एक बहुत ही यादगार घटना थी वृन्दावन की बस यात्रा। बस ड्राइवर ने ग़लत मोड़ ले लिया, इस वजह से यात्रा चार घंटे से आठ घंटे तक चली गई। भले ही हमने सड़क पर दोगुना समय बिताया, लेकिन हमने कई यादें बनाईं। गंतव्य की तरह सड़क यात्रा भी उतनी ही मजेदार थी। हमने कई गाने गाए और बस में डांस भी किया। हम आइसक्रीम और स्ट्रीट समोसे जैसे कई प्रकार के खाद्य पदार्थों के लिए रुके। हम सब ने अपने बारे में एक दूसरे को बताया और इससे मुझे नए दोस्त बनाने का मौका मिला। इस यात्रा से एक फायदा यह हुआ कि मैं अपने आप को अपनी संस्कृति से बेहतर तरीके से जोड़ पाया। इससे मुझे अपनी जड़ों को समझने और अपनी भारतीय विरासत पर गर्व करने में मदद मिली।

समाचार साक्षात्कार और स्वर्ण मंदिर का आकर्षण: भारत यात्रा की यादगार झलक

मेरा नाम आदित्य खुराना और मैं मूरेस्टोन, न्यू जर्सी में रहता हूँ। मैं १५ वर्ष का हूँ और दसवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मैं दस वर्ष से हिंदी यू. एस. ए. से जुड़ा हूँ और २ वर्ष से एक युवा स्वयंसेवक हूँ।

भारत यात्रा में समाचार साक्षात्कार का एक अनोखा ही अनुभव था। साक्षात्कार कर्ताओं ने हमसे भारत और अमेरिका में होने वाले गतिविधियों की तुलना पर प्रश्न पूछे जिसने हमें रोज़मर्रा की बातों से आगे बढ़कर सोचने का और अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर प्रदान दिया। हमने उनके स्टूडियो के बारे में भी जाना और उनके दैनिक संचालन के बारे में प्रश्न पूछने का मौका मिला।

इस यात्रा में सिखों का पावन धार्मिक स्थल या प्रमुख गुरुद्वारा, स्वर्ण मंदिर, मेरा प्रिय आकर्षण था। यह भारत के पंजाब राज्य के अमृतसर शहर में स्थित है। गुरुद्वारे के बीचों बीच अमृत सरोवर है। वहाँ प्रवेश करने से पहले हमने सर झुकाया और फिर पैर धोने के बाद ऊपर गये। पूरा मंदिर सफेद संगमरमर से बना हुआ है और इसका बाहरी हिस्सा सोने का बना हुआ है, दीवारों पर सोने की पत्तियों से नक्काशी की गई है। हम स्वर्ण मंदिर में रात के समय गये थे, जब सोना बहुत चमक रहा था और रोशनी की बहुत सुंदर व्यवस्था थी। इसकी सुंदरता अद्वितीय है। वहाँ पूरे दिन बहुत मनमोहक गुरबाणी की स्वर लहरिया गूंजती हैं।। मुझे वहाँ के लंगर में रोटी, सब्जी, और दाल बहुत स्वादिष्ट लगी। भारत यात्रा पर जाकर मैंने अपनी हिंदी विरासत और संस्कृति के बारे में बहुत कुछ सीखा। और साथ ही में आजीवन दोस्त और यादें बनाईं हैं। मैं इस यात्रा को हमेशा याद रखूंगा और यह मेरे दिल के बहुत क़रीब रहेगी।

अमेरिका में हिंदी पढ़ने वाले बच्चे सांस्कृतिक धरोहर जानने आएंगे भारत, राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री से भी मुलाकात संभव

संसद का दौरा कर लोकतांत्रिक व्यवस्था के बारे में जानकारी लेंगे, 17 से 20 दिसंबर तक कई मंदिरों, सांस्कृतिक स्थलों पर जाएंगे

अमेरिका में 26 हिंदी पाठशाला चला रही हिंदी-यूएसए संस्था

स्वर्ण मंदिर का अद्भुत अनुभव: शांति, सकारात्मकता और स्वादिष्ट भोजन

मेरा नाम वेदांत बांगड़ है। मैं तेरा वर्ष का हूँ और मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी यू. एस. ए. से मोनरो हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ में पढ़ता हूँ। मुझे तबला बजाना, शतरंज खेलना, किताबें पढ़ना और नई जगह घूमना बहुत अच्छा लगता है। मैंने पूरी भगवद् गीता के ७०० श्लोक नौ वर्ष की उम्र में याद किए और इसलिए मेरा नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में है।

मुझे स्वर्ण मंदिर सबसे अच्छा लगा क्योंकि वहाँ का वातावरण बहुत सुन्दर और अद्भुत था। हमने रात को स्वर्ण मंदिर देखा था तो पानी में मंदिर की परावर्तन आ रही थी। मंदिर का स्थान लाइट से चमक रहा था। वहाँ की ऊर्जा बहुत सकारात्मक थी और वहाँ का वातावरण बहुत शांत था। मंदिर का यह नियम है की जो वहाँ जाएगा उसे अपने सिर को ढकना पढ़ेगा। मंदिर के आसपास गुरु ग्रन्थ साहिब का पाठ चल रहा था और ये चौबीस घंटे चलता है। मंदिर देखने के बाद, हमने लंगर में खाना खाया था। बहुत ही स्वादिष्ट खाना था कि आप को लगेगा की अपना घर का खाना है। वहाँ पर बहुत सारे स्वयंसेवक थे और मंदिर के आसपास की जगह बहुत साफ था। स्वर्ण मंदिर मुझे बहुत सबसे अच्छा लगा।

इस यात्रा में मेरे लिए यह घटना बहुत ही मनोरंजक और स्मरणीय है जब हम जयपुर और अमृतसर गए थे। वहाँ हम खरीददारी करने गए और हमने उधर मोल-तोल किया। यह बहुत मनोरंजक था क्योंकि मैंने पहली बार खुद से खरीदारी और मोल-तोल किया। हमने कपड़े और जूते मोल-तोल कर सही कीमत में ख़रीदे थे। पहली बार का अनुभव सबसे मनोरंजक और स्मरणीय होता है और ऐसा ही हुआ।

चांदनी चौक का स्वाद: दिल्ली यात्रा का असली अनुभव

मेरा नाम रिया गुप्ता है। मैं दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ और वेस्ट विंडसर प्लेन्सबोरो हाई स्कूल साउथ में पढ़ती हूँ। मैं इस समय हिंदी सीखने के अपने अंतिम वर्ष में हूँ।

दिल्ली के चांदनी चौक के धक्के नहीं खाये, वहाँ नहीं घूमे और सड़कों पर नहीं खाया तो दिल्ली जाना बेकार ही है तो आइये कुछ खाते पीते हैं।

जितना मजा हमें भारत दर्शन करने में आया, हम आशा करते है उससे भी ज्यादा आनंद आप सभी पाठकों को हमारे अनुभव पढ़ने में आएगा। जय हिन्द, जय भारत, भारत माता की जय

साहस और संकल्प की कहानी - एक साक्षात्कार

पर्वतारोहण

सोचिए, कैसा लगेगा कि हम अपनी खुली आँखों से वह मंजर देख पाएँ जिसका सपना शायद कभी हमने देखा हो। जैसे कि दुनिया के सबसे ऊँचे पर्वत माउंट एवरेस्ट को उस ऊँचाई से देखना जहाँ जाने की हिम्मत और लगन बहुत ही गिने चुने लोगों में होती है। जी हाँ आपने सही पहचाना, आज हम एक ऐसे ही व्यक्तित्व से जुड़ने जा रहे हैं जिन्होंने न केवल यह सपना देखा अपितु अपने दृढ़ संकल्प और मेहनत से उसे साकार भी किया। वे कोई प्रशिक्षित पर्वतारोही नहीं हैं किन्तु स्वयं के अथक एवं सुनियोजित प्रयासों के कारण उन्होंने न केवल एवरेस्ट के बेस कैंप तक का सफर पूरा किया, बल्कि एक दुर्गम ऊँचाई से ऐवरेस्ट पर्वत को भी देखा।

योगिता मोदी   वंदना अग्रवाल

मैं, योगिता मोदी, आपको लिए चलती हूँ हिंदी यू.एस.ए. की एक निष्ठावान एवं वर्षों से कार्यरत स्वयंसेविका श्रीमती वंदना अग्रवाल जी से मिलवाने और उनकी इस साहसिक एवं रोचक उपलब्धि के बारे में जानने के लिए।

वंदना जी एडिसन हिंदी पाठशाला में पहले प्रथमा -१ प्रथमा-२ की शिक्षिका थीं और वर्तमान में मध्यमा-१ की शिक्षिका हैं। शिक्षण के साथ-साथ ये हिंदी यू.एस.ए. की अनेक गतिविधियों में अपना पूरा सहयोग देती हैं। अभी हाल में ही मुझे वंदना जी से इस यात्रा वृतांत के बारे में जानने का सौभाग्य मिला, तो प्रस्तुत हैं, उनसे हुई बातचीत के कुछ अंश -

योगिता - वंदना जी सवर्प्रथम आपका बहुत-बहुत अभिनन्दन, आपकी इस प्रशंसनीय और उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए।

वंदना जी - धन्यवाद

योगिता - मेरा प्रथम प्रश्न है कि आपको इतने कठिन लक्ष्य को साधने की प्रेरणा कहाँ से और कब मिली?

वंदना जी - मैं कुछ वर्षों से निरंतर प्रतिदिन दौड़ना, बैडमिंटन खेलना, जिम जाना, मैराथन आदि गतिविधियों में सम्मिलित रही हूँ, इससे मुझे अपनी क्षमता पर विश्वास जागा कि मैं शायद यह लक्ष्य पा सकती हूँ। इस बेस कैंप पर जाने से पहले मैं अपने भाई जितेंद्र और अपनी कज़िन बहन डॉ. ज्योति अग्रवाल के साथ अन्नपूर्णा के ट्रैक पर सत्र २०१८ में गयी थी। यह ट्रैक नेपाल में है। इसके बाद जब मेरी बहन एवरेस्ट बेस कैंप गयीं और उन्होंने इसके अद्भुत अनुभव के बारे में बताया तब मैं बहुत प्रेरित हुई। फिर मैंने और मेरे भाई ने भी इस ट्रैक पर जाने का निर्णय किया।

योगिता - बहुत सुन्दर वंदना जी, इस ट्रैक पर जाने के लिए क्या विशेष दिशा-निर्देश होते हैं, पंजीकरण कहाँ होता है, कहाँ से यह पर्वतारोहण प्रारम्भ होता है और क्या अन्य तैयारी करनी होती है, मैं और सभी पाठक आपसे ये

अवश्य जानना चाहेंगे।

वंदना जी - दिशा -निर्देश कुछ ख़ास नहीं है। मतलब जहाँ से ये ट्रैक आरम्भ होता है बस वहाँ के लिए ऑनलाइन पंजीकरण करना होता है। आपको अपने आप ही यह तय करना होता है कि आप पूरी तरह स्वस्थ हैं और यह यात्रा पूरी कर सकते हैं।

योगिता - वंदना जी यह पर्वतारोहण कहाँ से प्रारम्भ होता है, कितने दिन की यह यात्रा होती है और आपने ट्रैक कब आरम्भ किया ?

वंदना जी - यह ट्रैक नेपाल में लूकला जो कि राजधानी काठमांडू से लगभग २२८ मील है, से आरम्भ होता है लेकिन फ्लाइट से मात्र २० मिनिट्स ही लगते हैं। हमारी यह यात्रा कुल १० दिन की थी। यात्रा के पहले दिन जोकि सितम्बर ३०, २०२३ था, हमारी फ्लाइट ख़राब मौसम के कारण निरस्त हो गयी और फिर अगले दिन अक्टूबर १ को हम काठमांडू से लूकला फ्लाइट से दुनिया के सबसे खतरनाक एयरपोर्ट पर पहुंचे। इस एयरपोर्ट का रनवे बहुत ही छोटा और समुद्र तल से इसकी ऊंचाई २,८४६ मीटर है। इसे तेनजिंग हिलेरी एयरपोर्ट के नाम से भी जाना जाता है।

योगिता - वंदना जी, हम यह जरूर जानना चाहेंगे कि इस तरह की ट्रैकिंग के लिए क्या खास व्यायाम करना होता है और क्या अन्य तैयारी करनी होती है ?

वंदना जी - जी हाँ योगिता जी, इसके लिए जैसे मैंने प्रतिदिन अन्य गतिविधियों के अतिरिक्त जिम में stair master पर exercise, वेट लिफ्टिंग, कम से कम १८ से २० मील हर सप्ताह दौड़ना आदि व्यायाम पर विशेष ध्यान दिया और अपने आप को मानसिक रूप से भी इस ट्रैक पर जाने के लिए धीरे धीरे तैयार किया।

योगिता - वाह! बहुत ही बढ़िया वंदना जी। जहाँ से आपने यात्रा आरम्भ की उस जगह की और जहाँ बेस कैंप था उसकी ऊंचाई लगभग कितनी थी?

वंदना जी - यात्रा का आरम्भ लगभग २८०० मीटर से किया और बेस कैंप ५,३६४ मीटर (१७,५९८ फ़ीट) की ऊँचाई पर था।

योगिता - इस बेस कैंप पर पहुँचने पर आपने क्या महसूस किया?

वंदना जी - यह एक अलग ही मनः स्थिति थी, प्रकृति की गोद में, नितांत आत्मिक और मानसिक शांति मिली। यहाँ हमने योग भी किया। इतने दिनों की मेहनत और परिश्रम का सुफल मिल रहा था।

योगिता - बेस कैंप के अतिरिक्त आपने एवरेस्ट को भी शायद किसी एक पॉइंट से देखा, मुझे ये जानने की उत्सुकता बढ़ती जा रही है। कृपया उसके बारे में भी बतायें।

वंदना जी - जी अवश्य। बेस कैंप पर कुछ घंटे रुकने के बाद उसी दिन हमें नीचे आना था। होटल में रात में सोने के बाद सुबह जल्दी ही ४ बजे लगभग -२० C में हमने अपनी यात्रा काला पत्थर के लिए आरम्भ की। यह चढ़ाई लगभग डेढ़ घंटे की थी और बहुत ही खड़ी (स्टीप) थी। यह यात्रा का सबसे कठिन दिन था। काला पत्थर एक ऐसा पॉइंट है जहाँ से एवरेस्ट की चोटी बहुत ही साफ़ और अद्भुत दिखती है। सुबह सूरज उदय होने से पहले यहाँ पहुँचने का जो लक्ष्य था वह हमने पूरा किया और जैसे ही सूर्य की प्रथम किरण पड़ी, वह इतना अकल्पनीय दृश्य था कि उसका वर्णन शब्दों की सीमा से परे है। यह दृश्य सुबह सूरज निकलने तक ही दिखता है फिर बाद में बादलों से ढक जाता है और कुछ भी साफ़ नहीं दिखता है। हम जब वहाँ से लौट रहे थे तब कई समूह वहाँ जा

रहे थे, लेकिन वे शायद उतने अच्छे से वह दृश्य नहीं देख पाए होंगे, जितना जल्दी जाने की वजह से हम देख पाए।

योगिता - वाह हमें तो आपसे यह जानकार ही इतना रोमांच हो रहा है और आपने तो साक्षात् एवरेस्ट का दर्शन किया, हम समझ सकते हैं कि वह कितनी विशेष अनुभूति रही होगी।

अच्छा अब यह जानना चाहेंगे कि इतने कठिन मार्ग में आपने किन-किन कठिनाइयों का सामना किया?

वंदना जी - यह पूरी यात्रा उतनी सरल नहीं है जितनी कि वहाँ जाने वाले लोग समझते हैं और कई बार सिर्फ शौकिया जाने की कोशिश करते हैं। जैसे कई बार बहुत बारिश के चलते काफी कीचड़ हो गया और पहाड़ी रास्ते में ऐसे में चलना काफी जोखिम भरा हो जाता था, घंटों गीले कपड़ों में ही चलना होता था। हम केवल अपने साथ ५ से ६ किलो अपने बैक पैक में ले जा सकते हैं, जिनमें केवल स्नैक्स, नट्स, कुछ बेसिक दवाइयाँ और पानी होता है। हमारे साथ पोर्टर भी होते हैं जो आपका १० -१२ किलो तक का जरूरी सामान और कपड़े वगैरह लेकर चलते हैं, लेकिन वे कई बार आपसे मार्ग में बहुत आगे होते हैं तो आप रास्ते में उनसे कोई सामान नहीं ले पाते हैं। मोबाइल सिग्नल नहीं होते हैं, केवल गाइड के पास satellite फ़ोन होता है। High Altitude पर इतने दिन चलने से कई बार आपकी खाने की इच्छा खत्म हो जाती है, जिससे कुछ कमजोरी भी आती है। होटल में पड़ाव के दौरान बहुत ही बेसिक सी सुविधाएँ होती हैं, कई बार लाइट नहीं होती है, HEAT नहीं होती है, मोबाइल नेटवर्क भी बहुत ही कम रहता है, परंतु यही कहना चाहूँगी कि कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है और इस यात्रा पर जो कुछ कठिनाइयां आईं, उसकी तुलना में जो पाया वह अद्भुत था।

योगिता - बिल्कुल सही कहा आपने वंदना जी। इस तरह के किसी और पर्वतारोहण की निकट भविष्य में कोई और योजना है आपकी ?

वंदना जी - इस वर्ष १३ अक्टूबर को मैं शिकागो की फुल मैराथन में भाग लेने जा रही हूँ। इसमें २६.२ मील की कुल दूरी ६ घंटे ३० मिनिट में पूरी करनी होती है।

योगिता - वाह! एक और मील का पत्थर आप तय करने जा रही हैं, जिसके लिए आपको अग्रिम शुभकामनाएं। बहुत-बहुत धन्यवाद आपका वंदना जी, इस बातचीत के लिए इतना समय देने के लिए। आपके ये साहसिक कार्य हम सब के लिए प्रेरणादायी हैं। आयु का कोई भी पड़ाव हो, प्रतिदिन थोड़ा व्यायाम ही सही लेकिन इसे करके हम अपने आपको स्वस्थ तो रख ही सकते हैं और जीवन में यदि कुछ बड़ा करने की ठान लें तो वह असंभव नहीं है, हाँ उसे पाने के लिए लगन और समर्पण आवश्यक है। एक बार पुनः धन्यवाद.

वंदना जी - धन्यवाद योगिता जी

स्टैमफोर्ड पाठशाला, मध्यमा-१ स्तर

भारत के विभिन्न राज्यों के आभूषण तथा वेशभूषा

स्मिता सेठ

यह लेख स्टैमफोर्ड हिन्दी पाठशाला की मध्यमा-१ कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा लिखा गया है। इस बार कर्मभूमि पत्रिका के विषयों मे से एक विषय "भारतीय वेशभूषा तथा आभूषण" था। इस लेख में छात्रों ने भारत के विभिन्न राज्यों की वेशभूषा तथा आभूषण के बारे में बताया है।

कोमल जुनेजा

अनय पांडेय

आरव पांडेय

अमृत बहता नदियों में, वाणी में न है द्वेष।
पग-पग सद्भावना से परिपूर्ण, अपना मध्य प्रदेश।

महिलाओं की वेशभूषा: लहंगा चोली ओढ़नी और साड़ी मध्य प्रदेश में महिलाओं के बीच सबसे प्रसिद्ध पारंपरिक वेशभूषा है। ओढ़नी एक प्रकार का स्कार्फ है जो सिर और कंधों को ढकता है और पारंपरिक वेशभूषा का अनिवार्य अंग है। माहेश्वरी, चंदेरी और टसर साड़ियाँ मध्य प्रदेश राज्य की विशेषता हैं। लाख की चूड़ियाँ भी ड्रेसिंग का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। पायल, बिछिया और बालों में गजरा भी विवाहित महिलाओं के आवश्यक आभूषण हैं।

पुरुषों के लिए पोशाक: मध्य प्रदेश में पुरुषों की प्रसिद्ध पारंपरिक पोशाक धोती है। यह आरामदायक है और गर्मी के महीनों के लिए सर्वोत्तम है। पगड़ी पारंपरिक पोशाक का एक अन्य सामान्य अंग है। मोजड़ी एक विशेष प्रकार का जूता है जिसे पुरुष पहनना पसंद करते हैं।

पंजाब की धरती रंग बिरंगी,
यहाँ के पहनावे की हर बात अतरंगी

पंजाबी महिलाओं की पोशाक: पंजाबी महिलाओं की पारंपरिक वेशभूषा पंजाबी सलवार सूट है। पटियाला सलवार हमेशा से सभी की पसंद रही है। फुलकारी दुपट्टा, पंजाबी मोजरी इस पोशाक में और अधिक सुंदरता जोड़ते हैं। एक लंबा लटकता हुआ परांदा बालों की शोभा बढ़ाता है। हाथों में काँच की चूड़ियाँ बहुत खूबसूरत लगती हैं।

पंजाबी पुरुषों की पोशाक: पंजाबी पुरुषों के लिए पारंपरिक पोशाक 'पंजाबी कुर्ता और तहमत' है, विशेष रूप से लोकप्रिय मुक्तसारी शैली, जिसकी जगह आधुनिक पंजाब में कुर्ता और पायजामा ने ले ली है। पंजाब के पुरुष पगड़ी पहनते हैं। पगड़ी का आदान-प्रदान एक पंजाबी रिवाज भी है।

अरिनी जठार

महाराष्ट्र में पारंपरिक वेशभूषा में पुरुष धोती और फेटा पहनते हैं। महिलाएँ चोली और नौ गज की साड़ी पहनती हैं जिसे "नऊवारी" साड़ी कहते हैं। समृद्ध पारंपरिक आभूषणों में गले में तन्मणी, बोरमाल, कोल्हापुरी साज, ठुशी, हाथों में हरा चूड़ा, पैरों में पैंजन और पैर की उंगलियों पर जोडवे पहने जाते हैं। माथे पर बिंदी या कुंकू, नाक पर मराठी नथ और कान में कुड़ी, बुगड़ी, वेल और बाली पहनी जाती हैं। महिलाएँ अपने बालों में फूलों से बना गजरा या वेणी लगाती हैं। यह पारंपरिक वेशभूषा पेशवा और शिवाजी महाराज के समय से प्रसिद्ध है, जिस वजह से ये ऐतिहासिक विरासत और संस्कृति का विशेष भाग हैं।

खुशाल चौहान

राजस्थान अपनी समृद्ध परंपराओं, सुंदर कला और शिल्प के लिए प्रसिद्ध है। पुरुषों, महिलाओं और बच्चों का राजस्थानी पहनावा बहुत ही रंगीन है। लड़के और पुरुष धोती, अंगरखा और कुर्ता पहनते हैं। उनके सिर पर रंगीन टर्बोन होता है जिसे पगड़ी कहते हैं।

महिलाएँ रंग-बिरंगी साड़ियाँ पहनती हैं। माँग टीका राजस्थान के पारंपरिक गहनों का अहम हिस्सा है। महिलाएँ अधिकतर चोकर-हार, बाजूबंद, हाथ-फूल, लाख की चूड़ियाँ, बिछिया, पायल, और नथ पहनना पसंद करती हैं।

स्वरा पानसरे

बंगाली महिलाएँ पारंपरिक रूप से साड़ी पहनती हैं और रेशम के पल्लू को एक विशेष तरीके से लपेटती हैं जो पश्चिम बंगाल के पहनावे की विशेषता है। सफ़ेद बनारसी साड़ी, चमकदार लाल बॉर्डर, बड़ी लाल बिंदी, सफ़ेद मुकुट, लाल चूड़ियाँ, पायल, शोनार मुकुट, कान पाशा, झुमके, नथ, रतन चूर, सोने के आभूषण और परिधान पहने महिलाएँ दुर्गा पूजा पंडाल में, शादियों में, और अन्य धार्मिक समारोह में बहुत सुंदर लगती हैं। बंगाली पुरुषों की पारंपरिक वेशभूषा कुर्ता, धोती और उसके साथ सूती तथा रेशम की शॉल है। बंगाली कुर्ता रेशम या सूत से बना, सफ़ेद रंग का और घुटने तक लंबा होता है। उसके साथ रंगीन धोती बहुत प्रचलित है। बंगाली पुरुषों के बीच लुंगी बड़ी लोकप्रिय पोशाक है।

श्रीयन श्रीजीत

कर्नाटक राज्य की महिलाएँ आमतौर पर साड़ी पहनती हैं। कोडवा की महिलाएँ अनोखे तरीके से साड़ी पहनती हैं, जिसमें पीछे प्लीट्स बंधती है और पल्लू कंधे पर रखा जाता है। अपनी अनूठी पोशाक के साथ-साथ महिलाएँ खुद को विशिष्ट और सुंदर आभूषणों से सजाती हैं, जिनमें नेत्री चुट्टी, माविनकायी, अडिगई, अवलक्की हार और सोने के सिक्कों से बनी लक्ष्मी माला शामिल हैं। आमतौर पर ये सोने और रंगीन पत्थरों से बने आभूषण होते हैं।

जिया शर्मा

श्रेया पेरिनकुलम

केरल

छत्तीसगढ़ की महिलाएँ आम तौर पर पतास/पाटा पहनती हैं। पारंपरिक पाटा दो तरह से पहना जाता है - पहले तरीके को "गंठी मारना" और दूसरे तरीके को "चेंद्रा" कहा जाता है। इसे मुख्य रूप से बस्तर की महिलाएँ दैनिक कार्य करते समय पहनती हैं, क्योंकि यह व्यावहारिक है और सभी प्रकार की गतिविधियों को करने को आसान बनाता है। महिलाएँ चाँदी की पतली चेन भी पहनती हैं जिसे सुता कहा जाता है, जबकि मनके से बने हार को कौंडी कहा जाता है। बालियाँ और खूंटियाँ क़ानों में झुमकों के रूप में पहनी जाती हैं। हाथ की चूड़ियों को कड़ा कहा जाता है। विवाहित महिलाओं के लिए आभूषण का एक और अनिवार्य भाग बिछिया है, जिसका अर्थ है पैर की उँगली की अँगूठी। पुरुषों के सबसे आम परिधान को पिछोरी कहा जाता है, जो कमर के चारों ओर लपेटा जाता है। ऊपरी वस्त्र कुर्ता होता है। छत्तीसगढ़ विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक और अनूठे आभूषणों का भी घर है। निष्कर्षतः छत्तीसगढ़ विभिन्न प्रकार के खूबसूरत कपड़े और आभूषण का गढ़ है।

पोशाक: पुरुषों के लिए, पारंपरिक पहनावा श्वेत या ऑफ -व्हाइट कपड़ा है जिसे मुंडू कहा जाता है। यह कमर के आसपास बांधा जाता है और पैरों तक फैल जाता है। आमतौर पर इसे एक कमीज़ के साथ पहना जाता है, जो कि सफेद या क्रीम रंग की होती है। कभी-कभी, पुरुष अपने कंधे पर मुंडुम नेरियाथुम नामक एक पारंपरिक स्कार्फ/वस्त्र भी रखते हैं।

महिलाओं के लिए, पारंपरिक पहनावा कसावु साड़ी नामक एक पोशाक होती है, जो आमतौर पर क्रीम या ऑफ-व्हाइट रंग की होती है और सोने की किनार से सजी होती है। महिलाएँ सोने की बालियाँ, हार, और कंगन जैसे आभूषण भी पहनती हैं। अपने बालों में फूल, खासकर चमेली के गजरे के साथ, इस वेशभूषा में केरल की महिलाएँ बड़ी ही मन मोहक दिखाई देती हैं।

आभूषण: ताली या मंगल्यम: यह एक पवित्र धागा या श्रृंगारिक हार होता है, जो विवाहित महिलाओं द्वारा पहना जाता है। यह आमतौर पर सोने का बना होता है। केरल की महिलाएँ अक्सर अनेक प्रकार की जटिल बनावट के सोने के झुमके, पायल, सोने के कंगन, हार (माला) जैसे कि कसू माला (सिक्के वाली माला) और एलक्कथाली (चोकर माला) पहनती हैं। ये कभी कभी मोती या रत्नों से सजे होते हैं।

ज्ञान की गंगा बहती संस्कृति से, विरासत लिए विश्व गुरु की ओर बढ़ते।
योग और ध्यान का संदेश फैलाते, शांति और प्रेम का मार्ग दिखाते।

SAI CPA Services
Your Friendly Neighborhood CPA

IMPROVE THE WAY FOR YOUR BUSINESS TO THE NEXT LEVEL

LET US MAKE THINGS EASY!

- BUSINESS STARTUP SERVICES
- ACCOUNTING & BOOKKEEPING
- SALES TAX & PAYROLL TAX
- DEVELOPING & IMPLEMENTING BUSINESS MODELS
- PAYROLL SERVICES
- IRS PROBLEMS & REPRESENTATIONS
- AUDIT AND REVIEW
- INCOME TAX PREPARATION FOR INDIVIDUAL & BUSINESS
- VIRTUAL CFO SERVICES
- NON-PROFIT TAXES & 501C(3) APPROVALS
- TAX COMPLIANCE AND YEAR END PLANNING
- FINANCIAL STATEMENT PREPARATION & ATTESTATION

AJAY KUMAR
CPA, MBA
support@saicpaservices.com
www.saicpaservices.com
(908)380-6876
(732)215-9600
Fax: (908)368-8638

Sai CPA Services is led by Ajay Kumar, CPA, MBA and former CEO of Visionary Group. In his guidance, Sai CPA Services is committed to provide the best possible financial services to its client.

SAI CPA Services
Your Friendly Neighborhood CPA
WWW.SAICAPSERVICES.COM

OFFICE LOCATIONS

1 AUER CT. 2ND FLOOR
EAST BRUNSWICK, NJ 08816
PH: (908) 888-8901

5 VILLA FARMS CIR.
MONROE TWP, NJ 08831
PH: (908) 380-6876

501(c)(3) Non-Profit Organization
Tax ID : 22-3129398

95 Newfield Ave. Suite I
Edison, NJ 08837
908-296-5844 : (P)
732-283-2070 : (F)
www.ibausa.org : (W)

INDIAN BUSINESS ASSOCIATION INC.

33 Years of Community Service

Congratulation & Best Wishes to

हिन्दी USA ®

Twenty Third
Annual Hindi Mahotsav

PLEASE JOIN
INDIA DAY PARADE
11th August 2024
on OAK TREE Rd Edison to Iselin

ibausa.org

CHANDRAKANT PATEL
Chairman

Dr. RAJ PANDYA
Advisory Board Chair

DHIREN AMIN
President

MANHER SHAH
Vice Chairman

MAHESH SHAH
Vice Chairman

HARSHAD PATEL
Exec. Vice President

PRAFUL PATEL
Gen. Secretary

SHARAD AGRAWAL
Secretary